श्री:

ज्योतिष्मती

नववर्षाङ्क

वर्ष
१७
सं० २०३०

संख्या
१
कार्तिक



वार्षिक
मूल्य
६·००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य २·६५

विषय-सूची

आवश्यक सूचना—जो सज्जन गत वर्ष १६, संख्या २ माघमासके अङ्कसे (जनवरी १९७३ से) ग्राहक बने थे उनका मूल्य इस अंकमें समाप्त है। उन्हें छपा मनीआर्डरफार्म साथ भेजा जा रहा है। इस अंक से वार्षिक मूल्य नौ रुपये है अतः १ अक्तूबर ७३ से प्रत्येक ग्राहकसे ९) वार्षिक मूल्य लिया जावेगा। इस १७वें वर्षसे ग्राहक नम्बर बदल दिये गये हैं, अतः ग्राहकोंको अपने पतेके चिट (रैपर) पर लिखी हुई नयी ग्राहक संख्या नोट कर लेनी चाहिए। ज्योतिषसम्बन्धी सभी व्यक्तिगत कार्य स्थगित कर दिये गये हैं, अतः इस सम्बन्धमें कोई सज्जन पत्र-व्यवहार न करें। —व्यवस्थापक 'ज्योतिष्मती' सोलन

★ श्रीः ★

ज्योतिष्मती

[अखिल भारतीय ज्यौतिषपरिषद्‌की मुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्यौतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य-सांख्य-योगाचार्य

एम.ए (हिन्दी-संस्कृत) पी.एच.डी.

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन ।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न ।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिःशास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना ।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे । संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे ।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे । सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे ।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन समान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे ।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है । इसका वार्षिक मूल्य ९ ०० नौ रुपये और एक प्रतिके दो रुपये पैंसठ पैसे हैं ।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे । अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं ।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजने चाहिएं ।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है । अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे ।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें । यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं ।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए । पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें । यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए । वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें ।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता । जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवें गे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा । 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है । प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है । यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए ।

व्यवस्थापक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र)

16

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौष मास (दि० १३ अक्तूबर १९७३ से ८ जनवरी १९७४ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले॥

वर्ष १७	सोलन, आश्विन शु० १५ शुक्रवार, सं० २०३० वि० २० आश्विन शाके १८९५ (१२ अक्तूबर १९७३ ई०)	संख्या १

जय जय भारत-भूमि कल्याणी

[श्री जगदीशरण मधुप, साहित्यालंकार]

जय-जय भारत-भूमि कल्याणी। जाकी महिमा कहत निरन्तर, वाणी हू सकुचानी।
जाके द्वार देवता जाचक, को दधीचि सो दानी॥ जय जय.........
जाकी न्याय परायणताकी महिमा स्वर्ग सुहानी।
जाने सत्य न छोड़ो पलभर, भरो डोम घर पानी। जय जय........
जामें भये अनेक तपोधन, धीर, वीर वर ज्ञानी।
जाके पांव पखारत सागर, लहर-लहर सन्मानी। जय जय.........
जाको मुकुट हिमालय सोहे, देव धाम लासानी।
जाके द्वार-द्वार पै तीरथ, करत कोटि अघ हानी। जय जय........
शस्य श्यामलामयी भूमि यह, पहने चूनर धानी।
जाकी शोभा निरख विदेशी, बारम्बार वखानी। जय जय........
कवि जगदीश मधुप का वरणों, कोटि कला गुण खानी। जय जय.........

सत्रहवें वर्षमें पदार्पण

'ज्योतिष्मती' इस अङ्कके साथ १७वें वर्षमें प्रवेश कर रही है। यह महामायाकी महती कृपाका पुण्यफल है। 'ज्योतिष्मती' इस अवसर पर पराम्बाके श्रीचरणोंमें सादर प्रणिपात करती है।

सामाजिक जीवनके धरातलको समीचीन पद्धतिसे समुन्नत बनाते हुए संस्कारके सोपानों पर उत्तरोत्तर प्रगतिशील बनानेका कार्य देशके सामयिक प्रकाशनों पर निर्भर है। ऐसे प्रकाशन दो प्रकारके हैं १—पुस्तकोंके रूपमें, तथा २—पत्र-पत्रिकाओंके रूपमें। स्वस्थ साहित्यसे सुसज्जित पत्र-पत्रिकाएं महान् सत्ताके एक सुदृढ़ अंशकी पूर्ति करती हैं। आजका युग जैसा कि 'यन्त्रयुग' के रूपमें विख्यात है, उसी प्रकार इसे पत्र-पत्रिकाओंका युग भी कहा जाता है।

मध्यमवर्गके मनुष्योंके लिए पत्र-पत्रिकाएं एक उत्तम मार्गदर्शक तथा मित्रका कार्य करती हैं। सामान्य-से-सामान्य मूल्यमें बहुविध अपेक्षापूर्ण सामग्री प्रदान करना, योग्य परामर्श देना तथा जीवन के स्तरको विकसित करनेकी प्रेरणा देनेका कार्य पत्र-पत्रिकाओंसे ही सम्भव है। राजकीय अथवा आर्थिक, नैतिक अथवा सामाजिक, क्षेत्रगत अथवा व्यक्तिगत कैसी भी समस्याएं हों, उनका बलाबल विमर्श तथा उचित निर्देश जिस सरलतासे हमें पत्र-पत्रिकाएं दे सकती हैं, वैसा अन्य प्रक्रिया द्वारा सुलभ नहीं है।

'ज्योतिष्मती' अपने प्रिय पाठकोंकी अपेक्षाओंकी पूर्तिका प्रयास करती है, भावी जीवनकी परिस्थितियोंका पूर्वाभास कराती है, कर्तव्य कर्मोंका निर्देश देती है, शास्त्रीय मर्यादाओं, उपयोगी साधनों तथा मानसिक आवश्यकताओंको ध्यानमें रखकर घर बैठे समाधानके सूत्र प्रस्तुत करती है।

"ज्योतिष्मती" अपने ज्योतिषके केन्द्र-बिन्दुसे ही ज्योतिष्मती बनकर साहित्य, राजनीति, व्यापार, आयुर्वेद, तन्त्र एवं अन्यान्य विषयोंकी तथ्यपूर्ण सामग्री समेट कर आपके लिये नई प्रेरणाका प्रवाह लाती है, जिसमें अवगाहन कर न केवल आप, अथवा आपका परिवार ही प्रकाश प्राप्त करता है, अपितु साथी, सहयोगी, सहकर्मी, समानधर्मी और विभिन्न रुचि रखने वाले बालक, युवा और वृद्ध चाहे पुरुष हो या महिलावर्ग सभी समान रूपसे लाभान्वित होते हैं।

पत्र-पत्रिकाओंके प्रकाशनमें कुछ दोष भी रहते हैं। उदाहरणार्थ—धनलोलुपता, वर्गविशेषके प्रति आग्रह, स्वार्थ-साधना, पारस्परिक वैमनस्यका पोषण आदि। ये ऐसे दोष हैं जो भूषणके स्थान पर दूषण सिद्ध होते हैं और पत्रकारिताके पवित्र उद्देश्यको कलङ्कित कर देते हैं। किन्तु 'ज्योतिष्मती' को 'यथा नाम तथा गुणः' के अनुसार सदा निर्मल रखनेका प्रयास हमारा ध्येय रहा है। मनोमालिन्यसे आन्दोलित विचारोंको हम स्थान नहीं देते। व्यर्थके प्रलाप अथवा मिथ्या आडम्बर-पूर्ण सस्ते विज्ञापनोंको हम स्वीकार नहीं करते। हमारा आग्रह शास्त्र और सत्य पर अवलम्बित रहता है। नीर्भीक प्रवृत्ति होनेसे हम जो सत्य एवं शुद्ध है उसे लिखनेमें संकोच नहीं करते।

भगवती जगदम्बाकी असीम अनुकम्पा एवं दयालु पाठकोंकी सद्भावना ही हमारा सम्बल है। विगत वर्षोंकी अपेक्षा प्रस्तुत वर्ष भी मँहगाईको ही मेहमान बनाकर साथ ला रहा है। "सीमित शक्ति और साधनके रहते हुए भी यावत् शक्ति साहित्य और समाज-सेवाकी भावना अक्षुण्ण बनी रहे" इस दृष्टिसे 'ज्योतिष्मती' को हम आप तक पहुंचानेका प्रयत्न करते हैं। नववर्ष आपके और हमारे मङ्गल प्रयासोंको सफल बनाये तथा हम अपने जीवन-पथको प्रशस्त एवं निष्कण्टक बनानेमें सफल हों, इसी शुभाशाके साथ हम सभी पाठकोंको धन्यवाद देते हैं उनके सहयोगके लिये, तथा विश्वास करते हैं कि भविष्यमें इससे भी अधिक उत्साहके साथ वे सहयोग करते रहेंगे।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥"

सम्पादकीय विचार—

भारतकी अर्थव्यवस्था और राजनीति संकटग्रस्त

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह । ब्रह्मा तत्र मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे ।
ब्रह्मणे स्वाहा ॥ (अ० १९।४३।८)

ब्रह्मज्ञानी दीक्षा तपस्वी, व्रतचारी शुद्धाचारी जनोंके स्थानमें हमें भी स्थान मिले, ब्रह्मज्ञानी ज्ञान दें । ज्ञान पानेके लिए त्यागका पथिक बनूं ।

भारतका अर्थ संकट घोरसे घोरतर हो रहा है और राजनीति अस्थिर हुई है—

भारतकी वर्तमान स्थिति निम्नाङ्कित फिल्मी गीतमें पूर्णतया परिलक्षित होती है :—

"उलझन सुलझे न,
रस्ता सूझे ना,
जाऊं तो जाऊं कहां ?"

१९७३ का भारत इस हताशा और निराशाकी अवस्थामें है । इन्दिरा सरकारका दुराग्रह कायम है । प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी अल्जीयर्स कान्फ्रेंसमें भाग लेने गईं । क्योंकि उनको विश्वास हो गया कि उनका स्थान लेने वाला कोई नहीं है । श्री अशोक मेहता, श्री पटनायक और आचार्य कृपलानीका एक लोकतांत्रिक दल बनानेका प्रयत्न विफल रहा । इसने श्रीमती गांधीको विश्वास दिलाया कि घानाके प्रधानमंत्री एनक्रूमा, कम्बोडिया-नरेश और अफगानिस्तानके अमीरकी सी हालत उनकी न होगी । अतः अल्जीयर्स कान्फ्रेंसमें न जानेका उनका निर्णय बदल गया । यह इस बातका प्रमाण है कि भारत राष्ट्र नेता विहीन है । सब सत्ताके भूखे हैं । त्यागी, निस्पृह और भारत-भक्त नेतासे भारतभूमि शून्य है । श्री-गोस्वामी तुलसीदास ४०० वर्ष पहले ही लिख गए हैं :-

"वीर हीन मही मैं जानी ।"

चार सौ वर्ष पहले भारत विदेशी मुगल शासनको भारतमें जमनेसे रोकनेमें विफल रहा । आज भारतमें सोवियत रूसका शासन स्थापित हो रहा है । मुगल शासन यदि भगवान दास मानसिंहने स्थापित किया, तो रूसी शासन श्रीमती गांधी और मुस्लिम लीग मिलकर कर रहे हैं । रूसी स्वामित्व इतना व्यापक हो गया है कि मंत्रिमण्डलमें स्थान पानेके वास्ते ब्रेजनेव कोसिगिनका आशीर्वाद पाना आवश्यक समझा जाता है । पहले श्री संजयके साथ श्री बी०पी० मौर्य मास्को गए । यह समाचार पाते ही सुरक्षा मंत्री श्री जगजीवन राम सपत्नीक मास्को पहुंचे । सुरक्षा मंत्री उपपधान मंत्रीका पद पानेके अभिलाषी हैं । पहले इस पद पर श्री कुमार-मंगलम् की नियुक्ति होने वाली थी । वह तो अब रहे नहीं । इस रिक्त पदको पानेके वास्ते यह मास्कोकी दौड़ थी । कम्युनिस्ट पत्र श्री जगजीवन रामके अब आलोचक नहीं रहे । अतः समझा जाता है कि श्री जगजीवनराम भारतके तीसरे उपप्रधानमंत्री होंगे । सरदार पटेल और मुरार जी देसाई पहले हुए दो उप-प्रधानमंत्री हैं ।

नई समस्या

इसने प्रधानमंत्रीके सम्मुख एक नई समस्या खड़ी कर दी है। १६ अगस्त १९७४ को नये राष्ट्रपतिका चुनाव होगा। यह स्थगित नहीं हो सकता। सुनते हैं श्री गिरि दुबारा राष्ट्रपति पदके लिए खड़ा होनेका इरादा रखते हैं। आपने भोपालमें कहा :—"उन्होंने कभी नहीं कहा कि उनका दुबारा राष्ट्रपति होनेका इरादा नहीं है।" यह बताता है कि वह परिस्थिति अनुकूल होने पर प्रधानमंत्रीकी इच्छाका विचार न करके, इस पदके वास्ते उम्मीदवार होनेसे चूकेंगे नहीं। ८० सालके श्रीगिरि राजसन्यास लेनेको तैयार नहीं। श्रीमती गांधी डा० राधाकृष्णन्‌के समान श्री गिरिको भी दूसरा मौका देनेको तैयार नहीं। राष्ट्रपतिका लखनऊ भाषण रंग ला रहा है। अतः वह अपना उम्मीदवार ढूंढ रही हैं। उनकी अपनी पार्टीमें इस समय कोई प्रभावशाली व्यक्ति नहीं है। पार्लमेंट और विधानसभाओंमें शासक पार्टीका बहुमत अवश्य है। परन्तु श्रीमती गांधी का वचन पार्टीमें शिरोधार्य नहीं होता। यद्यपि वह पार्टीसे बाहर जाएंगे नहीं। क्योंकि सब विपक्षी दल निःसत्व हैं। उनके साथ मिलनेसे कोई सत्ता पुनः पाना सम्भव नहीं। पार्टी तो छोड़ेंगे नहीं, और हुक्म भी मानेंगे नहीं। उत्तरप्रदेश कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष श्री बैजनाथ कुरीलने पार्टीके सब विधायकोंको तीन पत्र लिखे कि वह अपने खेतोंमें उत्पन्न गेहूं सरकारी एजेंसीको बेच दें, जमा करके अपने पास न रखें। फिर भी प्रधानमंत्री तकने (मैहरौलीमें ४ एकड़ जमीन है) गेहूँ देना तो दूर रहा, पत्रका जबाब तक नहीं दिया। परिपत्रकी उपेक्षा करने वालोंमें अन्य हैं—श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री उमाशंकर दीक्षित, श्री कृष्णचन्द्र पन्त, श्री बहुगुणा, श्री चन्द्रजीत यादव (इन्दिरा-कांग्रेसके कम्युनिस्ट जनरल सेक्रेटरी) आदि।

संसदके ६४, विधानसभाके २१३ और विधान परिषदके ४१ सदस्य परिपत्रकी उपेक्षा करनेमें सम्मिलित हैं। इससे ही समझ लीजिए कि श्रीमती गांधी अपने उम्मीदवारको विजयी बनानेकी आशा नहीं करती। इस वास्ते उन्होंने श्री कामराजसे बात चलाई है। श्री कामराज को राष्ट्रपति पदका आमिष दिखाकर वह सिण्डीकेट कांग्रेसको विभक्त करना चाहती हैं। दूसरा मोहरा शेख अब्दुल्ला है। आप राष्ट्रपति होंगे या उपराष्ट्रपति यह तो समय बतायेगा, इन दोनोंसे कोई स्थान अवश्य विभूषित करेंगे। श्रीनगर छोड़कर आप दिल्ली रहने लगे हैं। इसका पहला फल तो प्रकट हो गया है। केरलमें मुस्लिमलीग विभक्त होती प्रतीत होती है। श्रीनम्बूद्रीपादने एक वक्तव्य दे दिया है कि श्री मुहम्मद कोया अपने अनुयायियों सहित इन्दिरा कांग्रेसमें मिलने वाले हैं।

काश्मीरका प्रश्न

प्रधानमंत्रीका विचार है कि शेख अब्दुल्ला को राष्ट्रपति या उप-राष्ट्रपति बनानेसे काश्मीर की समस्या हल हो जायेगी। भुट्टो फिर काश्मीर का प्रश्न न उठाएंगे। दूसरी ओर संविधानमें अनुच्छेद ९३ बना रहेगा। काश्मीरका पृथक् संविधान बना रहेगा। वहां कश्मीरी नहीं उर्दू चलती रहेगी। सम्भवतः शेखके भारत-द्रोहको क्षमा करना ही यर्याप्त न समझा जाये, कुछ उस को और रियायतें दी जायें। काश्मीर भारतका अन्य रियासतोंके समान एक अंग न बनेगा। इस की गारण्टी दी जाये। नेपालसे कुछ कम उसकी

स्थिति स्वीकार की जाये। श्रीमती गांधी यह मूल्य मुस्लिम वोट पानेके लिये देनेको प्रस्तुत हैं। कोई भारतीय शक्ति उनको रोकने वाली नहीं है।

यदि माग्रोत्सेतुङ्गकी प्रसन्नता पानेके लिए श्रीमती गांधी भारतभूमिके २०,००० वर्गमीलसे अधिक भूमि पर चीनका अधिकार स्वीकार करनेको तैयार है, तो शेखकी प्रसन्नता पानेके लिए उनके वास्ते क्या अदेय हो सकता है ? भारत राष्ट्रको छिन्न-भिन्न करनेका उनका व्रत इसके बिना क्या पूरा होगा ?

इस दृष्टिसे भारतीय राजनीतिमें शेख अब्दुल्लाका प्रवेश एक भारतद्रोहीका प्रवेश है। कांग्रेस और भारतका कोई पक्ष यह नहीं मानता :—

"अल्लाहके कानूनमें तरमीमगलत थी,
मजहबकी गलत तौरसे तालीम गलत थी।
बंगलामें इन्सांकी तबाहीसे जाहिर—
इन्सानकी इन्सानसे तकसीम गलत थी।"
(फैयाज ग्वालियरी)

भारत विभाजन एक मूर्खतापूर्ण गर्हित जघन्य भारी भूल थी। इसके कारण भारत प्रायःद्वीपमें राजनीतिक अस्थिरता है, अशान्ति है, अर्थ-व्यवस्था छिन्न-भिन्न है। दरिद्रताने इसको अपना घर बनाया हुआ है। परन्तु इस भूलको सुधारनेके बदले उसको पक्का किया जा रहा है।

शिमला स्पिरिट

२८ अगस्तको श्री हक्सर और श्री अजीज अहमदके मध्य हुआ समझौता १९ दिनकी वार्ताका फल है। २७ अगस्त १९७२ के बाद भारत पाकिस्तानमें यह पहला समझौता है। २७ अगस्त १९७२ के समझौतेमें छम्ब देकर श्री भुट्टोको प्रसन्न किया गया था। २८ अगस्त १९७३ के समझौतेमें बंगला देशको पाकिस्तान से मान्यता दिलाये बगैर १९५ को छोड़कर शेष सब युद्धबन्दियोंको छोड़ना माना गया है। पाकिस्तान २,६०,००० ढाकामें बसे बिहारियों मेंसे अधिक १,००,००० लेगा और उनको बिलोचिस्तानमें बसायेगा। १९५ पर इस बीच मुकद्दमा न चलाया जायेगा और ये भारतकी रोटी तोड़ेंगे। बंगला देश पर भार न होंगे। इस समझौतेका स्वागत करने वाले सब भारत विभाजनके पोषक हैं। सरदार स्वर्णसिंह और उनकी सरकार मानती है कि भारत प्रायः-द्वीपके तीनों देश या राज्य परस्पर मैत्री सद्भाव और शान्तिसे रहें, उस दिशामें एक पग आगे बढ़ाया गया है। मुजीबुररहमान भी यही राग अलापते हैं। पाकिस्तानने बंगला देशको संयुक्त राष्ट्रका सदस्य बनानेका रास्ता रोक रखा है, इसको वह नहीं देखते। वह इस्लामाबादकी मान्यता प्राप्त करनेके लिए १९५ युद्ध बन्दियों परसे अभियोग हटा लेनेके बारेमें सोचने विचारनेको तैयार हैं। कम्यु-निस्टोंका पथ है :—

"मुरारेस्तृतीयः पन्थाः"

इसलिए श्री भूपेश गुप्त भारतके पग-पग पर आत्म-समर्पण करनेको 'शिमला स्पिरिट' मानते हैं। आपने ललकारा है :—"जो लोग कहते थे शिमला पैक्ट और शिमला स्पिरिट समाप्त हो गया है, वह देखें शिमला स्पिरिट कायम है।" ईरान सोवियत रूसमें मैत्री हो रही है। ईरान इस प्रकार पाकिस्तान और रूसको निकट ला रहा है। अतः रूस पख्तूनी-स्तान बनानेमें अफगानिस्तानकी प्रकट रूपसे

मदद न करेगा। पाकिस्तान-परितोष नीतिका समर्थन श्री भूपेश गुप्त न करेंगे तो और कौन करेगा ? श्री तुलसीदासने ठीक ही कहा है—

"जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरती देखि तिन तैसी॥"

अतः मूल प्रश्न है, भारत भूमिको, भारत प्रायःद्वीपको, भारत राष्ट्रको हम भारतीय दृष्टिसे देखते हैं, या विदेशी अभारतीय दृष्टिसे देखते हैं ? सत्यको अस्वीकार करनेसे कोई लाभ न होगा। शिमला-पैक्ट अशान्ति ही लाया। २० अगस्त १९७२ का दिल्ली पैक्ट भी शान्ति नहीं लाया। इसी प्रकार २८ अगस्तका दिल्ली पैक्ट भी भारत पाकिस्तान बंगलादेश और नेपाल व अफगानिस्तानमें श्री लंकाके समान अशान्तिकी आगको भड़कायेगा और दरिद्रताको बढ़ायेगा। भारत राष्ट्रको विश्वमें अपना उपयुक्त स्थान न लेने देगा। भारत प्रायःद्वीपमें तनाव बना रहेगा। दिल्ली पैक्ट अधूरा है। चित्रकी बाहरी रूपरेखा ही इसमें खींची गई है। अन्दर रंग भरना ही बाकी है। तफसील तय करना अभी शेष है। इधर उधर और उधरसे इधर आने जाने वालों की एक बारमें क्या संख्या होगी, कितने मासों में यह कार्य पूरा होगा। चटगांवसे करांची जलयानोंमें जाया जायेगा। हवाई जहाजोंका उपयोग न होगा। अतः कमसे कम नौ मासका समय इसमें लग जायेगा। यदि यह एक कदम आगे बढ़ना है, तो वस्तुतः इन्दिरा सरकार बधाईकी पात्र है।

झंझावात आने वाला है

रेलमंत्री श्री ललितनारायण मिश्रके भतीजे और बिहार सिंचाई मंत्री श्री जगन्नाथ मिश्रके पुत्रसे एक दुकानदारने पूछा 'बिहार का तो मुख्यमंत्री आपके पिताको होना चाहिए था, फिर यह मियाँ गफूर कैसे बन गए ?' लड़केने जबाव दिया—"यू०पो०में मुस्लिम वोट पानेके कारण।" श्रीमती गांधीकी राजनीति साम्प्रदायिक और धर्मान्धता कट्टरताको बढ़ाने वाली है। श्रीमती गांधीने इस प्रकारकी नीति का आश्रय लेते हुए बिहार, गुजरात, मध्य-प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बंगाल और मैसूरमें राजनीतिक झंझावात आनेका मार्ग तैयार कर दिया है। बंगालमें श्री सिद्धार्थ शंकरराय कमसे कम ६ विभागोंमें विभक्त इन्दिरा-कांग्रेसको सुसंगठित और एक बनानेमें असमर्थ रहे। वह कलकत्तासे अपनी जान छुड़ाना चाहते हैं और पुनः नई दिल्ली आना चाहते हैं। श्री रे ने श्री विजयसिंह नाहरको दूधसे मक्खीके समान अलग फेंक दिया था, वह पुनः रंगमंच पर आ रहे हैं। इन्दिरा-कांग्रेसके भीतरका अन्तरद्वन्द्व दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। यह किसी भी दिन रे मंत्रिमण्डलको ग्रस सकता है। बिहारके यथार्थ रूपसे मुख्यमंत्री रेलवे मंत्री श्री ललित नारायण मिश्र हैं। कोसी नदीके बांधका प्रकरण मिश्र परिवारके लिए काल होकर आया है। रेलवे मंत्रीकी इस बात पर कोई विश्वास न करेगा, १९५१ में पिताके मरनेके बाद चारों भाई अलग-अलग हो गए। उनका अपने भाइयोंके प्रति कोई देय नहीं है। यदि यह बात सच है तो रेलवे मंत्रीने केदार पाण्डे के मंत्रिमण्डलको गिरानेके वास्ते पटनामें सात दिनका मोर्चा क्यों बांधा और अपने भाईका नाम श्री पांडेकी जाह पार्टीकी बैठकमें क्यों पेश किया ? इस वास्ते गफूर मियांका मंत्रि-

मण्डल भी किसी समय लुढक सकता है ।

मध्यप्रदेशमें मुख्यमंत्री श्री सेठीने भोपालमें आठ युवाओंकी बलि लेनेके बाद अनाज परसे जिला बन्दी उठाई । जिस मुख्यमंत्रीको पुलिस की लाठी पर विश्वास है, जनता पर नहीं, वह कितने दिन तक टिका रह सकता है ? शुक्ल-मिश्र एक हो गए हैं । प्रधानमंत्रीसे उन्होंने कह दिया है कि एक मास आपके कहनेसे मौन रहे । अब मौन न रहेंगे । भले ही कुछ भी परिणाम हो । श्री सेठी जायेंगे और ९-१०की बलि लेकर, इससे पहले नहीं । मध्यप्रदेशमें लाठी शाही चलेगी ।

राजस्थानमें सरकारी कर्मचारियोंकी हड़ताल समाप्त हो गई, किन्तु असन्तोष कायम है । श्री बरकतुल्ला परसे प्रधानमंत्रीका वरदहस्त हटेगा नहीं और राजस्थानमें असन्तोष कायम रहेगा एवं वह कभी भी भड़क सकता है । अन्न संकट घोर है । भारी वर्षाने संकट कुछ बढ़ा दिया है । मकान ढह गए हैं । बाढ़-ग्रस्तोंकी सहायता करनेमें मंत्रिमण्डल असमर्थ है । केन्द्र सहायता कहां तक देगा ?

सरदार जैलसिंहने पंजाब विधानसभाके अध्यक्ष सरदार दरबारा सिंहको पदत्याग करनेके लिए बाध्य कर सरदार स्वर्णसिंहकी सहानुभूति खो दी है । सरदार दरबारासिंह अपने कुछ मित्रोंके साथ अकाली पार्टीमें मिलने को तैयार हैं । अकाली सत्तामें न आएं इस दृष्टिसे राष्ट्रपतिका शासन घोषित करनेकी तैयारी है । राष्ट्रपतिका शासन नवम्बरसे पहले शायद घोषित न हो । मुख्यमंत्री सरदार जैलसिंह कुनबा परस्त हैं । पंचायती जमीन हड़पनेका भयंकर आरोप उन पर अकाली पार्टी ने लगाया है । इसके अतिरिक्त सिनेमा-गृहोंका सरकारीकरण न करनेका रहस्य भी उनका छायाके समान पीछा कर रहा है । कानून व्यवस्था टूट चुकी है । अतः जैलसिंह मंत्रिमण्डल टूटेगा ।

चौ० बंशीलालने करनालमें मोर्चे पर जीवनमें पहली बार करारी हार पाई । पुत्र-वधूका मामला दबाया जा रहा है । पर यह उभरेगा । वह अपने पुत्रको जेलमें भेजे जानेसे रोक नहीं सकते । अन्नके मोर्चे पर वह आत्म-समर्पण कर ही चुके । जेल कैदियोंसे भरी है । इनका शाप चौ० बंशीलालको ग्रसके रहेगा । गीता में कहा गया है "जो कीर्तिमान् है, वही वस्तुतः जीवित है ।" "कीर्तिर्यस्य स जीवति" ।

इस कसौटी पर इन्दिरा-सरकार और बंशीलाल मंत्रिमण्डल कभी के मर चुके ।

दक्षिणसे सफ़ाया

श्री मोहित सेन कम्युनिस्ट एम०पी० हैं । आप मानते हैं कि दक्षिण भारतमें अस्थिरता है । इन्दिरा-कांग्रेसकी समाधि निकट है । आन्ध्रका स्थान इसमें पहला है । आन्ध्रमें राष्ट्रपतिका शासन और ६ मासके वास्ते बढ़ा दिया गया है । आन्ध्रको अविभक्त रखनेका कम्युनिष्टों और प्रधानमंत्रीका भारी दुराग्रह है । इस दुराग्रहके कायम रहते श्री चेन्ना रेड्डी और श्री सुब्बाराव इन्दिरा-कांग्रेसकी अन्त्येष्टि करनेको कृत्त संकल्प हैं । श्री चेन्ना रेड्डीने प्रधानमंत्रीको यह बात असंदिग्ध शब्दोंमें बता दी है । इससे उत्साहित होकर श्रीअशोक मेहताने कहा है—"कांग्रेसमें शासक पार्टीसे इसी शर्त पर समझौता कर सकती है कि श्रीमती गांधीको पार्टीके नेता पदसे हटा दिया

जाये।" सन्तप्त आन्ध्र शान्त न रहेगा । २ अक्तूबरके बाद वहां आग भड़केगी । पुलिस-शाही जो करे वह थोड़ा है । तमिलनाडुमें द्रविड़ मुनेत्र कषगम अपनी सत्ता अस्थिर मानती है । मद्रासके समीपके कैंट्नमैंटके चुनावमें भारी परिश्रमके बाद मंत्रिमण्डलको चार सीटें मिलीं । इनमेंसे एक बहुत थोड़े मत से मिली । सिण्डीकेट-कांग्रेसको दो सीटें मिलीं। पर भारी बहुमतसे । अण्णा द्रविड़ मुनित्र कषगमने सात उम्मीदवार खड़े किये थे, पर केवल एक जीता और वह भी नाममात्र के बहुमतसे। मुख्यमंत्री इस कारण बचे हैं। उन्होंने द्रविड़ कषगमकी सहायक ६ पार्टियोंको जनसंघ और स्वतन्त्र पार्टीके समर्थनसे केन्द्रीय सरकारके विरोधमें मोर्चा बनाकर हड़ताल और बन्द करानेका निश्चय किया है। एक स्टेट व राज्यका मुख्यमंत्री केन्द्रको बढ़ी कीमतों के वास्ते जिम्मेदार ठहराकर उसके विरोधमें मोर्चा लगाए, यह अव्यवस्था अराजकता नहीं है तो और क्या है? तमिलनाडुका मंत्रिमण्डल भङ्ग नहीं किया गया। यह गृहयुद्धका शंखनाद नहीं है क्या?

सत्ता लोभ

द्रविड़ मुनेत्र कषगम भारत विच्छेदक पार्टी है। उसकी स्वायत्तता शासनकी मांगके पीछे यही भावना है । जनसंघ केन्द्रीकरणका पोषक है। पर सत्ता लोलुप है। जैसे श्रीमती इन्दिराने लोकसभाकी ११ सीटें भीखमें द्रविड़ मुनेत्र कषगमसे पाई थी और विधानसभाका चुनाव लड़नेसे इनकार कर दिया था ठीक उसी प्रकार जनसंघ तमिलनाडुमें अपने पैर जमानेके लिए द्रविड़ मुनेत्र कषगमकी स्वायत्त शासनकी मांग और अभारतीयताकी भावना को दृढ़ करनेको तैयार है। क्या जनसंघ कभी भारतका शासन सूत्र भूलकर भी पा सकेगा? दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रोंके संगठनमें चार पद विजय करनेसे जनसंघको उन्माद हो गया है। लगातार तीन सालसे उसका मनोनीत छात्र प्रेजीडेंट चुना जा रहा है। इस कारणसे वह विवेक खो बैठा है। सत्ता-लोभ भारी विसंगतिका कारण है। केरलमें इन्दिरा-कांग्रेस मुस्लिमलीग और रूसी कम्युनिस्ट पार्टी कीमतोंके बढ़नेके विरोधमें और राशनसे चावल कम मिलनेके विरोधमें मोर्चा नहीं बांधे तो हड़तालका आयोजन नहीं करते। पर तमिलनाडुमें ये तीनों दल यह सब करते हैं। यह सब क्या है? केन्द्रीय सरकार क्या केरलकी मंहगाईके वास्ते जिम्मेदार नहीं है? यदि है तो फिर मंत्रिमण्डल त्यागपत्र क्यों न दे? पर सत्ताका मोह बाधक है।

तमिलनाडुमें हड़ताल एक दिन द्रविड़ मुनेत्र कषगम करायेगी। मंत्रिमण्डलने दालों पर बिक्री कर हटा दिया है। यह भूमिका है, केन्द्रीय सत्तासे लड़नेकी। रूसी कम्युनिस्ट, अण्णा द्रविड़ मुनेत्र कषगम और इन्दिरा कांग्रेस एक अन्य दिन हड़ताल करायेंगे । सिण्डीकेट कांग्रेस और कम्युनिस्ट (मार्क्स०) इन दोनोंसे अलग हैं। सिंडीकेट कांग्रेस ३ अक्तूबरसे अपना पाक्षिक आन्दोलन दारुबन्दीके लिए आरम्भ करेगा । इसमें बुनकरों और किसानोंकी समस्याओंके वास्ते भी आन्दोलन किया जायेगा।

इस रीतिसे तमिलनाडु राजनीतिक दलों के संघर्षका अखाड़ा बनाया जा रहा है। यह राजनीतिक अस्थिरताका द्योतक नहीं है

क्या ? मैसूरके मुख्यमत्री और मंत्रिमण्डलका भाग्य कुमारी सुमित्राने अदृश्य होकर और तीन माससे अदृश्य रहकर दांव पर लगा दिया है। कामवासना पीड़ित मंत्रिमण्डल कब तक टिकेगा ? दस व्यक्तियोंके चुनावके सिलसिले में जो गड़बड़ हुई, रुपया फेंका गया, थैली दिखाई गई, उसने बता दिया कि मंत्रीपक्ष और संगठन पक्ष विभक्त है। बंगलौर अलग त्रस्त है। फिर महाराष्ट्र एकीकरण समितिने महाराष्ट्रके समर्थनका बल पाकर बेलगांवके वास्ते लड़ाईका बिगुल बजा दिया है। शिव-सेना मोर्चे पर आ रही है। श्री देवराज उर्स इस उठती आंधीको देखकर थरथरा रहे हैं।

श्रीमती गांधीने अपने वैयक्तिक शासनके चार वर्षोंमें भारतकी शान्तिको, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठाको फूंक दिया है और देशभरमें अराजकता, अव्यवस्था उत्पन्न की है। इस वास्ते बलियाके लोग (मगल पांडेका जिला) पूछते सुने गए – 'क्या बाबू ! अब अंग्रेज कभी इस देशमें वापस लौटकर न आयेंगे ?" श्रीमती गांधीने भारत भक्तिको नष्ट कर ब्रिटिश भक्तिको उत्पन्न किया है, उसका इससे बढ़कर और क्या बड़ा प्रमाण हो सकता है ? सत्ता हस्तान्तरणके २७वें सालमें लोग अंग्रेजोंको स्मरण करें क्या यही श्रीमती गांधीके तथा-कथित प्रगतिशील रूसी शासनका परिणाम है ? इस नतीजे पर मास्कोके अनुयायी डा० शंकर दयाल शर्मा ही अपनेको कृतकृत्य मान सकते हैं। भारत-भक्त तो लज्जाका ही अनुभव करेंगे।

दुर्नीतिका परिणाम

कम्युनिस्ट और शासक पार्टी कोई भी काम भारतीय जनताको सुखी बनाने, सम्पन्न बनानेके लिए नहीं करते, बल्कि रूसी सत्ता और प्रभुत्वको दृढ़ करनेके लिए करते हैं। गेहूंके थोक व्यापारका सरकारी करण क्या जनताको सस्ता अनाज देनेके लिए किया गया था ? खुला मुक्त स्वतन्त्र व्यापार करनेसे क्या यह सम्भव न था ? स्व० श्री किदवईका जादू क्यों विस्मृत कर दिया गया ? १९५३ में ३८ करोड़ आबादीके वास्ते ५ करोड़ ३० लाख टन अनाज था। आयात भी नहीं किया गया, फिर भी गेहूं ८ रु० मन बिकने लगा। १९७३ में तो लगभग १० करोड़ टन अनाज पैदा हुआ, एक करोड़ टन बीज आदिके वास्ते अलग रखनेके बाद ५५ करोड़ जनताके लिए ९ करोड़ टन बचता है। ५५ करोड़में २० करोड़ बच्चे हैं और कम उम्रके लोग हैं। इनको वयस्कके मुकाबले आधा अनाज चाहिये। अतः ४५ करोड़को अन्न पानी देनेकी समस्या सरकारके सामने थी। डाक्टरों द्वारा निर्णीत पैमानेके अनुसार प्रत्येकको अनाज देने पर भी २७ प्रतिशत अनाज बचता। इसको संकट कालके वास्ते जमा कर सरकार रख सकती थी। परन्तु रूसी प्रभुताको दृढ़ करनेके वास्ते श्रीमती गांधीकी डिक्टेटरीकी प्रतिष्ठाके वास्ते भारतमें अन्न-संकट जानबूझकर उत्पन्न किया गया और १३० करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा खर्च कर २० लाख टन अनाज आयात किया गया। यह अभी प्रारम्भ है। बुद्धि-विहीन भारत-भक्ति-शून्य सरकार जनताकी दरिद्रता बढ़ानेमें ही अपने अस्तित्वकी सार्थकता मानती है। भक्तिहीन, भारतद्वेषी सरकारका स्थान भक्तिमान् भारत प्रेमी दल ही ले सकता है। ऐसा कोई दल क्या शीघ्र उत्पन्न होगा ?

भारत नेता शून्य है। त्याग और बलिदानकी भावनाकी समाधि पर चलता इन्दिरा-शासन किसी भी समय ढह सकता है, और मारुति-मोटरके समान देशभरमें अराजकता अव्यवस्था और अशान्तिको जन्म देगा। तमिलनाडुके मुख्यमंत्री श्री करुणानिधिने इसका शंखनाद कर दिया है। क्या इन्दिरा-सरकार इसका प्रत्यावर्तन करेगी और भारत राष्ट्रवादको पुनरुज्जीवित करेगी ?

शान्तिका नाटक

सोवियत रूस नाटक करनेमें कुशल है। एक ओर मास्कोने अपने एक महान् वैज्ञानिक जोरसे मौवको नागरिकतासे वचित कर दिया और नौबुल पुरस्कार प्राप्त साहित्यिक 'सल्जेने-विश' को मारनेकी धमकीके पत्र भेजे जा रहे हैं। ये दोनों नागरिक स्वतन्त्रता चाहते हैं। यही इनका घोर अपराध है। दूसरी ओर रूस ने सातों समुद्रोंका चक्कर लगाने और संचार करनेमें समर्थ यूक्लीयर शक्तियुक्त पनडुब्बियाँ बनाई हैं। यही नहीं ६ आई०सी०बी०एम० (इण्टर कांटनेंटल ब्लास्टिक मिसाइल भी बना ली है। इस समाचारसे अमेरिकी चिन्तित हैं। वह भी अब शस्त्रीकरण बढ़ानेमें प्रवृत्त होगा। चीन सोवियत रूसके शान्ति नाटकको ढोंग और मिथ्या कहनेसे नहीं चूकता। फ्रांसने चार अणुबमोंका दक्षिण प्रशान्तमें विस्फोट किया। हेग-निर्णयको उसने नहीं माना। पर मास्को मौन रहा। फिर नई दिल्ली क्यों बोलती ? आस्ट्रेलिया और न्यूजीलेंडका अनाज नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज सिद्ध हुई।

अल्जीयर्समें अपनेको तटस्थ कहने वाले ५५ देश शान्तिका नाटक खेल रहे हैं। इसमें एक प्रस्ताव इजराइलकी निन्दामें स्वीकार किया जायेगा कि उसने अरबोंकी भूमि पर कब्जा किया हुआ है। चीन इसमें पर्यवेक्षकके नाते सम्मिलित होगा। पर कोई यह प्रस्ताव नहीं ला रहा है कि चीन तिब्बतको स्वाधीन करे और भारतकी अधिकांश २०,००० वर्ग मील भूमि खाली करे। यह है तटस्थ राष्ट्रोंकी साम्राज्यवादके प्रति विरोधके प्रति निष्ठाका नमूना। यह कठपुतलियोंके नृत्यसे अधिक कुछ नहीं है। यह तटस्थ नहीं, डरपोक देशोंकी नाटकी या नाटक मण्डली है।

भयंकरसे भयंकरतम स्थिति

रेलवे मंत्रीने चेताया है कि रेलवेको लगभग २०० करोड़का १९७२-७३ में घाटा रहेगा। बिजली इंजनियरोंकी हड़ताल टूटती चलती है, कभी बैठ जाती है। फलतः कल कारखाने पूरे आठ घंटे भी नहीं चल पाते। कोयला पहुँचता नहीं सरकारी करणके बादसे छोटे उद्योगोंका प्राण संकटमें पड़ गया है। इस प्रकार औद्योगिक उत्पादन ठप्प होता जा रहा है। इस स्थितिमें राष्ट्रीय आयमें कितनी वृद्धि होगी ? शासक पार्टीके सदस्य १० प्रतिशत अपना मासिक वेतन घटानेका विचार कर सकते हैं, उन्होंने भारी त्यागका आदर्श देशके सामने उपस्थित किया है ! वह भूल जाते हैं कि पार्लमैंटका काम साल भरका नहीं। फिर वह जीविका अर्जनके अन्य अनेक धधे करते हैं। उनको तो एक कौड़ी भी वेतन न लेना चाहिए। फिर ५१ रु० दैनिक भत्ता कायम ही रहेगा। त्यागका यह स्वांग करनेकी क्या जरूरत थी ? देशको बरबाद करनेके बाद, रूसकी प्रभुताके आगे नतमस्तक होनेके बाद सामान्य जनताको भरमानेके लिए यह स्वांग रचा जा

रहा है। क्या देशको इससे कुछ लाभ पहुँचा? क्या केन्द्रीय मंत्रियोंकी १० प्रतिशत कटौती का कुछ असर हुआ? धुआं इतना भर चुका है कि दियासलाईकी तीलीसे त्यागकी प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित नहीं हो सकती। क्या इस सत्यको शासक पार्टी कभी अनुभव करेगी? यह तो सर्वमेध यज्ञका-सर्वस्व त्यागका-समय है। क्या यह साहस शासक पार्टीमें है?

ज्योतिर्मठके शंकराचार्यका देहावसान

गत भाद्रपद शु० १३ को ७ इन्द्रप्रस्थ मार्ग दिल्लीमें ज्योतिष्पीठाधीश्वर जोशीमठके) जगद् गुरु शङ्कराचार्य अनन्तश्रीविभूषित श्रीकृष्ण-बोधाश्रमजी महाराजने अपने ८१ वर्षीय पार्थिव जर्जर देहका परित्याग कर दिया। रात्रि ८-४५के समाचारमें आकाशवाणीसे यह दुःखद समाचार सुनकर भारतके कोने-कोनेमें सहस्रों श्रद्धालुजन शोक विह्वल हो उठे और उनके भक्तजन अन्तिम दर्शनार्थ दिल्लीकी ओर चल पड़े। आपके शवको दिल्लीसे हरिद्वार भारी शोभा-यात्राके रूपमें ले जाया गया। अनेक ट्रक बसें और कारें अपने इस धार्मिक नेताकी अन्तिम यात्रामें साथ चल रहे थे। मोदीनगर मेरठ आदि स्थानों पर सहस्रों भक्तोंने शंकराचार्यके अन्तिम दर्शन करके श्रद्धांजलि भेंट की। भाद्रपद शु० १५ को हरिद्वारमें सप्त-सरोवरस्थ भगवती भागीरथीके पुण्यप्रवाहमें वेद मंत्रोंके साथ शंकराचार्यके पार्थिव शरीरको जलसमाधि दी गई।

चारों मठोंके शंकराचार्योंमें आप सबसे वयोवृद्ध विद्वान् तपस्वी और त्यागी महापुरुष थे। इस पद पर आसीन होनेकी आपकी बिल्कुल इच्छा नहीं थी, परन्तु श्रीस्वामी कर-पात्रीजीके विशेष अनुरोध पर अनिच्छापूर्वक यह पद स्वीकार किया था। इन पंक्तियोंके लेखकको भी आपके स्नेहसान्निध्यका सौभाग्य प्राप्त रहा है। आजसे ६वर्ष पूर्व सं० २०२४ वि० के आश्विन मासमें दिनाङ्क २९-३० सितम्बर और १ अक्टूबर १९६७को हिमाचल-प्रान्तीय सनातनधर्म सम्मेलन जगद्गुरु शंकराचार्यजी महाराजकी अध्यक्षतामें करनेका विशाल आयोजन सोलनमें किया गया। पहले आप की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी थी, परन्तु समय पर अस्वस्थ (ज्वरग्रस्त) हो जानेसे पत्र और तार द्वारा सोलन पहुँचनेसे मना कर दिया। इस समाचारसे कार्यकर्ताओंमें घोर निराशा व्याप्त हो गई, तब स्वागताध्यक्ष श्रीसोलन-नरेशकी आज्ञासे राजवैद्य श्रीमाधव शर्माजीको साथ ले कर मैं २७ सितम्बर ६७ को रात्रि १२॥ बजे कार द्वारा दिल्ली पहुँचा। २८को प्रातः नित्यकृत्योपरान्त जब मैंने चरणस्पर्श करके सब स्थिति निवेदन की तो स्नेहाशीर्वाद देते हुए बोले— "···अच्छा आप आ गये! डाक्टरोंने तो अभी यात्राका निषेध कर दिया है, पर जब भारतका एक प्रसिद्ध दैवज्ञ और राजवैद्य स्वास्थ्यकी जिम्मेदारी लेता है तो हम अवश्य चलेंगे।" मंत्रीस्वामी श्रीनरोत्तमाश्रम जी को आदेश दिया कि "आप सामान और सेवकोंको साथ लेकर अपनी स्टेशनवेगनसे सोलन पहुँचें। हम ज्योतिषीजीके साथ पहले जा रहे हैं ताकि सायंकाल ५ बजे शोभायात्रा के कार्यक्रम में सम्मिलत हो सकें।" सायंकाल ५॥ बजे जगद्गुरुजीको लेकर हम सोलन पहुँचे। उस दिन कालका धर्मपुर कुमारहट्टी डगसाईमें भी जनसमूहने कार रोक कर स्वागतमें पुष्पवर्षा की। सोलनके इतिहासमें इतना बड़ा जनसमुद्र

किसी भी नेताके स्वागतमें एकत्र नहीं हुआ। आपके सान्निध्यमें ३ दिन तक स०ध महा सम्मेलन भी अभूतपूर्व रूपमें पूर्ण सफल रहा। हिमाचल और विशेषकर सोलनकी श्रद्धालु जनता आपकी उस अहेतुकी कृपाको कभी भुला नहीं सकेगी। (इस सम्मेलनका पूर्ण विवरण 'ज्योतिष्मती' वर्ष ११ संख्या १में पृष्ठ १०५ से १११ तक छपा है)।

'ज्योतिष्मती' का मस्तक अमर जगद्गुरु जीके दिव्यचरणोंमें विनम्रता और श्रद्धासे नत है। पराम्बा सनातन-धर्मके स्तम्भ इस युगावतार शङ्कराचार्यके आदर्श जीवन लक्ष्यको पूरा करे और उस महान् आत्माके स्वप्नोंके भारतको उनके उत्तराधिकारी अभिनव शंकराचार्य श्रीस्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा शीघ्र जन्म दे यही 'ज्योतिष्मती'की हार्दिक कामना है।

मध्यप्रदेशसे दो महान् दैवज्ञ उठ गये

अत्यन्त खेदके साथ यह दुःखद समाचार दिया जा रहा है कि गत त्रैमासिक अवधिमें मध्यप्रदेशके दो महान् ज्योतिषाचार्योंका देहावसान हो गया। इनमें प्रथम थे ज्योतिष्मती-परिवारके सुपरिचित वयोवृद्ध विद्वान् नृसिंहगढ़के राजज्योतिषी दैवज्ञभवनके संस्थापक श्री पं० लक्ष्मीनारायणजी त्रिपाठी ज्यौतिषाचार्य ज्योतिषरत्न। त्रिपाठीजी निरभिमान सहृदय अत्यन्त सौम्य साधु-स्वभावके दयालु महापुरुष थे। यावज्जीवन वे ज्योतिश्शास्त्रकी सेवा करते रहे। सामुद्रिक-दीपिका तीन भागोंमें, यन्त्र-मन्त्र-दीपिका, रत्नदीपिका आदि सात ग्रन्थ उनके प्रकाशित हो चुके हैं। सैंकड़ों स्थानीय उच्चाधिकारियों एवं प्रतिष्ठित नागरिकोंने इस महान् दैवज्ञकी शव-यात्रामें सम्मिलित होकर श्रद्धाञ्जलि समर्पित की। 'ज्योतिष्मती' भी अपने इस अनन्य मित्र सहयोगीको हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री टीकारामजी त्रिपाठी राजज्योतिषी एवं चि. श्री देवकीनन्दन शास्त्री आदि सुयोग्य नवयुवक पौत्रोंसे आशा करती है कि वे अपने पिता—पितामहके पदचिह्नों पर चलते हुए उसी प्रकार ज्योतिःशास्त्र एवं समाजकी सेवा करते रहेंगे जैसे स्वर्गीय श्री त्रिपाठीजीने जीवन भर की है। इस कार्यमें 'ज्योतिष्मती' का सहयोग सदा उन्हें प्राप्त होता रहेगा।

दूसरे दैवज्ञ हैं सुखेड़ा (रतलाम)के राजज्योतिषी श्री पं० सिद्धनाथजी शास्त्री। आपका देहावसान अभी गत भाद्रपद कृष्णा अमावस्या दि० २८ अगस्त १९७३ को अपने ग्राम सुखेड़ामें हो गया। श्री सिद्धनाथजी शास्त्री ज्योतिष, रमल, सामुद्रिक, मंत्र शास्त्र और भारतीय संस्कृतिके अनुभवी सहृदय वयोवृद्ध विद्वान् थे। आपके चार सुयोग्य सुपुत्र हैं (१ डा० श्री विश्वनाथ शर्मा, २ श्री विश्वेश्वर शर्मा, ३ श्री शिवकुमार शर्मा और ४ श्री विष्णु कुमार शर्मा) श्री विष्णुकुमार शर्माके कुछ लेख 'ज्योतिष्मती' में प्रकाशित हो चुके हैं। ये रमल शास्त्रके मर्मज्ञ विद्वान् और प्राच्य पाश्चात्य ज्योतिषगणितके जानकार उत्साही होनहार नवयुवक है। 'ज्योतिष्मती' अपने इस स्वर्गीय स्नेही सहयोगी (श्री सिद्धनाथजी शास्त्री) को श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए बन्धुचतुष्टयसे आशा करती है कि वे अपने पूज्य पिताश्रीके आदर्श पथपर चलते हुए साहित्यकी सेवा निरन्तर करते रहेंगे।

ग्रस्तास्त खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

खण्डग्रास ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण—मार्ग शुक्ला १४ रविवार १० दिसम्बर १९७३ को होगा। यह ग्रहण ९-१० दिसम्बरकी मध्यरात्रिके बाद बंगाला बिहार, आसाम, उड़ीसा, मद्रास और लगभग सारे केरलको छोड़कर शेष समस्त भारतमें सूर्योदयसे पहले दीखेगा।

इस ग्रहणका स्पर्श आदि काल इस प्रकार है। भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम १० दिसंबर १९७३

	घं०मि०
ग्रहण स्पर्श (आरंभ)	६।३९
ग्रहण मध्म	७।१४
ग्रहण मोक्ष (समाप्त)	७।५०
पर्वकाल	१ घंटा ११ मिनट
परम ग्रास	३ कला ३४ विकला

ग्रहणका सूतक—इस चन्द्रग्रहणका सूतक दि० ९ दिसम्बर रविवारको रात्रिमें भा. स्टे. टा. ९ ३९ से प्रारंभ होगा।

ग्रहणका राशिफल—रोहिणी नक्षत्र और वृषभ मिथुन तुला और कुम्भ राशिवालोंके लिए रोग शोक चिन्ता भय अपव्ययादि अशुभ फल कारक है। मेष, मकर, कन्या और वृश्चिक राशियोंको मध्यम तथा कर्क, सिंह धनु: और मीन राशि वालोंके लिए शुभफल कारक है।

भारतके कुछ प्रसिद्ध नगरोंमें इस ग्रहणके दिन (१० दिसम्बर सन् १९७३ ई० को) चन्द्रास्त काल (भा. स्टै. टा.) तथा पर्व (ग्रहण के प्रारंभसे चन्द्रास्त तक) काल दिया जा रहा है।

नगर	चन्द्रास्त घं० मि०	पर्व मि०	नगर	चन्द्रास्त घं० मि०	पर्व मि०	नगर	चन्द्रास्त घं० मि०	पर्व मि०
अमृतसर	७।२५	४६	जोधपुर	७।२१	४२	भटिंडा	७।२२	४३
अलीगढ़	७।३	२४	दिल्ली	७।९	३०	मण्डी(हि.प्र)	७।१७	३८
अम्बाला	७।१४	३५	देहरादून	७।९	३०	मंगलोर	६।४५	६
अहमदाबाद	७।१५	३६	नागपुर	६।४४	५	मथुरा	७।२	२३
आगरा	७।१	२२	नैनीताल	७।१	३२	रोहतक	७।१२	३३
उज्जैन	७।२	२३	पटियाला	७।१६	३७	लखनऊ	६।४९	१०
उदयपुर	७।१३	३४	पठानकोट	७।२४	४५	लुधियाना	७।२०	४१
कांगड़ा	७।२१	४२	पंजिम (गोवा)	६।५४	१५	शिमला	७।१५	३६
कुरुक्षेत्र	७।१४	३५	पूना	७।०	२१	श्रीनगर	७।३३	५४
ग्वालियर	६।५९	२०	प्रयाग	६।४२	३	सहारनपुर	७।११	३२
चंडीगढ़	७।१५	३६	फिरोजपुर	७।२६	४७	हरिद्वार	७।८	२९
जम्मू	७।२८	४९	बम्बई	७।५	२६	हिसार	७।१६	३७
जयपुर	७।१०	३१	बीकानेर	७।२३	४४	होशियारपुर	७।२१	४२
जालंधर	७।२२	४३	भोपाल	६।५६	१७			

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

अक्तूबर १९७३ ई०

ता० १५ सोमवार—श्रीगणेश ४ करवाचौथ व्रत [चन्द्रोदय २०।१५

१६ मंगलवार—तुलामें सूर्यसंक्रान्ति मु०३० पुण्यकाल अगले दिन १७ अक्तूबरको।

१८ गुरुवार—अहोई अष्टमी सायंकालमें।

२२ सोमवार—रमा एकादशी व्रत।

२३ मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत धनतेरस श्री धन्वन्तरि जयन्ती, गोवत्सा १२

२४ बुधवार—रूप १४ श्रीहनुमज्जयन्ती।

२५ गुरुवार—श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपमाला, महावीर निर्वाण दिन, कमला ज०

२६ शुक्रवार—अन्नकूट, गोवर्द्धनपूजा, बलि पूजा, जुमातुल विदा।

२७ शनिवार—भ्रातृटिक्का २, यम २, दक्षिणभारतमें चन्द्रदर्शन।

२८ रविवार—चन्द्रदर्शन मु० ३० विश्वकर्मा जयन्ती, ईद दक्षिणभारतमें

२९ सोमवार—ईद पूर्वी उत्तरीय भारतमें।

३१ बुधवार—ज्ञानपंचमी, पाण्डव पंचमी।

नवम्बर १९७३ ई०

ता० ३ शनिवार—गोपाष्टमी, दुर्गा ८।

४ रविवार—आमला ९ कूष्माण्ड नवमी।

६ मंगलवार—प्रबोधिनी ११ व्रत तुलसीविवाह, भीष्म पंचक प्रारंभ।

७ बुधवार—निम्बार्क सम्प्रदायका ११ व्रत।

८ गुरुवार—प्रदोष व्रत।

९ शुक्रवार—वैकुण्ठ चतुर्दशी।

१० शनिवार—कार्तिकी १५, सत्यव्रत, मेलापुष्करराज, रेणुकातीर्थ, गढगंगा, भीष्मपंचक कार्तिक स्नान समाप्त जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जयन्ती।

ता० १३ मंगलवार—गणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २०.३

१५ गुरुवार—वृश्चिकमें सूर्य संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल अगले दिन शुक्रवारको।

१७ शनिवार—श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी. ला० लाजपतराय निधन दिवस।

२० मंगलवार—उत्पन्ना एकादशी व्रत।

२१ बुधवार—मल्ल द्वादशी।

२२ गुरुवार—प्रदोषव्रत।

२४ शनिवार—शनैश्चरी अमावस्या।

२६ सोमवार—चन्द्रदर्शन मु० १५।

३० शुक्रवार—गुरुतेगबहादुर बलिदान दि०

दिसम्बर १९७३ ई०

ता० १ शनिवार—स्कन्द षष्ठी, चम्पा ६

६ गुरुवार—मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती।

७ शुक्रवार—प्रदोष व्रत।

९ रविवार—सत्यव्रत, श्रीदत्तजयन्ती त्रिपुरभैरवी जयन्ती, ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण।

१३ गुरुवार—श्रीगणेश ४व्रत चन्द्रोदय २०।५६

१५ शनिवार—धनु:में सूर्यसंक्रान्ति मु० ३०

१९ बुधवार—श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती।

२० गुरुवार—सफला एकादशी व्रत।

२१ शुक्रवार—प्रदोष व्रत।

२४ सोमवार—सोमवती अमावस्या।

२५ मंगलवार—क्रिसमसडे (बड़ा दिन)

२६ बुधवार—चन्द्रदर्शन मु० ४५

जनवरी १९७४ ई०

ता० १ मंगलवार—श्रीगुरु गोविन्दसिंह जयन्ती।

४ शुक्रवार—पुत्रदा ११ व्रत स्मार्तोंका, हज्ज यात्रा।

५ शनिवार—पुत्रदा ११ व्रत वैष्णवोंका ईदुल-जुहा।

६ रविवार—प्रदोष व्रत।

८ मंगलवार—पौषी पूर्णिमा सत्यव्रत, शाकम्भरी जयन्ती।

एक रोमाञ्चक घटनाकी कहानी—

'लाल हवेली'

[लेखक :—श्री गिरिधर चोटिया, साहित्यचार्य-साहित्यरत्न-प्रभाकर]

["अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते" इस आदर्श वाक्यको विद्वान् लेखकने इस घटना क्रममें सिद्ध किया है। घोर पापकर्मका फल तत्काल इसी जन्ममें भी भोगना पड़ जाता है। कुछ शुभाशुभ कर्मोंका फल जन्मान्तरमें—पुत्र, पति, पत्नी, माता, पिता, पुत्र, मित्र, शत्रु, बन्धु-बान्धव गुरु-शिष्य या स्वामी-सेवक रूपमें—प्राप्त होता है, अतः 'ऋणबन्धु-संसार' की लोकोक्ति भी सर्वथा सत्य है। धन लोभी सेठ और नर्सने जिस धनी डाक्टरकी हत्या की थी उसका बदला डाक्टरने सेठके यहां पुत्ररूपमें जन्म लेकर किस प्रकार लिया, यह इस लेखके पढ़नेसे ज्ञात होगा। —सम्पादक]

मेरा स्थानान्तर एक रेगिस्तानी शहरमें हो गया। चारों ओर रेतीले टीले स्वर्ण-पर्वत खण्डसे दीख रहे थे। पुराणोंमें लिखा है कि इन्द्रने सभी पर्वतोंके पंख काट डाले। पर ये रेगिस्तानी पहाड़ आज भी एक स्थानसे दूसरे स्थानकी ओर उड़ते हुए "मायावर" संज्ञा प्राप्त करते हैं।

मैंने उक्त नगर निवासार्थ अपनेको धन्य माना। नगरमें धनिकोंकी कोई न्यूनता न थी। केवल कमी थी तो निवासार्थ मकानकी। भवन काफी थे। बड़े-बड़े सुरम्य सौध, वास्तुकला-कृतिके अद्‌भुत नमूने। पर बन्द। अलीगढ़ी ताले लगे हुए। सेठ लोग कलकत्ता या बम्बईमें रहते हैं। वहां भी उनके निजी मकान हैं। पैसा है। अतः भाड़ेकी भी परवाह नहीं। मुझे यह स्थिति देखकर कबीरकी निम्न उक्ति याद हो आई—

"जलमें मीन पियासी, मोहे सुन-सुन आवै हांसी"

निदान मुझे किसी तरह एक मध्यम वित्त वालेके मकानका अर्द्धभाग निवासार्थ मिल गया। मैं अपने मकानकी छतसे निकटस्थ उत्तुङ्ग प्रासादको निहारा करता हूँ। लाल रंग से पुता, लाल पत्थरोंसे बना वह महल बड़ा नयनाभिराम लगता है। मैं मुंडेरसे उसमें झांकनेका प्रयत्न करता हूं तो ढ़ेरों कबूतरोंकी बीठोंके सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं देता।

वह हवेली युवावस्थामें हुई विधवा सी लगती थी। उफनता यौवन, पर वैधव्य। विधाताकी काली लकीर। विगत पचास वर्षों से मालिक एक बार भी नहीं आया। मूक ताला मुख्य द्वारकी रक्षा कर रहा था।

× × ×

"तुम जन्मते ही मर क्यों न गये?" माता ने झुंझलाते हुए कहा।

"माता होकर तुम यह क्या कह रही हो?" पुत्रने रुग्ण शैया परसे कराहते हुए कहा।

"मैं ठीक कहती हूँ। जिस तरह तेरेसे पहले तीन बच्चे आंख खोलते ही बिदा हो गये उसी तरह तुम भी चले जाते तो कई जीवों को अब कष्ट न होता।"

"तेरा कहना ठीक है। अगर मैं पहिले

चला जाता तो प्रतिशोध कौन लेता ?"

"प्रतिशोध………। प्रतिशोध……… कैसा प्रतिशोध ?

"उसीका प्रतिशोध, जो तेरे पतिने मेरे साथ किया था।"

'मेरे पतिने………नहीं………वे ऐसा नहीं कर सकते……।

"हां…", हाँ…, तेरे पतिने……।

कहां ?

कलकत्ता महानगरीमें।

कब ?

सन् १९२० में………।

पुत्र ! तू है कौन……?

मुझे पुत्र न कहो……वैरी कहो वैरी। प्रतिशोधी।

मुझे तुम्हारा परिचय चाहिये। कौन हो तुम ?

मैं वही डाक्टर मुखर्जी हूँ। जिसे तेरे पतिने धनके लिये धोखेसे मार डाला।

× × ×

'डाक्टर बाबू ! डाक्टर बाबू !!

"क्या है नर्स……?" डाक्टरने अपने काममें बाधा पड़ते देख झुंझलाते हुए कहा।

"हमारे नये किरायेदार आ गये हैं।"

अच्छा हुआ……। मकान सूना-सूना तो नजर न आयेगा।

पर डाक्टर ! वह अकेला है।

"और भी अच्छा। शान्ति रहेगी। मारवाड़ी लोग प्रायः अकेले ही रहते हैं।"

"सेठ तो बड़ा मिलनसार और भला लगता है।"

हूं………।

डाक्टर अपने काममें लग गये। डाक्टर एकाकी पुरुष थे। घरमें कोई न था। निपट ब्रह्मचारी। सुखदुःखकी साथिन केवल नर्स ही थी। नर्स-क्लिनिकमें तो सहायता करती ही थी। साथ ही गृहकार्य संचालिका भी थी। वही सर्वे-सर्वा थी। आय-व्ययका पूरा हिसाब रखती। बैंकमें क्या जमा है ? डाक्टरसे अधिक जानती थी। डाक्टर लाखों का मालिक था। कई भवनों का स्वामी। प्रतिदिन एक हजारसे कम न कमाता था। खर्च भी दिल खोलकर करता था।

इतने सम्पन्न, पर लापरवाह डाक्टरको देखकर सेठका मन ललचा उठा। सेठ बराबर घाटेमें चल रहा था। घरसे बार-बार पैसा भेजनेके तकादे आते। वह विवश था। करे तो क्या करे ?

एक दिन उसने योजना बना डाली। नर्स से मित्रता कर ली। उसने सुहृद्-भेद नीतिसे काम किया। नर्सको समझाया कि—"डाक्टर बूढ़ा हो चला है। चाहे जब मर सकता है। बादमें तुम्हारा क्या होगा ?" नर्स इस अचिन्त्य चिन्तासे विवर्ण हो गई। सेठका दाव चला। योजना बनी। क्रियान्वित हुई। त्रिया चरित्र सफल हुआ। स्वस्थ डाक्टरकी अकस्मात् हृद् गति रुक गई। नर्स सेठानी बनी। लाखोंकी स्वामीनी। सेठकी अंक शायिनी। पर सेठ भंवरा न था। वह चमड़ीका लोभी न था, दमड़ीका लोभी था। उसे तो धन चाहिये था, केवल धन।

त्रियाचरित्र पुरुष-चरित्रसे हार गया। सेठने विश्वास जागृत कर सारा धन अपने अधिकारमें ले लिया। बैंकके सेफकी चाबी सेठको मिल गई। वहां स्थित धनके साथ लाखों के हीरे जवाहिरात सेठके हो गये। सेठ कपट-विद्यामें निष्णात था।

नर्स सेठ जैसे हँसमुख और मिलनसार पतिको पाकर आत्मविस्मृत हो चुकी थी। तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर कर चुकी थी। सेठके कपट जालका उसे रत्ती भर भी पता न था। वह सब तरहसे सुखी और सन्तुष्ट थी। उसे स्वप्नमें भी ख्याल न था कि सेठ उसे धोखा दे सकता है क्या?

× × ×

रेलगाड़ी तेजीसे इलाहाबादकी ओर जा रही थी। फर्स्टक्लासमें बैठा जोड़ा कइयोंके लिये ईर्ष्याका विषय था। त्रिवेणी संगम पर जा रहे थे आधुनिक सेठ और सेठानी। अपने पिछले पापोंको धोनेके लिये ही तो लोग तीर्थ यात्रा करते हैं। गंगा स्नान करते हैं। दान पुण्य करते हैं। पर यहां तो योजना ही और थी। विगत पापका सम्मार्जन और नवीनका उपार्जन।

प्रयागका सुरम्य पुलिन प्रदेश। शरद्की प्रारम्भिक छटा। पूर्णिमाका पावन पर्व। सर्वत्र पूर्ण चन्द्रकी चन्द्रिका।

एक नौका दम्पतिको लिये बढ़ रही थी। नाविक बड़े उत्साहसे चला रहा था। बड़ी रकम प्राप्तिकी आशा थी। "छपाक्" शब्द गुञ्जित हुआ। एक चीख निकली निरीह प्राणी की। नौका उलट गई।

सेठ और नाविक सुरक्षित लौट आये। सेठने अभिनय खूब किया, घड़ियालके आंसू बहाये गये। जाल लेकर शवको ढूंढनेका जाल रचा गया। पर शव कहां? वह जंजालमें कब का ही लुप्त हो चुका था। योजना सफल हुई। सेठानीका पिण्डदान कर पिण्ड छुड़ाया। भोले डाक्टरको धोखा देने वाली नर्स सेठसे धोखा खा गई।

साधारण दलाली कर पेट पालने वाला वह सेठ अब "धन्ना सेठ" बन गया। परन्तु सरकारी गुप्तचर विभागसे न बच सका। पैसे की चोट बुरी होती है। वह दिनमें अन्धेरा और रातको उजाला कर सकती है। अर्थात् कालेसे सफेद और सफेदका स्याह बना सकती है। वह पाप भी पैसेसे छूट गया।

सरकारी आंखोंमें धूल झोंककर भी सेठ प्रसन्न न रह सका। सामाजिक अदालतने उसे बहिष्कृत कर दिया। सभी जगह उसकी निन्दा होने लगी। नगरमें वह चर्चाका विषय बन गया। कइयोंके ईर्ष्याका पात्र भी।

अन्तमें सेठने सामाजिक व्यवहारोंसे ऊब कर कुछ दिनके लिये शस्य श्यामला वंग भूमि का परित्याग कर दिया। जन्मभूमिके गांव आ गया। यहां उसने अनेक दान पुण्य किये। एक सुन्दर महल बनवाया। जिसे लोग "लाल कोठी" उर्फ रक्त रञ्जित कोठी कहते हैं।

सेठ विवाहित तो था ही, अब उसे असली सेठानी मिल गई। सन्तान हुई, बहुत खुशी मनाई गई। मध्य उत्सव सन्तान मर गई। निराशा हुई। एकके बाद अनेक हुई, और गई। सेठ दुखी था, यहां भी उसे चैन न मिला।

अधिक कष्ट आने पर नास्तिक भी निरुपाय हो आस्तिक बन जाते हैं, बड़े बड़े अनुष्ठान कराये गये । उपाय सफल रहा । लड़का जीवित रहा । बड़ा हुआ । प्रतिभा-सम्पन्न सन्तान पाकर सेठ निहाल हो गया ।

लड़केका विवाह भी धूमधामसे किया गया । विवाहकी धूमको अब भी कुछ वृद्ध याद किये हुए हैं । सेठ अब सुखी था ।

भवितव्यताको कौन जान सकता है, ज्वरने लड़केको आ दबोचा । ज्वर काल बनकर आया था, अतः जानेका नाम न लेता था । सेठने उसकी चिकित्सामें पानीकी तरह पैसा बहाया । बड़े बड़े अंग्रेज डाक्टर बुलाये गये । लड़का ठीक नहीं हुआ ।

एक दिन सेठानीने क्रोधमें आकर उससे कहा कि "मेरे अन्य बालकोंकी तरह तुम भी जन्मते ही क्यों न मर गये ?

मैं बदला लेकर ही रहूँगा । लड़का चिल्लाया "मैं डाक्टर हूँ ।" लड़केकी आवाज सुन सेठ भी उपस्थित हुआ । सेठने लड़केका मुख देखा तो सन्न रह गया । अरे ! अरे यह वही डाक्टर मुखर्जी है । सेठने हाथ जोड़े— 'डाक्टर साहब हमें क्यों दुःख दे रहे हैं ? हम आपसे माफी चाहते हैं ।'

"माफी......। तुम बड़े नीच हो । तुमने मेरे साथ धोखा किया है ।"

"नहीं......नहीं, मैंने नहीं नर्सने आपको विष दिया था ।"

"नर्सको तुमने बहकाया । बादमें उसे भी तुमने मारा ।"

"मैं इस सबके लिये क्षमा चाहता हूं ।"

"मैं जब तक अपने पैसे वसूल नहीं कर लूं, तब तक तुझे माफ नहीं कर सकता ।"

"मैं प्रायश्चित्त करनेको तैयार हूं ।"

"तो बीस हजारका तत्काल दान करो । मैं तेरा पीछा छोड़ दूंगा ।"

"मैं अभी दान करता हूँ । पर आपने इस निरपराध लड़कीसे विवाह क्यों किया ? इसने आपका क्या बिगाड़ा ?"

"तुम इसे निरपराध कहते हो । यही तो वह नर्स है—जिसने मुझे जहर दिया था । इसने मुझे धोखा दिया, तेरे बहकानेसे । उसीका इसे दण्ड मिलेगा । भरी जवानीमें विधवा होकर फल भोगेगी, उम्र भर रोयेगी, तुझे रुलायेगी । तभी मेरी आत्माको शान्ति प्राप्त होगी ।"

उस दिनसे सेठकी पुत्रवधू विधवा हो गई । कुछ दिन बाद उक्त 'लाल-हवेली" भी विधवा हो गई, भरी जवानीमें ।

विक्रम-संवत् क्यों 'कृत-संवत्' कहलाया ?

[ले०—श्री पं० चन्द्रकान्त बाली]

इतिहास के पृष्ठों पर हम जिसे 'विक्रम-संवत्' नामसे जानते-पहचानते हैं, उसके प्रवर्तकके बारेमें काफ़ी भ्रम पाया जाता है, अथवा भ्रम फैलाया जा रहा है। पहले तो हम यह निश्चय नहीं कर पाये कि संवत्-प्रवर्तक राजा 'विक्रमादित्य' है भी या नहीं। महामति कल्हणने संवत्-प्रवर्तक को 'शकारि' तो माना है, विक्रमादित्य[1] नहीं। पुराण-ग्रन्थोंमें मालव-नरेशको विक्रमादित्य स्पष्टतया मंजूर किया है। दूसरे विक्रमादित्योंकी एक लम्बी परम्परा[2] है। जाने किस-किसके साथ मालव-नरेशका तादात्म्य-या-विश्लेषण हो रहा है। तीसरा, मालव-वंशका इतिहास अपने-आपमें मुखर नहीं है। इन सब कठिनाइयोंसे घिरा हुआ शोधार्थी किसी निश्चित 'निर्णय' पर पहुंच कर भी स्वयं को आत्मविश्वास-हीन जैसा अनुभव करता है। विक्रम-संवत्के नाम भी अलग-अलग युगोंमें अलग-अलग पाए गए हैं। विक्रम-संवत्के बारेमें कोई एक-आध कठिनाई हो तो मिलकर उसका हल खोजें, यहां तो कठिनाइयां ही कठिनाइयां मुँह बाए खड़ी हैं। खैर।

विक्रम-संवत्के अन्य दो नामोंकी बड़ी चर्चा पाई जाती है—१—मालवगण स्थितिकाल[3] और २—कृत संवत्[4]। हम अपनी विचार-सीमा 'कृत-संवत्' के नाम-विश्लेषण तक सीमित रखेंगे।

'कृत' शब्दका अर्थ अलग-अलग पाया गया है। मेदनीकोश[5] में कृत=युग,[6] अलम्[7] विहित-कर्म और हिंसा, इन चार अर्थोंमें पाया जाता है। हलायुधकोशमें कृत=पर्याप्त[8] और कृतयुगके नामके लिए आया है। इसके अतिरिक्त[9] 'कृत' का अर्थ है—चार (४)। कृतयुगको यह नाम इसलिए दिया गया है कि यह युग कलियुगसे चार गुना बड़ा है। यथा—कलिकाल ४,३२,००० है, इसे चारसे

---

1. शकारिः विक्रमादित्य' :—इति स भ्रममाश्रितैः।
अन्यैरत्रान्यथा लेखि, विसंवादि, कदर्थितम्॥ राज० २।५
2. पुराण विक्रमादित्य : ७१६ ईसापूर्व, शालिवाहनविक्रमादित्य : ३२ ईसवी, साहसाङ्क विक्रमादित्य : ६६ ईसवी, हर्ष विक्रमादित्य २१४ ईसवी, विषमशील विक्रमादित्य : ४१२ ईसवी, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य : ३६४ ई० चालुक्य विक्रमादित्य : ६४० ई०
3. मालवेश-गत-वत्सरशतैः द्वादशैश्च षड्विंशपूर्वकः।
4. श्रीर्मालवगणाम्नाते प्रशस्ते कृत-संज्ञिते।
5. कृतं युगेऽलमर्थे स्यात् विहिते हिंसिते त्रिषु। —तान्तवर्ग ११
6. कृतत्रेतादि सर्गेण युगाख्यासेकसप्तति :—विष्णुपुराण २।१।४३
7. अथवा कृतं सन्देहेन—शाकुन्तलम् प्रथमोऽङ्क।
8. पर्याप्तेऽपि कृतं स्यादाहवनीयादिषु त्रिषु त्रेता। ७८६,
9. वसु-रन्ध्र-कृतं तथा। वसु=८, रन्ध्र=०, कृतम्=४, ४०८ वर्ष।

गुणा किया—×४=१७२८००० वर्ष। स्पष्ट हो, किसी भी कोशमें कृतका अर्थ 'धर्म' अथवा 'सत्य' नहीं पाया गया। वेद[10] में कृत का प्रयोग उद्यम अथवा विहितकर्मके लिए आया है, धर्म अथवा सत्यके लिए नहीं आया। आदियुगका 'सत्ययुग' नाम गुणसूचक है और 'कृतयुग' नाम संख्यासूचक है। इसी संदर्भमें हम 'कृत-संवत्' का विश्लेषण करना चाहेंगे। 'कृत' के पर्यायके रूपमें सत्यका ग्रहण व्यंजनामूलक हो-सो-हो, परन्तु अभिधामूलक क़तई नहीं है।

१ **पूर्वपक्ष** : (पं० भगवद्दत्त बी.ए.)—पंजाबके ख्यातनामा इतिहासकारने शूद्रक-संवत्का पर्याय 'कृत-संवत्' प्रस्तावित किया[11] है। स्व० भगवद्दत्त इधर तो शूद्रकको 'विक्रम' बतानेका असफल प्रयास करते हैं, उधर कृत-संवत्को मालवेशोंके साथ[12] जोड़ते हैं। हम जानते हैं, शूद्रक ब्राह्मण-सम्राट् था, क्षत्रिय या मालववंशीय नहीं। इस स्व-वचन विरोधका ज्ञान संभवतः उन्हें भी नहीं था। दूसरा, उन्होंने कृत-संवत्का मूल आधार धर्म-शासन बताया है। यथा—

(क) एवं ततस्तस्य तदा साम्राज्यं धर्मशासितम्[13] ॥ ६ ॥

(ख) इस धर्म-शासनके कारण विक्रम संवत् कृत-संवत् कहलाया।

(ग) वह कृत-विक्रमादित्य शूद्रक था। उसीने सबसे पहले शकोंका नाश करके धर्मका राज्य स्थापित किया।

(घ) एकं धर्मादि पुरुषार्थमुद्दिश्य प्रकारवैचित्र्येण अनन्त वृतान्त-वर्णन-प्रधाना शूद्रकादिवत् परिकथा[13]।

(ङ) इस प्रकार शूद्रकका राज्य कृतयुगका प्रवर्तक था।

इस कथनमें हमें दो आपत्तियां हैं। पहली यह कि स्व० भगवद्दत्त किस शूद्रककी कथा चला रहे हैं। हम इतिहासके पृष्ठों पर तीन शूद्रकोंसे परिचित हैं— (क) प्रथम शूद्रक कलि संवत् १६४५ में हुआ[14], (ख) दूसरा शूद्रक कलि संवत् २६४५ में हुआ[15], (ग) तीसरा शूद्रक ७८—ईसवी=३१७६ कलि-संवत्में हुआ[16], स्व० भगवद्दत्त किस शूद्रकके बारेमें लिख रहे हैं—यह कहीं भी उन्होंने स्पष्ट नहीं किया। तीनोंकी परिचर्चा एक साथ संभव नहीं है तथा तीनोंका एक जैसा धर्म-निष्ठ होना भी बुद्धिगम्य नहीं है। दूसरा, शूद्रक स्वयं शक-नरेश था। यह बात दूसरी है कि वे स्वयं ब्राह्मण-शक थे और शूद्र-शकोंको परास्त कर शासनारूढ़ हुए थे। यहां स्मरण रख लेनेकी बात इतनी है कि शक-निहन्ता शूद्रक तीसरे स्थान पर है और भर्तृ-हरि तथा विक्रमादित्य

10. कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः। —अथर्ववेद।
11. भारतवर्षका बृहद इतिहास : प्रथम भाग, पृष्ठ १६६, पंक्ति ३।
12. श्रीर्मालवगणाम्नाते प्रशस्ते कृत-संज्ञिते। —वही, पृष्ठ १६८, पंक्ति १२।
13. वही, पृष्ठ १६६, पंक्ति ८।
14. बाण-वेद-नव-चन्द्र वर्जिताः तेऽपि शूद्रक समाः प्रकीर्तिताः। —यल्लाभार्य
15. बाणाब्धिगुणदस्रोनाः शूद्रकाब्दाः कलेर्गताः।
16. (क) नन्दाद्रीन्दुगुणास्तथा शकनृपस्यान्ते कलेर्वत्सराः।
(ख) प्रसिद्ध राष्ट्रीय संवत्।

का भाई है। इस प्रसंग पर हमने अन्यत्र विस्तृत रूपेण लिखा [17] है।

(च) भगवद्दत्तका मन्तव्य अपने-आपमें इतना अपूर्ण है कि वह चर्चा-निरपेक्ष हो गया है। जितना लिख दिया है—इतना पर्याप्त है।

२. **पूर्वपक्ष** : (पं० सूर्यनारायण व्यास)—उज्जयिनीके प्रख्यात ज्योतिर्विद् पं० सूर्यनारायण व्यासने कृत-संवत्का एक अन्य आधार प्रस्तुत किया है। उनके मतमें कृत-संवत्का मूल-आधार कार्तिकारंभके कारण कृत्तिका नक्षत्रका संक्षिप्त 'कृत' का प्रयोग[18] है। उन्होंने अन्यत्र कृतवीर्यकी परम्परामें 'कृत' का संबन्ध जोड़नेका यत्न किया[19] है।

हम इस स्थापनाको तर्क संगत एवं बुद्धिगम्य तो मानते हैं और किसी हद तक स्वीकार कर सकते हैं, पर हमारे समक्ष कुछ विसंवाद तैरते हुए नजर आते हैं, जिनका समाधान हमें मिलना चाहिए। एक तो यह कि कृत-संवत्का मौलिक आधार 'एक' होना चाहिए, 'दो' नहीं। यदि 'कृत्तिका' नक्षत्र ही इस नामकरणका आधार है तो हमें 'कृतवीर्य' का परित्याग करना, होगा अथवा 'कृतवीर्य' के नाम पर 'कृत्तिका' को छोड़ना होगा। दो-दो आधार अपने-आपमें कच्चे पड़ जाते—यह सोचनेकी बात है। दूसरा, कृत्तिकाका संक्षिप्त रूप 'कृत' किसी कोशमें नहीं मिलता और कृतवीर्यका संक्षिप्त नाम 'कृत भी निश्चित सूत्र मिलने पर ही अपनाया जा सकता है. जो हो, हम इस स्थापनासे आंशिक रूपेण सहमत हैं।

सिद्धान्त पक्ष

मालवंशका इतिहास ग्रन्थों, शिलालेखों, ताम्रपट्टों तथा साहित्यमें इतना मुखर नहीं है, जिसके बलबूते पर 'इदम्-इत्थम्' की श्रेणिका इतिहास लिखा जा सके। परन्तु जो प्रकीर्ण तत्व मिल सके हैं, उन्हें जुड़-जुड़ाकर इतिहासकी पूरी-अधूरी कहानी बन जाती है। पुराण-ग्रन्थोंमें लिखा है, सप्त गर्दभिल्ल-वंशजोंने राज्य[20] किया—किस वर्षसे किस वर्ष तक, यह नहीं लिखा। गर्दभिल्ल वंशचरोंका नाम भी क्रमबद्ध नहीं मिलता। इसका तात्पर्य यह भी न समझ लेना चाहिए

17. देखिए 'ज्योतिष्मती' वर्ष १६ संख्या ४

18. "कृतसे कार्तिकादि विक्रम-वर्षगणनारम्भका सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है। उसी समय समर-यात्रा आरम्भ कर पराक्रम-विजय करनेकी सूचनाएं हैं। जिनके आधार पर कार्तिकमें दीपावली और विजयोत्सवकी परम्परा आज तक प्रचलित हैं। यह कार्तिक चूंकि कृत्तिकासे आरंभ होता है (?) इस कारण 'कृत' संकेत हो सकता है।"
—एक लेखके आधार पर

19. "क्योंकि भार्गव ब्राह्मणोंके विरुद्ध हैं, हम क्षत्रियोंका व्यापक विद्वेष तत्कालीन समाज की स्थितिका चित्र प्रस्तुत करनेमें सहायक हो सकता है। इस संगठनकी विशेषता और कृतवीर्य है, हयका प्रचण्ड शौर्यमय व्यक्तित्व हमारे समक्ष आ सकेगा। उसीमें कृत-संवत्, मालव-संवत्, विक्रम-संवत्की शृंखला जुड़ी हुई है।" —वही लेख

20. सप्तगर्दभिल्ला भूयो भोक्ष्यन्तीमां वसुन्धराम् —मत्स्य

कि मालव-वंशधरोंके विषयमें जो-जो सामग्री उपलब्ध है, उसका उपयोग न किया जाय ! हम पहले मालव वंशधरोंका अधूरा चित्र प्रस्तुत करते हैं :—

मालव वंश

१. गन्धर्वसेन[21] : ६४ ईसा पूर्वसे······ [प्रथम गणस्थितिकाल[
(साहानुसाही[22] : सामयिक शासन)
गन्धर्वसेन : ७७—६६ ईसापूर्व तक [द्वितीय गणस्थितिकाल]
(कुषाणवंश : नहपान[23], ६६ ईसापूर्व)
२. विक्रम[24] [—केसरी] : ५८ ईसापूर्व [तृतीय गणस्थितिकाल]
३. शिलादित्य[25] : ५० ईसापूर्व } नहपान तथा शालिवाहनसे
४. कदर्पसेन[26] : ४० ईसापूर्व, } —संघर्ष—

21. (क) हम प्रकारान्तरसे जानते हैं कि शालिवाहनने विक्रमादित्यके पौत्रसे राज्य छीन लिया था। उज्जयिनीमें शालिवहनोंकी वंश-प्रतिष्ठा ३२ ईसवी सन्‌में हुई। यदि १८—१८ वर्ष प्रति पीढ़ीका राज्यकाल कल्पित किया जाय तो १८×७=१२६ वर्ष हुए। और, १२६ −३२=९४ ईसापूर्वमें राज्यारंभ स्वयं सिद्ध हो जाता है।
(ख) वत्सभट्टिकृत प्रशस्तिमें लिखा है विक्रम संवत् ४६३ में सूर्य मन्दिरका जीर्णोद्वार हुआ वही, प्रथम मालवगण स्थितिकाल ५२६—वर्ष भी था। दोनोंमें ३६ वर्षोंका व्यवधान हैं। सो, ५८+३६=९४ ईसापूर्वसे आरंभ स्वतः सिद्ध है।

22. जैन-ग्रन्थोंसे पता चलता है, गन्धर्वसेनके १३वें शासनकालमें साहनुसाहियोंने कालकाचार्यको सहयोग देकर उज्जयिनी हस्तकर कर ली, और चार वर्ष शासन किया।

23. चार वर्षके पश्चात् गन्धर्वसेन पुनः राज्य पर आ बैठा, परन्तु नहपानने नए सिरेसे गन्धर्वसेनको पराजय दी, जैसा कि जैन ग्रन्थोंमें लिखा है—"वीरजिणं सिद्धिगदे चउसद इगिसट्ठिवास-परिमाणो कालंमि अदिक्कंते उप्पण्णो एत्थ सगराओ। ८६।" वीरसवत् ४६१ में शक राजा हुआ। सो, ५२७—४६१=६६—ईसापूर्व नहपानका उज्जयिनी पर अधिकार सिद्ध होता है।

24. प्रसिद्ध विक्रम-संवत्। देखो टिप्पणी सं० १। कल्हणके विचारमें विक्रम शकारि तो हैं, जो नहपानकी विजयसे सिद्ध है, परन्तु 'विक्रमादित्य' नहीं। हमने इसीलिए विक्रमकेसरी नाम प्रस्तुत किया है।

25. जैन-ग्रन्थोंमें लिखा है : वीर संवत् ४७७ में विक्रमसे शिलादित्य राजा हुआ। सो, ५२७—४७७=५० ईसापूर्व, इसका तात्पर्य यह है कि क्रम-केसरीने केवल ८ वर्ष राज्य किया।

26. नहपानके युगमें उज्जयिनीमें कंदर्पसेन राजा सिंहासनासीन था।

५. विक्रम[27] (—आदित्य) २८—८ ईसापूर्व, [चतुर्थ गणस्थितिकाल]
६. विक्रम-पुत्र[28] ७—१७ ईसवी,
७. विक्रम-पौत्र[29] १७ ३२ ईसवी।

विश्लेषण

(क) जैन-ग्रन्थोंमें गन्धर्वसेनको 'गर्दभिल्ल' गदम्भ' 'रासभराज' आदि नामोंसे स्मरण किया है, जो घृणाका व्यंजक है। परन्तु बात ऐसी नहीं है। रासभी-विद्याज्ञानके कारण गन्धर्वसेनको 'गर्दभिल्ल' नाम दिया गया है। चूंकि पुराणोंमें यही नाम है. अतः हमें स्वीकार है।

(ख) वंशादि पुरुष होनेसे यह वंश-स्थापन प्रथम गणस्थितिकाल माना गया।

(ग) गन्धर्वसेनकी कालकाचार्यसे शत्रुता इतिहास-विषय बन चुकी है। इनका १३ सालका शासन बुद्धिगम्य है। परन्तु जिन जैन-ग्रन्थोंमें 'गन्धव्यय' का शासनकाल १०० वर्ष लिखा है—इसके बारेमें कोई क्या कह सकता है ?

(घ) गन्धर्वसेनकी पुनः सिंहासन-प्रतिष्ठा दूसरा गणस्थितिकाल मानी जा सकती है।

(ङ) हम कुषाण वंशका समय ७८—ईसवी न मानकर ७०—ईसापूर्व मानते हैं। उसीके प्रतिनिधि नहपानने कुछ समयके लिए उज्जयिनीमें शासन किया। जैन-ग्रन्थोंमें नहपानका समय ४० वर्ष लिखा है। हमारे विचारमें नहपान उज्जयिनी शासक तथा शकेतर (मालवों) के प्रतिस्पर्धी दोनों रूपोंमें ४० वर्ष रहा। सो ७०—४०=३० (हमारे विचारमें २८)—ईसापूर्व तक नहपान का होना सम्भव है।

(च) एक समय ऐसा आया, जब त्रिक्रम-केसरी=नहपान=शालिवाहन तीनों उज्जयिनी

---

27. पुराण-ग्रन्थोंमें विक्रमादित्यका शासनकाल २८—८ ईसापूर्वमें द्योतित पाते हैं। यथा—षडशीतिमितं राज्यं वर्षाणां तस्य भूपतेः। विक्रमादित्य पुत्रस्य ततो राज्यं प्रवर्तितम्। यहां भूपतिसे गन्धर्वसेन अभिप्रेत है। उसके ८६वें वर्षमें विक्रमादित्य-पुत्रका राज्य प्रवर्तित हुआ, सो, ९४—८६=८—ईसापूर्व तक गणना यथार्थ है। आश्चर्य है, राजतरंगिणीके लेखकने जिस युगमें 'शकारि' का स्मरण किया है (अर्थात् प्रतापादित्यका समय) वह १८—ईसापूर्व हे। (देखो, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ६८, श्रावण २०२०।

28. विक्रम-पुत्रका नाम उपलब्ध नहीं हुआ, हमने विक्रम पुत्र' ही रहने दिया है।

29. पुराण-ग्रन्थोंमें लिखा है: 'एतस्मिन्नन्तरे तत्र शालिवाहनभूपतिः विक्रमादित्य पौत्रस्य पितृराज्यं गृहीतवान्।' हमने विक्रम-पौत्रका राज्य १५० वर्ष माना है। विक्रम-पौत्रका नाम भी साम्प्रतं उपलब्ध नहीं है। हमने यही रहने दिया है। हम आगे चलकर सिद्ध करेंगे कि शालिवाहनने ३२—ईसवीमें उज्जयिनी हस्तगत कर ली। (देखो परिशिष्ट)।

के लिए संघर्ष-रत थे। परन्तु नहपानको सात-वाहनोंकी सहायतासे शालिवाहनने उखाड़[30] फेंका। और विक्रमकेसरीका रास्ता साफ हो गया। **यह तीसरा गण-स्थितिकाल था।**

(छ) अन्ततो गत्वा विक्रमने—जिसे पुराण-ग्रन्थोंमें विक्रमादित्य माना है—उषवदात्तको परास्त कर अपना निष्कण्टक राज्य बना लिया। **यह चतुर्थ गणस्थितिकाल था।**

(ज) तत्पश्चात् उज्जयिनीमें मालवोंने सतत राज्य किया। २८+३२=६०—सौर वर्ष तक।

निष्कर्ष यह कि उज्जयिनीमें सात गर्दभिल्लोंने १३६—वर्ष राज्य किया। इस राज्यावधि की पर-सीमा ६४ ईसापूर्व है और अवर-सीमा ३२—ईसवी है। इस राज्यके पूर्वार्द्धके ६६—वर्षोंमें शकों और मालवोंमें परस्पर उखाड़-पछाड़ लगी रही, कभी शकोंका पलड़ा भारी रहा और कभी मालवोंका। यह क्रम दो वार तो स्वयं गन्धर्वसेनके शासन-कालमें आया, तीसरा क्रम प्रथम विक्रम (केसरी) के समयमें और **चौथा क्रम द्वितीय विक्रम (आदित्य) के समयमें आया। यही कारण है कि विक्रमादित्यका स्थापित संवत् 'कृत-संवत्' कहलाया।** मालव-शासनका उत्तरार्द्ध ६० वर्ष सतत रहा और निरापद रहा।

स्पष्ट है, विक्रम-विक्रमके तादात्म्यके कारण विक्रमसंवत् और कृत-संवत् परस्पर-मिल-मिला गए और गन्धर्वसेनका शासन (गणस्थितिकाल) इतिहासके पृष्ठों पर धूमिल पड़ गया।

परिशिष्ट

महाभारत काल	कलिसंवत्	विक्रमसंवत्	कृतसंवत्	शालिवाहन	हर्षकाल	गुप्तसंवत्	ईसापूर्व
००[31]	......	......	......	......	......	......	३१४८ ई.पू.
४७	००[32]	......	......	......	......	......	३१०१ ,,
३०९०	३०४३	००[33]	......	......	......	....	५८ ई.पू.

30. इतः प्रतिष्ठानपुरे पार्थिवः शालिवाहनः।
बलेनापि संवृद्धः स रुरोध नरवाहनम्॥

31. हम निर्विकल्प रूपसे ३१४८—ईसापूर्वमें महाभारतका होना मानते हैं। देखो टिप्पणी ३६।

32. ३१०१—ईसापूर्वमें कलिसंवत्की मान्यता लोक-विश्रुत है।

33. विक्रम-संवत्के बारेमें यल्लयार्य लिखताहै—(क) बाणवेदनवचन्द्रवर्जिताः तेऽपि शूद्रकसमाः प्रकीर्तिताः, उसने फिर लिखा है—(ख) तेभ्यः विक्रमसमा भवन्ति वै नाग-नन्द-वियदिन्दुवर्जिताः। सो, १९४५+१०९८=३०४३—कलिसंवत्में विक्रम-संवत् चला। ५८—ईसापूर्व। खेद है, इस काल-गणनामें एक वर्षकी भूल उत्पन्न हो गई है।

३१२०	३०७३	३०	००[34]	......	......	......	२८	ई.पू.
३१८०	३१३३	९०	६०	००[35]	......	......	३२	ईसवी
३३८६	३३३९	२६६	२६ :	२०६	००[36]	......	२३८	,,
३४५५	३४०८	३६५	३३५	२७५	६९	००[37]	३०७	,,
३५१२	३४६५	४२२[38]	३९२	३३२	१२६	५७	३६४	ईसवी
३७३५	३६८८	६४६	६१६	५५६[39]	३४९	२८१	५८७	ईसवी
३७८७	३७४०[40]	६९८	६५८	६०८	४००	३३३	६३९	ईसवी

सिंहावलोकन

इस सारिणीको देखनेसे पता चलता है कि—

(१) पुलकेशीके शिलालेखसे दो बातें सिद्ध हुईं—महाभारत संवत्की स्थापना ३१४८—ईसापूर्वमें यथार्थ है, शालिवाहन शक संवत्की स्थापना भी सत्य पर आधृत है। दोनोंने अपना-अपना स्थान ग्रहण किया है। और यही शालिवत् संवत् रासोमें प्रयुक्त है।

(२) हरिस्वामीने शतपथ ब्राह्मणकी टीकामें जो कलिसंवत् दिया है, उस पर काफी खींच तान लगी रही। परन्तु इसे चरितार्थ कर दिया है अलबेरूनीने। जिस विक्रमके युगमें कलिसंवत्—३७४० था, उसी वर्ष कल्हण प्रतिपादित हर्षकालका संवत्—४०० था।

(३) हमारी गुप्तकालीन मान्यता भी अपना स्थान ग्रहण करती नजर आती है।

---

34. कृत-संवत् हमने २८-ईसापूर्व माना है। हम एतदर्थ सूत्रोंकी खोजमें हैं।

35. शालिवाहन संवत्की स्थापना। रासो-विवादयुगमें मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्याने 'आनन्द' अर्थात् ९० वर्षोंका व्यवधान रखकर जो स्थापना दी थी, उस पर विचार किया जाय।

36. कल्हण-प्रतिपादित हर्ष-विक्रमादित्यका समय। जैन-संदर्भोंमें इसका समय २१४—ईसवी माना है। हम दोनोंको प्रमाण मानते हैं।

37. सभी इतिहासकारोंने ३१९—ईसवीमें गुप्तकालकी स्थापना मानी है, हम इसे ३०७ ईसवीमें स्थापित मानते हैं। हम इसे सिद्ध करेंगे। देखो टिप्पणी सं० ३८।

38. (क) आईन अकबरीमें (सूबा उज्जयिनीका वर्णन) संवत् प्रवर्तक विक्रम और आदित्योंवार (चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य) का अन्तर ४२२—वर्षका है।
(ख) गुप्त-संवत्की स्थापना ३०७+चन्द्रगुप्त (प्र) ७+समुद्रगुप्त ५०=३६४ ई०

39. त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादितः। सप्ताब्दशतयुक्तेषु शतेष्वब्देषु पंचसु।
पंचाशत्सु कलौकाले षट्सु पंचशतासु च। सभासु समतीतासु शकानामपि भूभुजाम्॥
(क) ३०+३०००+१०७+५००=३७३५, [इन चारों अङ्कोंका योग ३६३७ बनता है —सम्पादक] (ख) ५०+६+५००=५५६. (५५६+३२=५८८ ईसवी)

40. (क) यदाब्दानां कलेर्जामुः सप्तत्रिंशतशतानि वै। चत्वारिंशत् समाश्चान्या ......
(ख) श्रीहर्ष और विक्रमादित्यके मध्य ४०० वर्षोंका अन्तर है।—अल्बेरूनी
३७४०—३१०१=६३९ ईसवी=२३८+४०१=६३९ ईसवी।

इन्द्रादि देवकृत भगवती स्तुतिका पद्यानुवाद

[लेखक :—श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा कविकलानिधि]

(गत नववर्षाङ्क वर्ष १६ संख्या १ से आगे)

सकल देवगणाः पितरस्तथा मुखमुखेन शिवे ! किल श्रद्धया ।
परमतृप्तिरहो भणितेन भोः ! दधति ते हृदये सदये स्वधा ॥ ८ ॥
स्वाहा स्वधा त्वमसि विश्वतले हि मातः, उच्चार्यसे त्वमत एव यदा पृथिव्याम् ।
आगत्य देवि मुखतः सकलं तदन्नम्, भुंक्ते स्वयं परम तृप्तिरसौ प्रयाति ॥९॥

सब देवता पितृगण शिवे मखमुखाद् बहुश्रद्धया, श्रवण कर जिस शब्दको बहु तृप्ति अपनी मानते । स्वाहा स्वधा हो आप ही जगद् जननि ! जगद्वासी हम सभी हैं जानते। स्वाहा स्वधाके रूपमें आहूत होकर यज्ञमें । हुत भुक् स्वयं हो आप ही यह बुद्धि होती विज्ञमें । ॥ ८—९ ॥

भगवती परमा प्रकृति शिवा, विगतदोष युतैर्मुनिभिः सदा ।
अमृततत्व परापर संज्ञया, जननि ! भोः सकलैः समुपास्यते ॥ १० ॥

परमा प्रकृति हो शिवे ! भवभावने जगदीश्वरी ।
अमृत तत्वा आप ही हो सिद्ध सेवित ईश्वरी ॥ १० ॥

जननी शब्दमयी किल ते तनूः त्वमसि वेदत्रयी भव भावने ।
परम दुःखहरा जगतां शिवे ! सकल लोक चराचर वृत्तिका ॥ ११ ॥

शब्द रूपा आप हो त्रयी वेदरूपा हो स्वयम् ।
दुःख हर्त्री हो जगत्की भववृत्तिसे धन्या वयम् ॥ ॥ ११ ॥

जननि वै विदिता भुवि मेधया, त्वमसि नौः भवसागरपारणे ॥
कमलजा किल कृष्णहृदिस्मृता, गिरिसुते ! शशिमौलि गृहे शिवा ॥ १२ ॥

मेधा तुम् ही साहित्यमें संसार सागर पोत हो ।
गौरी तुम्ही कैलासमें वैकुण्ठ सुखकी स्रोत हो ॥ ॥ १२ ॥

स्मितविभाभिरखण्ड शरत्कला, निधिकलाधिकलाधव कारिणम् ।
मुखमभीक्ष्यरुषा प्रहृतं कथम् ? मनसि चित्रमिदं महिषेण हि ॥ १३ ॥

राकेन्दु मुखस्मित देखकर आश्चर्य होता है महा ।
दुर्दान्त दैत्यमहिषने कैसे प्रहार किया अहा ॥ ॥ १३ ॥

प्रकुपितं मुखमेव विलोक्य हि, उदित चन्द्र समान छटायुतम् ।
नहि मृतो महिषः सहसा कथम्, कुपित कालकराल निदर्शनात् ॥ १४ ॥

क्रोधित मुखच्छवि देखकर सहसा हुआ क्यों मृत नहीं ।
देख क्रोधित कालको क्या जीव जी सकते कहीं ॥ ॥ १४ ॥ [क्रमशः]

एक आत्मकथ्य: पूर्वार्द्ध

आत्मा, ऐश्वर्य, प्रभावका प्रतीक ग्रह सूर्य (१)

[लेखक :—श्री बालकृष्ण इन्दोरिया]

महर्षि कल्याणेश्वर पूरे छः वर्षोंसे गायत्री महामंत्रके जपमें लगे हुए थे। ब्रह्मवेलामें ही गंगातटके तपश्चर्यास्थल पर नियमवद्ध रूपमें उपस्थित होकर महर्षि ब्रह्माण्डगोलकके नियन्ता सूर्यदेवकी पूजा-उपासनामें तल्लीन हो जाया करते थे। एकाएक प्रकाशपुञ्जमें महर्षिने देखा कि आद्यदेव स्वयं उपस्थित हैं और आशीर्वाद-अभयमुद्रामें मुस्करा रहे हैं। सूर्यदेव बोले—'महर्षिवर ! तुम ऐसी दुष्कर तपश्चर्यामें क्यों लगे हो ? कामनाका क्या प्रारूप है ?'

महर्षि कल्याणेश्वर दण्डवत् प्रणाम करते हुए बोले—'आद्यदेव ! अर्घ्य प्रस्तुत है। आप सर्वज्ञ होकर दाससे क्या पूछ रहे हैं ? मैं तो आपके स्वरूपकी जानकारी व दर्शनोंका इच्छुक था।'

सूर्यदेव बोले—'कल्याणे ! तुम मेरे परम-भक्त हो, तुम्हारी निष्काम तपश्चर्यासे मैं पूर्ण प्रसन्न हूँ, अतः अपने स्वरूपकी जानकारी कराने हेतु मैं अपनी 'आत्मकथा' के कुछ पृष्ठ सुनाता हूं······ध्यानपूर्वक सुनो—

'मैं अपने स्वरूपकी जानकारीके समस्त तथ्य कलियुगमें प्रचलित मानदण्डोंको मध्य नजर रखते हुए वाचन करूंगा, अतः भविष्य-द्रष्टाके रूपमें तुम्हें सर्व तथ्योंसे अवगत होना है, यह अत्यन्त गोपनीय रखना चाहिये।'

'मैं ब्रह्माण्ड गोलकका अधिपति हूं, अतः पृथ्वीका सौर्यमण्डल मेरे द्वारा ही संचालित व नियंत्रित है। मैं इस मण्डलके केन्द्रमें स्थित रहकर समस्त ग्रहलोकोंका संचालन करता हूं। मेरे अवतरणके समय ब्रह्मचक्र स्वयं विशिष्ट रूपमें गतिशील था। समस्त ग्रह अपनी अपरि-पक्व स्थितिमें यत्रतत्र बिखरे हुए थे। सप्तमी तिथिका राशिचक्र गतिशील था और पंचम राशि लग्नके रूपमें उदित थी। मेरे धनभाव में स्वगृही बुध मूलत्रिकोणी होकर उच्चस्थ था, जो दीर्घातिदीर्घ आयु प्रदान कर रहा था। मेरे पराक्रम पर स्वगृही शुक्र स्थित होकर मेरे सौभाग्यको उद्‌बोधन दे रहा था। मंगल मेरे पराक्रमको भाग्य भावसे पुष्ट कर रहा था। मेरे पंचमभावमें गुरु स्वगृही था, किन्तु केतु भी इसी भावमें होकर पाप-सन्तानका द्योतक था। षष्ठभावमें स्वगृही शनि दीर्घायुकारक होकर व्ययको संयित करके मेरे पराक्रमको उत्प्रेरित कर रहा था। भाग्यमें स्वगृही मंगलकी स्थिति व्ययको संतुलित करके पराक्रम बढ़ाकर मेरे सुखभावमें बल प्रदान कर रही थी। राज्यभाव में उच्चस्थ चन्द्रमा मेरे सुखवृद्धिका कारण बन रहा था। मेरे भाग्य पर गुरुका पवित्र प्रभाव था और आय पर गुरु प्रभावी था। मेरे तनु भावको गुरु पवित्रतम बनाकर प्रभाव वृद्धिका कारण बन गया था।'

'मैं दक्ष प्रजापतिकी पुत्री अदिति और महर्षि-कश्यपजीका लाडला हूँ। दिति मेरी मौसी है। मेरा नाम आदित्य है। हमारे वंश की यह परम्परा रही है कि एकाधिक पत्नियों

का संरक्षण पालन करें। मेरे दिति-अदिति दो मातायें हैं, मुझे भी दो पत्नियां वरण करनी पड़ी है और संज्ञा व छाया दोनों मेरी पत्नियां हैं। पुत्रका परिचय कराते मुझे संकोच होता है, किन्तु मेरा इसमें क्या दोष है? महानतम विभूतियोंने पुत्र-कलत्र-सुखको कब पाया है? संसारके सब सुख केन्द्रित होकर सर्वांगीण रूपमें किसी भी व्यक्तिको नहीं मिले हैं, न मिलेंगे। यह ध्रुव सत्य मैं तुम्हें प्रकट करता हूं। शनि जैसा दरिद्री पुत्र पाकर मैं यहीं सन्तोष कर लेता हूँ। मैं सप्त अश्वारूढ़ी हूँ; अरुण मेरा सारथि है। उषा-सन्ध्या मेरी प्रेयसी हैं।'

'मेरे जैसे अनेकों सूर्य ब्रह्माण्डमें विद्यमान हैं, किन्तु मैं आपकी पृथ्वीके सन्निकट क्षेत्रमें होनेसे नियंत्रणका समस्त कार्य संभाले हुए हूँ। मैं स्थिर होकर भी स्वयं ही गतिमान् हूँ और समस्त ग्रहमालाको एक सूत्रमें नियमबद्धगतिसे अपने चारों ओर गतिशील रखते हुए एक-एक बार अपने तेजसे अस्तंगत कर देता हूं। मैं प्रकाशका दाता हूं जो उष्णता व आलोकको प्रसारित करता है। मैं तेजका पुञ्ज हूँ जोकि इस सौर्यमण्डलके स्थावर जंगम चराचरको जीवन देकर सृष्टि बनाता है। इसी कारणसे वेदोंमें मुझे परब्रह्म कहा गया है। मैं अपरिमित शक्तिका अक्षय स्रोत हूं।'

'जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्तिसूत्र'के अनुसार मेरे परिभ्रमणके १८४ मण्डल तथा ४४८२० योजन का अन्तर मेरुपर्वतसे मेरे आभ्यन्तरमण्डल तक का है। मैं हाईड्रोजन गैससे निर्मित व प्रकाशित हूँ। आपकी पृथ्वी मेरेसे लगभग सवा नौ करोड़ मील दूर है। मैं पृथ्वीसे तेरह लाख गुणा अधिक बड़ा हूं। मेरा व्यास ८६६,५०० मील है जोकि पृथ्वीसे १०९½ गुणा बड़ा है। मेरा प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचनेमें लगभग सवा आठ मिनट का समय लेता है अतः आप लोग मेरी जो स्थिथि देखते हो वह सवा आठ मिनट पूर्वकी होती है। भचक्रके परिभ्रमणमें मुझे तीन सौ पैंसठ दिन छः घंटे ९ मिनटका समय लगता है। अन्य सभी ग्रह व नक्षत्र मेरेसे ही प्रकाशित होते हैं। मैं सर्वदा मार्गी गतिमें गतिशील हूँ। मैं पूर्वमें उदय व पश्चिमें अस्त होता हूँ। भचक्र की एक पूरी परिक्रमाको आप लोग एक वर्ष कहते हैं। मेरी एक राशिकी गतिका नाम आपने महीना दे रखा है। मैं मंगलकी राशि मेषमें उच्च एवम् शुक्रकी तुला राशिमें नीच होता हूँ। मेरी स्वराशि सिंह है। मेरी उच्च स्थितिमें मेरा पुत्र शनि नीच कहा जाता है, मेरी नीच राशिमें वह उच्च होता है। इस प्रकार मैं शनिसे एवम् शनि मेरेसे एकदम प्रतिरोधी है। मेरे दीप्तांश १५ हैं। आप लोगों ने मुझे सप्ताहका प्रथम दिवस दिया है, जो मेरे नामसे सम्बोधित है। सृष्टिका संस्थापन दिवस मानते हुए आप सभी इस दिन अवकाश मनाते हैं। मेरे ही कारण अमावस्या व पूर्णिमा तिथियां होती हैं। मैं अपने सन्निकट ग्रहोंको अस्त करके प्रभावशून्य करता हूं। प्रतिवर्ष मैं ऐसा प्रभाव कमसे कम एकबार प्रतिग्रहको अवश्य देता हूँ। इस मल्लयुद्धमें जब भी मैं राहु केतुके प्रभावमें आ जाता हूँ तो आप लोग मेरे खण्डित पराक्रमको सूर्यग्रहणके रूपमें देखते हैं। ऐसा अत्यल्पकाल सृष्टिको भयकारी होता है।'

'मैं एकके अंक पर पूर्ण प्रभावी हूं, अतः जनवरी माह एवं १-१०-१९-२८ तारीखों पर मेरा प्रभाव रहता है। मैं लग्नसे सप्तम भाव तक

बली और मकरराशिसे छः राशि तक चेष्टा बली होता हूँ। मैं सर्वात्ना, ब्रह्मस्वरूप और सर्वशक्तिमान् हूँ, अतः मेरा महत्व आप लोग द्वादश आदित्योंके रूपमें भलीभांति जानते हैं। मेरी किरणोंमें जीवनशक्ति पृथ्वी पर प्रकट रूपमें दृष्टव्य है। मैं अपने तेजसे मेघ, वायु बन कर पृथ्वी पर वर्षा करता हूँ, जो आप लोगों को सर्वांगीण धन-धान्यकी दाता है। देवगुरु मुझे मंत्रणा देता है, बुध मेरी योजनाकी रूपरेखा तैयार करता है, शुक्र सृजनको स्वरूप प्रदान करता है, चन्द्रमा क्षणपति होकर उचित समयको सर्वत्र समन्वय करता है। मंगल मेरी आज्ञानुसार कार्यको घटित करता है। इन्हीं कारणोंसे मैं विश्वमें पितृ रूपमें पूजा जाता हूं। वेदमाता गायत्रीका मैं ही अधिष्ठाता देव हूं, अतः मुझे विश्वपालक, विश्वसंचालक आदि सर्वनाम मिले हैं। मैं इस ग्रहमण्डलका सर्व-शक्तिमान् अधिनायक हूं। ब्राह्मणोंमें ब्रह्मशक्ति मैं ही हूँ। क्षत्रियोंको पराक्रम, वैश्योंको वणिज्-साहस, शूद्रोंको श्रमशक्ति मैं ही देता हूं।'

'मेरा स्वक्षेत्र सिंह है, जो पांचवें नम्बरकी राशि है, और १२०° से १५०° तकका क्षेत्र है। यह स्वातन्त्र्यप्रेम, शौर्य, प्रताप, उदारता एवं आत्मविश्वासकी प्रतीक है। यह पुरुष स्वरूप, मूलसंज्ञक, क्रूर, अग्नितत्व, क्षत्रिय जाति, विषम, पित्तप्रकृत्ति, वनचारी और शीर्षोदयी है। मेरा मूल निवास पाण्डुदेश है। मैं ग्रीष्म ऋतुका कारक हूँ। । काल-पुरुषकी मैं आत्मा हूँ। पूर्वदिशाका स्वामी, अग्नि समान लालवर्ण मेरे गुण हैं। मैं समदृष्टि वाला हूँ, अतः अपनी स्थितिसे सप्तम भाव पर मेरी पूर्ण दृष्टि होती है। मैं बिल्वपत्रकी जड़ी पर प्रभावी हूं। चंद्र-मंगल गुरु मेरे मित्र हैं, एवं शुक्र शनिको मैं शत्रु मानता हूं। मैं लाभभाव (एकादशभाव) का कारक हूँ। कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उतराषाढ़ा मेरे नक्षत्र हैं। विंशोत्तरी दशा चक्रमें मुझे छः वर्षोंका समय मिलता है। मुझे 'म-ट' अक्षरसे प्रारंभ होने वाले नामके जातक सर्वदा प्रिय लगते हैं। नेरेसे प्रभावित देश इटली, फ्रांस, रूमानिया, सिसली, ब्रिस्टल, दमिस्क, शिकागो, अफगानिस्तान, हिमाचल-प्रदेश आदि हैं। मुझे विभिन्न नामोंका सम्बोधन मिला है—आदित्य, रवि, भानु, भास्कर, हेलि, दीप्तरश्मि, सविता, मार्तण्ड, प्रभा-कर, दिनकर, अर्क, तपन, अहस्कर, भानुमान्. अरुण आदि। मेरा प्रभाव मस्तक व मुख पर होता है। सवत्सामाय मेरी प्रतिबिम्बी है। मेरे इस प्रतीक चिन्हको ही भारतकी राजनैतिक पार्टी कांग्रेसने अपना चुनाव चिन्ह स्वीकारा है। इसी प्रभावसे विघटित पार्टी भी सत्तारूढ़ होनेमें सफलता प्राप्त कर सकी थी। मैं शासक हूं अतः शासक मुझे सदैव प्यारे लगते हैं।'

'समस्त धान्य मेरा अन्न, ताम्र-सोना मेरी धातु, माणक मेरा रत्न, रक्तचन्दन, रक्त-पुष्प, कमलदल, सरसों बीज. गोला-नारियल, बादाम-मूंगफली पर मेरा प्रभाव है। रक्तवर्णी गौ मेरी ही प्रतिनिधि हैं। मैं बाईससे चौबीस वर्षकी आयुमें अपना पूर्ण प्रभाव प्रकट करता हूं। मैं लग्न धर्म-कर्म एवम् लाभ भावों पर शुभफल दाता होता हूं और उतरायणमें चेष्टा बली होता हूँ। मेरे द्वारा ज्योतिषी लोग पिता की स्थिति एवं सुख सम्पन्नताका अनुमान लगा कर फलितका आभास पाते हैं। मैं आत्माका कारक होनेके कारण मेरी स्थितिसे चन्द्रकुण्डली की तरहसे सूर्यकुण्डलीका अलग निर्माण करके

जीवके सुखदुःखोंका मूल्यांकन किया जाता है। मैं समस्त ग्रहोंके दोषोंको हरण करनेकी क्षमता रखता हूँ। मैं व्यक्तित्व, निजी आचरण एवं बौद्धिक विकासका प्रतिनिधि हूँ। ब्रह्म-विद्याका पूर्ण प्रतीक होनेके कारण ब्राह्मण लोग तेजस् प्राप्तिके लिये मेरे मत्रोंका जप करके मोक्ष प्राप्त करनेमें सफल होते हैं। मेरे तेजस्के साक्षात् दर्शनके लिये ज्ञानयोग, राज योग, हठयोग, भक्तियोग आदि मार्गोंको अवलम्ब बनाते हैं। मैं पक्षी सदृश स्वरूपका हूँ। मनका प्रतीक चन्द्र है और हृदयस्थ परमात्मा का पूर्ण प्रतीक मैं माना जाता हूं अतः मुझे मनः सूचिकारक कहा गया है। मैं सृष्टिका निर्माण कारक हूँ, अतः मुझे जगत्‌पिता, सृष्टि-पति कहा जाता है। मैं उदर, रक्त, जिगर, दिल, आत्मा पर पूर्ण प्रभावी हूं। शनिके द्वारा मैं पराजित हूँ अतः मेरा निवास स्थान देवगृह एवं मन्दिर है, जहां मैं सुरक्षित व प्रतिभा शक्ति सम्पन्न होता हूं।'

'मेरे जातक उदार, हृदयमें इन्सानियतकी भावानासे परिपूर्ण होते हैं। ये कम बोलने वाले, शत्रुसेवी, खुले हृदयसे व्यवहार करने वाले, भव्य, निर्भय, सन्मार्ग दर्शक, पवित्र आत्मा वाले होते हैं। जो जातक वृश्चिक, धनुः लग्न वाले होते हैं, इन्हें मैं अपना विशेष बल देता हूं। मैं उन्हें सात्विक, दीर्घतपस्वी, कोपी, नियमित और धैर्यशाली बनाता हूं। मैं नेत्र वैद्यक, शरीरशास्त्र, हेलियम रेडियो, राज्य-सत्ता, असेम्बली, सेक्रेटरिएट, गवर्नर आदि पर पूर्ण प्रभावी हूँ। पूर्वपुण्य, बड़े भाईका सुख, सोना, हस्तकला, जवाहरातके कार्य, विद्युत्‌के विस्तृत धन्धे मेरे द्वारा प्रभावित रहते हैं।'

'मैं स्वगृही होकर धनवान्, अभिमानी, विजेता, पिता एवं राज्यप्रिय, स्वतः सिद्ध अधिकारी बनाता हूं। मैं उच्चका होकर यशस्वी, ज्ञानवान्, आकर्षक, प्रभावशाली व्यक्तित्वका दाता, साहित्यकार, काव्यकार, चित्रकार बनाकर सफलता देता हूं। नीचका होने पर मैं अपव्ययी, अपच, सिरदर्द, नेत्र विकार, अग्निमांद्य रोगी, ज्वरवृद्धि, क्षय अतिसार रोगी, ऋणग्रस्त बनाकर अशुभ फल देता हूं। मित्र क्षेत्री होकर मैं अनुकूल फल देता हूँ, किन्तु शत्रुकी संगति, शत्रुराशि एव दृष्टिको पाकर मैं प्रतिकूल फलोंका दाता हो जाता हूँ। गुरु द्वारा दृष्ट होकर मैं चिकित्सा क्षेत्रमें यश दिलाता हूँ।'

'मैं अशुभ होने पर अग्निभय, अग्निरोग, ज्वर, राजभय, देवकष्ट, अतिसार, नेत्र कष्ट देता हूँ। मेरेसे प्रभावित जातक व्यक्तित्वके धनी होकर प्रसिद्धि पाते हैं। दशरथनन्दन राम मेरा पूर्ण अवतार था। कलियुगके विश्वप्रसिद्ध व्यक्तियोंमें मेरेसे प्रभावित व्यक्ति निम्नांकित होंगे—सिकन्दर महान्, श्रीमतीं ऐनी बिसेण्ट, राष्ट्रपति विल्सन, बिस्मार्क, दांते, गोथे, मजरूह सुल्तानपुरी, डा० सम्पूर्णानन्द, अद्वितीय फिलमतारिका मीनाकुमारी, भारतकोकिला लतामंगेशकर आदि आदि।'

'मुझे प्रसन्न करनेके लिये मेरे भक्तोंने विभिन्न प्रयास किये हैं। एक भक्त तो प्रति रविवारको मेरा व्रत रखकर एक समय भोजन करता था और उस दिन नमक न खाता था। इस दिन मेरा भक्त माणकयुक्त स्वर्ण अंगूठीको धारण करके अगरबत्ती जलाकर दत्तचित्त भावनासे शांतिपूर्वक 'आदित्य हृदय' कवचका

पृच्छकको प्रश्न फल बतानेकी सरल विधि

[लेखक :—श्री राधाकृष्ण शर्मा ज्यो० एम.ए.बी.एड्]

इस भौतिक जीवनमें हर व्यक्ति असंतुष्ट है, दुःखी है। कोई अर्थका भूखा है, तो कोई गृहस्थ जीवनसे पीड़ित है, किसीको नौकरी नहीं मिलती तो किसीको तरक्की। बात इतनी कि हम-तुम मैं-आप, यह-वह सभी दुःखी हैं अतः आए दिन यहां-वहां ज्योतिष-वेत्ताओंके यहां चक्कर निकालते हैं। लक्ष्मी आपको व हमको तो प्राप्त हो या न हो परंतु ज्योतिषी पर लक्ष्मी अवश्य ही तुष्टमान होती है। ऐसी अवस्थामें मैं एक सरल-सीधा व स्पष्ट राजमार्ग पाठकोंके समक्ष उजागर करना चाहूँगा और वह है प्रश्न !

(१) उपयोगी प्रश्न

पृच्छकसे किसी फलका नाम पूछें तथा कोई एक संख्या पूछनेके उपरान्त अंक संख्याको द्विगुण कर फल एवं नामाक्षरोंकी संख्या जोड़कर उस पूर्ण संख्यामें १३ योग कर ९ से विभाजित करें। यदि शेष १ एक रहे तो धन वृद्धि होती है। २ शेष रहने पर धनका नाश, ३ शेष रहने पर आरोग्य लाभ, ४ में व्याधि, ५ में स्त्री लाभ, तथा ६ शेष रहने पर बंधु नाश, ७ शेष रहने पर कार्यकी सिद्धि, ८ में मरण एवं ० शेष रहने पर राज्य द्वारा मान होता है।

(२) कार्य सिद्धि असिद्धिका प्रश्न

पृच्छकका मुंह जिस दिशामें हो उस दिशाकी अंक संख्या, प्रहर संख्या, वार संख्या, नक्षत्र संख्या इन्हें जोड़कर योग-फलमें ८ का भाग देना चाहिये। १।५ शेष रहे तो कार्यकी सिद्धि अविलंब होती है। ६।४ शेष रहे तो कार्य सिद्धि तीन दिनमें, ३।७ शेष रहे तो कार्य बिलंबसे सिद्ध होता है। १।० शेष में कार्य सिद्धि नहीं होती।

१—दिशा पूर्व १. पश्चिम २. उत्तर ३. दक्षिण ४।

२—प्रहर संख्या प्रातःकाल सूर्योदयसे ३-३ घण्टेका १ प्रहर लें।

पाठ करते हुए निम्न मंत्रोंका जप करता था—

'प्रत्यक्ष देवं विशदं सहस्रमरीचिभिः
शोभित भूमिदेशम्।
सप्ताश्वगं सस्त्रज (?) हस्तमाद्यं (?)
देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे*
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।
॥ ॐ ह्रीं सूर्याय नमः ॥

इन प्रयत्नोंसे मैं अति प्रसन्न होकर उस भक्तको अनुकूल फलोंका दाता बना।'

इतना कहते हुए सूर्यदेव अन्तर्धान हो गये। महर्षि कल्याणेश्वर अपने गायत्रीमंत्रके जपमें पुनः ध्यानस्थ थे और सारावली ग्रंथकी परिकल्पनामें वे तल्लीन थे।

---

* इस श्लोकमें कुछ अशुद्धियां हैं। लेखक यदि ऐसे स्थलों पर मूलग्रन्थ-पुस्तक-का नाम लिख दिया करें तो उत्तम होगा। किसी अप्रकाशित ग्रन्थसे लिया हो तो उसकी प्रतिलिपिमें अशुद्धि सम्भव है। मंत्रोंका शुद्ध रूपमें होना परमावश्यक हैं। —सम्पादक

३—वार संख्या रवि १, सोम २, मंगल-३, बुध ४, गुरु ५, शुक्र ६, शनि ७।

४—नक्षत्र संख्या–अश्विनी १, भरणी २, कृत्तिका ३··············आदि।

(३) पृच्छकसे १ से १०८ अंकके मध्य के किसी १ संख्याको मनमें विचारनेका कहें। इस संख्यामें १२ का भाग देने पर १।७।९ शेष रहे तो कार्य सिद्धि विलंबसे होती है। ८।४।१० ५ शेषमें कार्य नाश एवं २।६।११।० शेषमें कार्य शीघ्र ही सिद्धि देता है।

(४) पृच्छकसे किसी फूलका नाम पूछ कर उसकी स्वर संख्याको व्यञ्जन संख्यासे गुणा कर, गुणन फलमें पृच्छकके नामाक्षरोंकी संख्या जोड़कर योगफलमें ९ का भाग दें। यदि शेष १ रहे तो शीघ्र कार्य सिद्धि, २।५।० शेष रहे तो विलम्बसे, ४।६।८ शेष रहे तो कार्यका नाश होता है। तथा ३।७ शेष रहे तो कार्य गति मंदतासे पूर्ण होता है।

(५) पृच्छकके नामाक्षरोंको २ से गुणा करके गुणनफलमें ७ जोड़ दें। इस योग फलमें ३ का भाग दें, सम शेषमें कार्य नाश तथा विषम शेषमें कार्य सिद्धि अवश्य होती है।

(६) पृच्छकसे १ से ९ तककी कोई संख्या पूछी जानी चाहिए। इस संख्याको नामाक्षर संख्यासे गुणा कर लें, गुणन फलमें तिथि संख्या, प्रहर संख्या जोड़ दें। (तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदासे करें) वार संख्या जोड़ कर ८ से भाजित करें ०।७।१ शेष रहने पर कार्यमें असफलता प्राप्त होती है। (७।१ मतान्तरसे देरसे सिद्धि) २।६।४ में सिद्धि तथा ३।५ शेष रहने पर कार्य देरसे सिद्ध होता है।

(७) पृच्छक यदि ऊपरको देखता हुआ प्रश्न करे तो कार्य सिद्धि तथा भूमिकी ओर नीचे देखते हुए प्रश्न करे तो कार्यमें असफलता प्राप्त होती है। शरीरको खुजलाते हुए प्रश्न करे तो कार्य देरसे सिद्ध होता है। जमीन खरोंचता हुआ प्रश्न करे तो कार्यमें असफलता होती है तथा इधर-उधर देखते हुए प्रश्न करे तो कार्यमें सफलता देरसे मिलती है।

(८) लग्नानुसार मेष-मिथुन-कन्या व मीन में प्रश्न किया गया सिद्धि देता है। तुला-कर्क-सिंह व वृष लग्नमें प्रश्न किया गया हो तो कार्य विलंबसे होता है। तथा वृश्चिक-धनु-मकर व कुंभमें प्रश्न किया गया हो तो प्रायः असिद्धि प्राप्त होती है।

(९) लाभालाभ प्रश्न

पृच्छकसे १ से ८१ के मध्य कोई १ संख्या पूछे या लिखवायें। इस संख्याको २ से गुणा कर नामके अक्षरोंको जोड़ दें। इस योग फल में ३ का भाग दें। यदि २ शेष रहे तो लाभ, १ शेष रहे तो अल्प लाभ कष्ट अधिक और '०' शून्य शेषमें हानि समझनी चाहिये।

(१०) पृच्छकसे किसी नदीका नाम पूछें, यदि नदीके नामके आद्य अक्षरमें अ, इ, ए, ओ मात्राएं हों तो बहुत लाभ। आ, ई, ऐ मात्राएं हों तो अल्प लाभ तथा उ, ऊ, अं, अः ये मात्रायें हों तो हानि समझनी चाहिये।

(११) पृच्छकके नामाक्षरकी मात्राओंको नामाक्षरके व्यञ्जनोंसे गुणा कर २ का भाग देना चाहिए। १ में लाभ व शून्यमें हानि माननी चाहिये।

(१२) पृच्छकके प्रश्नाक्षरोंसे आलि-ङ्गितादि संज्ञाओंमें जिस संज्ञाकी मात्राएं

अधिक हो, उन्हें ३ भिन्न भिन्न स्थानोंमें रख कर एक जगह ८ से, दूसरी जगह १४ से तथा तीसरी जगह २४ से गुणा कर तीनों गुणनफल राशियोंमें ७ का भाग देना चाहिये। यदि तीनों स्थानोंमें सम शेष रहे तो अपरिमित लाभ, २ स्थानोंमें समशेष व १ स्थानमें विषभ शेष बचे तो साधारण लाभ तथा १ स्थानमें सम शेष तथा २ स्थानोंमें विषम शेष बचे तो लाभ अति अल्प होता है। तानों स्थानों पर विषम रहने पर निश्चय ही हानि जानें।

(१३) चोरी गयो वस्तु संबंधी प्रश्न

पृच्छक जिस दिन प्रश्न पूछने आया हो उस दिनकी संख्या, वार संख्या, नक्षत्र संख्या तथा प्रश्न लग्नकी संख्यका योग कर लें। योगफलमें ३ जोड़कर ५ का भाग दें, यदि १ शेष रहे तो चोरी गयी वस्तु पृथ्वीमें, २ बचे तो जलमें, ३ बचे तो आकाशमें अर्थात् कहीं ऊपर रखी हुई, ४ बचे तो राज्यमें (याने किसी राज्य कर्मचारीने ली) ५ रहे तो ऊबड़-खाबड़ जमीनमें नीचे खोदकर रखी हुई कहें।

(१४) स्थिर-वृष-सिह-वृश्चिक-कुम्भ हो तो चोरी गयी वस्तु घरके समीप, चर कर्क मेष-तुला मकर हो तो वस्तु घरसे बाहर-दूर-किसी अन्य व्यक्तिके पास, द्विस्वभाव मिथुन-कन्या-धनु-मीन लग्न हो तो सामान्य परिचित नौकर दासी-दास आदि चोर होता है। यदि लग्नमें चंद्रमा हो तो चोरी गई वस्तु पूर्व दिशा में, १०वें चंद्रमा हो तो दक्षिण दिशामें, ७वें स्थानमें चंद्रमा हो तो पश्चिम दिशामें और चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा हो तो खोयी वस्तु या चोरका निवास स्थान उत्तर दिशामें जानना चाहिए। लग्न पर सूर्य व चंद्रमा दोनोंकी दृष्टि हो तो चोर अपने ही घरका होता है।

(१५) पृच्छककी मेष लग्न राशि हो तो ब्राह्मण चोर वृष हो तो क्षत्रिय चोर, मिथुन हो तो वैश्य चोर तथा कर्क हो तो शूद्र चोर होता है। [मेषादि राशिके वर्ण लेखकके मत से भिन्न हैं। मेष राशिका क्षत्रिय वर्ण है, ब्राह्मण वर्ण यीन कर्क वृश्चिक राशियोंका है —सम्पादक] सिंह हो तो अन्त्यज चोर, कन्या हो तो स्त्री चोर, तुला हो तो पुत्र, भाई अथवा मित्र चोर, वृश्चिक हो तो सेवक चोर, धनु हो तो भाई अथवा स्त्री चोर, मकर हो तो वैश्य चोर, कुम्भ हो तो चूहा चोर और मीन लग्न राशि हो तो पृथ्वीके नीचे गयी चोरी की वस्तु समझनी चाहिए। चर लग्न मेष-कर्क-तुला-मकर हो तो चोरी गई वस्तु किसी अन्य स्थान पर, स्थिर वृष, सिंह, वृश्चिक-कुम्भ हो तो उसी स्थान पर चोरी गई वस्तु और द्वि-स्वभाव मिथुन-कन्या-धनु-मीन हों तो घरके आस-पास बाहर कहीं चोरी गई वस्तु समझी जाय। मेष-कर्क-तुला और मकर लग्न राशियों के होने पर चोरका नाम दो अक्षरका, वृष, सिंह, वृश्चिक कुम्भ राशियोंके होने पर चोरका नाम चार अक्षरोंका एवं मिथुन, कन्या, धनु, मीन-लग्न राशियोंके होने पर चोरका नाम तीन अक्षरोंका होता है।

(१६) अंध संज्ञक नक्षत्रोंमें वस्तु चोरी हुई हो तो शीघ्र मिलती है। मंदलोचन संज्ञक नक्षत्रोंमें चोरी गई वस्तु प्रयत्न करनेसे मिलती है। मध्यलोचन संज्ञक नक्षत्रोंमें चोरी गई या खोई हुई वस्तुका पता बहुत दिनोंमें लगता है। सुलोचन संज्ञक नक्षत्रोंमें चोरी गई वस्तु कभी नहीं मिलती। अंध नक्षत्रोंमें चोरी गयी या खोयी हुई वस्तु पूर्व दिशामें, कालसंज्ञक नक्षत्रों में दक्षिण दिशामें, चिपट संज्ञक नक्षत्रोंमें

पश्चिम दिशामें एवं सुलोचन संज्ञक नक्षत्रोंमें चोरी गयी वस्तु उत्तर दिशामें होती है। मघा पू० फाल्गुनी उ० फाल्गुनी नक्षत्रोंमें खोयी वस्तु घरके भीतर, हस्त, चित्रा स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उ०षाढ़ा, श्रवण व धनिष्ठा नक्षत्रोंमें खोयी वस्तु घरसे दूर ४।७।१०।२५।३०।४५।१७।२१। ३४।४३।२३ कोश की दूरी पर, शतभिषा, पू० भाद्रपद, उ०भा० रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रोंमें खोयी वस्तु घरमें या घरके आसपास ५० गजकी दूरी पर एवं कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और अश्लेषा नक्षत्रोंमें खोयी वस्तु बहुत दूर चली जाती है तथा कभी नहीं मिलती।

अन्ध-मन्दलोचनादि नक्षत्र संज्ञा बोधक चक्र

रो.	पुष्य.	उफा.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	अन्धलोचन
म.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	मंदलोच या चिपट लोचन
आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि	पूभा.	भ.	मध्यलोचन या काण लोचन
पुन.	पूफा	स्वा.	मू.	श्र.	उभा.	कृ	सुलोचन

यदि प्रश्नकर्ता कपडोंके भीतर हाथ छिपा कर प्रश्न करे तो घरका ही चोर और हाथ बाहर कर प्रश्न करे तो बाहरके व्यक्तिको चोर समझना चाहिये। चोरका स्वरूप, आयु-कद आदि अन्य बातें लग्नेशसे ज्ञात करें।

शकुनमें नारियलका महत्व

[लेखक :—श्री मदनमोहन जैन "पवि" ज्योतिष-मनीषी]

गुड़, दही, नारियल, नमक और चावलका शकुनमें महत्व है। नारियलका महत्व सर्वाधिक है। नारियलका भीतरी भाग गिरी खानेके काम आती है। विविध प्रकारके मिष्ठान्नोंमें भी इसका प्रयोग होता है। यात्रा प्रस्थान कालमें, विवाह काल, यज्ञ, अनुष्ठान, पूजा पाठ सबमें नारियल सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्यमें भी नारियलोंका शकुनके अवसरों पर उल्लेख मिलता है। "वीरां बाकी नीसरे राखी रो नारेल" अर्थात् हे वीरों! तुम्हारा रक्षाबन्धनका नारियल अवशेष है। रक्षा-बन्धन भ्राता भागिनीका त्योहार है। इस पर्व पर राखीकी पूजा करनेसे पूर्व भी नारियल फोड़ कर बांटा जाता है। धूप भी दी जाती है। "बहु जोयो नारेल, बलवांनु बलिहार।" जब सती प्रथा थी तब पतिके साथ सती होनेके लिये स्त्रियां नारियल अपने हाथमें लेती थी। फिर पतिके साथ जीवित जलती थी। घरके विस्तृत आंगनमें भी नारियलका वृक्ष लगाया जाता था। "आंगन तरु नारेल" क्षत्रिय जातिमें पुत्र के सिरहाने भी नारियल रक्खा जाता था। "ढोला मारु" के दोहोंमें मारवणीके स्तनोंका वर्णन करते हुये कुचों (स्तनों) को श्रीफलकी उपमा दी है। श्रीफल नामसे स्पष्ट है कि लक्ष्मीजीका फल अर्थात् सर्व सिद्धिदायक है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों कर्मोंमें हितकारी है। बालक जन्मता है तो श्रीफल बांटा जाता है। मानव मरता है तो नारियल शवके साथ बांधकर मरघट (श्मशान) में ले जाया जाता है। नारियलका जीवनमें अत्यधिक महत्व है। जन्मसे मरण काल तक नारियलका अभिन्न सम्बन्ध है। यह भारतके तटीय प्रदेशों में अत्यधिक मात्रामें पाया जाता है।

अङ्क विद्या और उसका रहस्य

[लेखक :—श्री राधाकृष्ण शर्मा]

इस चलाचल विश्वमें जो कुछ द्रष्टव्य हैं उनके स्वरूप भिन्न-भिन्न हैं। विभिन्न रंग इन्द्र-धनुषमें दिखाई देते हैं। लाल और पीला मिलकर नारंगीं रंग बन जाता है। पीला और नीला मिलकर हरा। इसी प्रकार अगणित रंग बनते हैं, परन्तु मूल रूपमें तो सात ही रंग हैं और इनके मूलमें भी एक ही रंग है और वह है—सफेद। यों कह सकते हैं, रंग रहित शुद्ध-स्वच्छ प्रकाश। विज्ञानमें सूर्यके प्रकाशको प्रिज्ममें सात रंगोंके रूपमें देख सकते हैं। साधारणतया सूर्यका प्रकाश उज्ज्वल रंग रहित है।

इसी प्रकार संसारमें हमें जो कुछ दिखाई देता है उसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तत्व हैं। इनमें भी तत्वोंका सम्मिश्रण भिन्न-भिन्न है। किसीमें एक तत्व अधिक है तो दूसरेमें कम। परन्तु आश्चर्य है समस्त विश्व पांच तत्वोंसे निर्मित है। ये पांचों तत्व आकाश से उत्पन्न हुए हैं, आकाशसे वायु, वायुसे अग्नि, अग्निसे जल, जलसे पृथ्वी। पृथ्वीका गुण 'गन्ध'। जलका 'रस'। अग्निका 'तेज'। वायुका 'स्पर्श' और आकाशका गुण 'शब्द' है। विश्वके समस्त पदार्थोंका मूल गुण 'शब्द' है। शब्दको 'शब्द ब्रह्म' अर्थात् परम प्रभु परमेश्वरका प्रतीक माना गया है।

शब्द एक नहीं अनेक हैं, और उनके गुण व प्रभाव भी भिन्न भिन्न हैं। इसी शब्दको मापनेके लिए अंक या संख्या उचित है, सार्थक है। कोई शब्द ७००० बार आवृत्त होने पर पूर्णताको प्राप्त होता है तो कोई १७००० बार आवृत्त होनेसे। हमारे ऋषि-मुनी व महर्षि इसके महत्वसे परिचित थे, अभिज्ञ थे। इसी कारणसे भिन्न-भिन्न ग्रहोंके मन्त्र जापकी संख्या भी भिन्न-भिन्न निश्चित की गई थी। उदाहरणार्थ सूर्यका जप ७०००, चन्द्रमाका ११०००, मंगलका १००००, बुधका ९०००, गुरुका १९०००, शुक्रका १६०००, शनिका २३०००, राहुका १८००० तथा केतुका जप १७००० निर्धारित था। किसी देवताके मन्त्रमें २२ अक्षर तो किसीमें ३६। शब्द और संख्या का शुद्ध वैज्ञानिक सम्बन्ध है।

संख्या और क्रियाका घनिष्ठ सम्बन्ध है। शून्य जहां निष्क्रिय, निराकार निर्विकार ब्रह्मका द्योतक है, तथा एक (१) पूर्ण ब्रह्मकी उस स्थितिका द्योतक है, जब वह अद्वैत रूपसे रहता है। समस्त पदार्थोंके मूलमें जैसे शब्द है—वैसे ही अंक भी है। शब्दका मूल-आकाश अर्थात् शून्य (०) है, तथा अंकका मूल भी शून्य (०)! शून्यसे ही शब्दका अंकका प्रादुर्भाव होता है। अंक व क्रियाका सम्बन्ध न होता तो मालाके मणिये १०८ नहीं होते। २५ मणियेकी माला पर जप करनेसे मोक्षकी प्राप्ति होती है। ३० की मालाके जपसे अर्थ प्राप्ति. २७ से स्वार्थ सिद्धि, ५४ से सर्व कामोंमें सफलता, १०८ से सर्व-सिद्धि।

हमें यहां यह देखना है कि १०८ का क्या महत्व है। सूर्य जब राशि भ्रमणमें एक पूरा चक्कर लगा लेता है तो उसे १ पूर्ण वृत्तका

कहा जाता है। इस एक वृत्तमें ३६० अंश होते हैं। इन अंशोंकी कलाएं बनाई जाय तो ३६०×६०=२१६०० कलाएं हुई। सूर्य छः माह उत्तर व छः माह दक्षिण अयनमें रहता है। इस प्रकार यदि २१६०० के दो भाग करें तो १०८०० की संख्या प्राप्त होती है।

इसीको यदि दूसरे प्रकारसे लें तो १ दिन का काल 'परिमाण' सूर्योदयसे सूर्यास्त तक ६० घड़ी माना गया है। १ घड़ीमें ६० पल, १ पल में ६० विपल। इस प्रकार १ अहोरात्रमें ६०×६०×६०=२१६००० विपल हुए। इसके आधे दिनमें १०८००० और इतने ही रात्रिमें।

नवीन वैज्ञानिक प्रणालीके अनुसार रुपये पैसे, तोल, माप, तापमापक यन्त्र आदि एक ही दशमलव प्रणाली पर आधारित हैं। ऋषियोंने काल व संख्याका समन्वय करके इसीके सामञ्जस्य व समीकरण स्वरूप १०८००० की संख्या को प्राप्त किया। दशमलवके सिद्धान्तको अपनाते हुए शून्य छोड़ देनेसे १०८ की संख्या प्राप्त होती है। शब्द-संख्या व कालका भी इसी प्रकार सामंजस्य किया था कि प्रत्येक नाम का-नामके अक्षरोंका संख्या पिंड बनानेसे उसके समस्त गुण उस संख्यासे प्रकट हो जाते।

हमारा जीवन भी इसी प्रकार अंकोंके क्रमोंसे चलता है। जब उस संख्याका द्योतक वर्ष या दिन आता है तो वह समय हमारे जीवनमें महत्व पूर्ण होता है। भगवत् गीतामें १८ अध्याय, महाभारतमें १८ पर्व, १८ पुराण आदि। इस प्रकार १८ की सख्याका वैज्ञानिक आधार क्या है। १८ की संख्याका योग १+८=९ है, क्यों? श्रीमद्भागवतमें १२ स्कन्ध ही क्यों है। १०वां स्कन्ध इतना बड़ा हो गया कि उसके दो भाग करने पड़े, १३ स्कन्ध क्यों न कर दिए गए। रामायणका ९ दिनमें तथा भागवतका पारायण ७ दिनमें ही क्यों। गायत्री में २४ अक्षर ही क्यों। विवाहके समय सप्तपदी ही क्यों? गणेशकी चतुर्थी, दुर्गाकी अष्टमी, सूर्यकी सप्तमी, विष्णुकी एकादशी, रुद्रकी त्रयोदशी ही क्यों? ये समस्त प्रश्न अंक विद्या सम्बन्धित वैज्ञानिक विषय है। अंक विद्याका भी अपवाद अवश्य है। कारण अपवादसे रिक्त तो कुछ भी नहीं है। परन्तु यदि सही-सही निरूपण किया जाय तो फला-फल भी सही ही प्राप्त होता है। अंक विद्यामें कितनी सत्यता है इसकी जांचके लिए निम्न उदाहरण दृष्टव्य है।

यहूदियोंके धार्मिक कार्योंमें ७ का महत्व रहा है ७×७=४९ तथा ७×७०=४९० बेबीलोनमें इनकी परतंत्र स्थिति ७० वर्ष रहेगी! जेरुसलमके ध्वंस व पुनः जमनेमें ७×७०=४९० वर्ष लगेंगे। यह भविष्यवाणी समयपूर्व डेनियलने की थी। हिब्रू जातिके जन्म से कनान देश प्रवेशमें उन्हें ४९० वर्ष लगे। उसके ४९० वर्ष बाद 'साल' के अधीन प्रथम यहूदी राज्य स्थापित हुआ, इसके ४९० वर्ष बाद नेबूचद्नेजारने जेरूसलम पर विजय प्राप्त की। इसके ४९० वर्ष बाद रोमवासियोंने इसे नष्ट किया।

अमेरिकाका सम्बन्ध १३=१+३=४ से घनिष्ट रहा है।

वाशिंगटनका जन्म २२ फरवरी २+२=४
स्वतन्त्रताका एलान ४ जुलाई=४
जार्ज ३ का जन्म ४ जून=४
कान्टिनेन्टल कांग्रेस ४ मई=४
सिविल महायुद्धकी प्रथम आज्ञा १३ अप्रेल।

=१+३=४

समतर किलेका पतन १३ अप्रेल १+३=४

डोनाल्डसन किलेका युद्ध १३ फरवरी १+३

मनीला पर विजय १३ अगस्त १+३=४

विलसनका फ्रांसमें आगमन १३ दिसम्बर

जनरल पार्शिगका जन्म १३ सितम्बर

प्रेसीडेंट मेक्मिलनका जन्म २९ जनवरी

२+९=११=१+१=२

प्रेसीडेंट मोनरोकी निधन तिथि ४ जुलाई

नोट :—२ व ४ में (अंकोंमें) घनिष्टता है।

जार्ज वाशिंगटनका प्रारंभिक सत्कार १३ तोपोंकी सलामीसे हुआ। अमेरीकाके राष्ट्रीय ध्वजमें १३ पत्तियां है। १३ बाण हैं। ईगलके ऊपर १३ सितारें हैं। प्रत्येक डैनेमें १३ पंख हैं। स्वतन्त्रताकी घोषणाके समय १३ राज्य थे। १३ प्रतिनिधियोंने घोषणापत्र पर सर्वप्रथम हस्ताक्षर किए।

फ्रांसका प्रथम बादशाहका राज्याभिषेक १४ मई १०२९ को हुआ तथा फ्रांसका अंतिम बादशाह हेनरी १४ मई १६१० को मारा गया। फ्रांस तथा नवारेके १४वें बादशाह Hemride Bourbon के नामके १४ अक्षर थे। हेनरी १४ दिसम्बर १५५३ को पैदा हुआ। ईसाके जन्मके १४००+१४ दशक (१४०)+ १४१४वें सालमें—

१४×१००=१४००
१४×१० =१४०
१४×१ =१४

अर्थात् १५५३ वर्ष पूरे हो गए थे और १५५४वां चल रहा था। १५५३ वर्षका मूल अंक भी १+५+५+३=१४ ही होता है। १४ मई १५५४ को हेनरीने एक आज्ञापत्र निकाला १४×४=५६ वर्षकी अवस्थामें कत्ल किया गया।

१४ मई १५५२ को हेनरी IV की प्रथम पत्नी पैदा हुई। १४ मई १५८८ को ड्यूक ऑफ गाइजने बगावत की। १४ मार्च १५९० को हेनरी ने ईवरीके युद्धमें विजय पाई। १४ मई १५९२ को हेनरी मारा गया। १४ नवम्बर १५९२ को फ्रेंच पार्लियामेंटने कानून पास किया।

साधारण जनता ज्योतिष-शास्त्रमें पारंगत नहीं हो सकती। परन्तु अंक विद्याके नियम जो कि अत्यन्त सरल है इससे लाभ उठा सकती है। मैं यहां मूल अंक बनानेकी सरल विधि स्पष्ट कर रहा हूँ उसे ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। १ से ९ तक तो मूल अंक हैं ही, इसके पश्चात् १०=१+०=१, ११=१+१=२, १२=१+२=३, १३=१+३=४, १४=१ +४=५, १५=१+५=६, १६=१+६= ७, १७=१+७=८, १८=१+८=९, १९ =१+९=१०=१, २०=२+०=२। इसी प्रकार आगे भी इसे प्रयोगमें लाना चाहिए। इसी प्रकार यदि २९ के अङ्क निकालना हो तो २+९=११=१+१=२ होगा।

मूल अंक १ के २,४,७ भी शुभ होते हैं।
मूल अंक २ के १,४,७ भी ,, ,, ,,।
मूल अंक ३ के ६,९ ,, ,, ,, ,,।
मूल अंक ४ के १,२,७,८ ,, ,, ,,।
मूल अंक ५ के ६ ,, ,, ,,।
मूल अंक ६ के ३९, ,, ,, ,,।
मूल अंक ७ के २,४ ,, ,, ,, ,,।
मूल अंक ८ के ४ ,, ,, ,, ,,।
मूल अंक ९ के ३. ६, ,, ,, ,,।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवनके महत्वपूर्ण वर्षोंसे अवगत हो सकेगा तथा अपने भविष्यके प्रति सचेत रह सकता है।

मुष्टिक-योग-माला—

पारम्परिक चमत्कारपूर्ण योग

[लेखक :—श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा आयुर्वेदाचार्य]

(१) अर्श (बवासीर)

अधोलिखित दुर्लभ योग मैंने भगवान् आशुतोषके अनन्य भक्त बाणासुरकी राजधानी माहिष्मती नगरीमें 'ज्योतिष्मती' के पाठकोंके लिये—राजराजेश्वर मन्दिरमें पूज्य योगिवर्य वयोवृद्ध वैद्यराज काशीनाथजी महाराजके साथ संस्कृत संलाप करते हुए प्राप्त किया है।

संलापका छायानुवाद निम्नलिखित है—

आर्यवर! विगत अशीति ८० वर्षोंसे आप एतद्देशीय पीयूषपाणि चिकित्सक रहे हैं। इस प्रदेशमें विशेषतया अर्श जैसी महाव्याधिका प्रसार क्यों होता है? साथ ही शल्यक्रियासे भी प्रशस्त सफल औषध-चिकित्सा क्या है? शल्य क्रिया (आपरेशन) का तो नाम सुनकर मृदु-प्रकृति आतुर सहसा भयभीत होकर चिराय चिकित्सासे वञ्चित रहता है। कृपाकर बतलानेका कष्ट करें।

वत्स! कहकर वे कुछ क्षणोंके लिये गम्भीर हो गये। फिर बोले—मैंने अब तक इस योगको गुप्त रखा था, किन्तु अब तुम्हारे आर्जवसे अति प्रसन्न हो भगवान् राजराजेश्वर के सान्निध्यमें तुमको दे रहा हूं, सावधानीसे सुनो—

तैलाम्लभोजिनो नित्यं गोधूमविदलाशिनः।
भूयिष्ठमर्शसा तेन खञ्जाश्चावन्तिजाः नराः॥

तैल, अम्ल, गेहूं, दाल, आदिका अधिकांश तया प्रयोग करनेसे आवन्तिज (मालव, मेवाड़ गुजरात) नर अर्श रोगसे आतुर हैं।

अनुभूत औषधि

(१) श्वेत मल्ल (संखिया)	१० ग्राम
(२) दाल चीकणा	१० ग्राम
(३) स्फटिक	१० ग्राम
(४) तुत्थ (मोरतूंता)	१० ग्राम

इन औषधियोंको पीसकर द्रोणपुष्पी (गूंमा) के रसमें घोटकर झाड़ी बेरके समान गुटिका बना लेवें। पश्चात् पानीमें घिसकर दिनमें एक बार सावधानीसे अर्शाङ्कुर पर ही लगावें।

इस प्रकार दो-तीन दिनके प्रयोगसे वे मस्से काले पड़ जावेंगे। तब—

(१) हल्दी	५ ग्राम
(२) भांग	५ ग्राम
(३) मेहन्दी	५ ग्राम
(४) मेदा	१० ग्राम
(५) गोघृत	१० ग्राम

उक्त औषधियोंका संयाव (हलवा) बना कर कृष्ण अर्श पर उपनाह (पुल्टिस) बांधे।

इससे ११ दिनमें ही अनायास अर्श उन्मूलन हो जावेंगे।

(२) संग्रहणी

यह भी बड़ा दुर्द्धर्ष रोग है इसके लिये—

कुटज (कड़) छाल २ किलो लेकर मृत् पात्रमें १६ सोलह गुना पानी डालकर पादशेष क्वाथ कर लेवें। क्वाथको लकड़ीकी डण्डीसे ही हिलावें।

पश्चात्—(१) सोंठ ३० ग्राम
(२) इन्द्रयव ५० ग्राम
(३) गोखरू ७० ग्राम
(४) मोचरस ४० ग्राम
(५) अजवायन ६० ग्राम
(६) पुराना गुड़ ४० ग्राम
(७) सोंफ (शतपुष्पा) ५ ग्राम
(८) त्रिकटु (सोंठ मिर्च पीपल) १५ ग्राम
(९) सैन्धव लवण ४० ग्राम

उक्त औषधियोंको कूट पीस क्वाथमें डाल देवें। मात्रा १० से २० ग्राम तक द्विगुण जलके साथ दिनमें ३ बार। पथ्य—तक्र। कुपथ्य—वेसन व मेदेके बने व्यञ्जन, डालडा, तैल, अम्ल गुड़ आदि।

(३) मल द्वारसे आम जाना

जब बिना श्रम किये पौष्टिक वस्तुओंका सेवन किया जाता है तब मलके साथ चिकनाई (आम) की मात्रा अधिक जाती है। जिससे अशक्ति बढ़कर जीवन नीरससा प्रतीत होता है। तब—

(१) ईसबगोल सत्व (भूस्सी) ५ ग्राम को शयन समय उष्णोदक किम्वा दुग्धसे सेवन करे।

(२) अथवा सौंफ १० ग्राम
सोंठ १० ग्राम
छोटी हरड़ १० ग्राम
मिश्री ३० ग्राम

प्रथम हरड़को एरण्ड तैल अथवा घीमें भून लेवें पश्चात् सबका चूर्ण वनाकर प्रातः सायं ३।३ ग्रामकी मात्रा जलसे लेवे। पथ्य—तक्र मठ्ठा खूब पीवें।

(४) श्वास

ऊपर लिखित औषधियोंमेंसे सोंफके स्थान पर यवक्षार-सम्मिलित करें, शेष प्रक्रिया पूर्ववत् है।

शयन समय उष्णोदकसे फक्की लगावें जिससे कफ सरलतया मलद्वारसे निकलकर श्वास प्रकोप शमन हो जावेगा।

कुछ खट्टे-मिट्ठे अनुभव

[लेखक :—श्री गिरिधर चोटिया, साहित्याचार्य, साहित्य-आयुर्वेद रत्न, प्रभाकर]

एक सज्जन कई दिनोंसे पीछे पड़े हुए थे। उनको लगातार घाटा लग रहा था। दिनमान अच्छे नहीं हैं। मैंने उनका जन्मपत्र देखा। लग्नेशकी महादशा चल रही थी, लाभेशकी अन्तर्दशा दो मास पूर्व बीत चुकी थी। वह भी लाभप्रद नहीं रही। अब चतुर्थेश की अन्तर्दशा चल रही थी। जन्मपत्रकी ओर से आश्वस्त होकर मैंने गोचर स्थिति देखी। वह भी सामान्य थी। आखिर बाधा क्या है? सोचते-सोचते कोई उपाय नजर न आया। जगदम्बाका ध्यान किया। शब्द सिद्धि हुई। "बीसा यन्त्र काममें लो" यंत्र-महार्णवमें बीसा यंत्रके अनेक प्रकार देखे। पर सन्तोष न हुआ। मैं सर्वथा निर्दोष यन्त्र चाहता था। अन्तमें एक यन्त्र गुरुमहाराज द्वारा प्रदत्त प्राप्त हुआ। उसे भोजपत्र पर अष्टगन्धसे लिखकर दिया। तथा विधान बताया। उस यन्त्रने आशातीत कार्य किया। इस यन्त्रको विधानपूर्वक पूजित कर तथा मन्त्र द्वारा जागृत करना होता है। तभी यंत्र काम करता है। अन्यथा सुप्त यंत्र पूर्ण फलप्रद नहीं होते।

हमें एक आवश्यक कार्यवश ग्रामान्तर जाना पड़ा। मेरी एक आदत है जिस गांव या शहरमें जाता हूं तो वहांके प्रसिद्ध स्थान या दर्शनीय मन्दिर अवश्य देखता हूँ। हम एक हनुमन् मन्दिर देख रहे थे। एक ग्रामीण वहां बैठा रो रहा था, बारबार अपना मस्तक (माथा) मन्दिरकी पोड़ियों (सीढ़ियों) से घिस रहा था। मैंने जिज्ञासावश पूछा तो बोला—'कल रात जन्माष्टमी थी। मेरा सारा परिवार भगवद् कीर्तनमें लगा था। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के दर्शन करने तथा प्रसाद हेतु समीपस्थ मन्दिर में गया। इसी अवधिमें चोरने सफाया कर डाला। अब तो बालाजी महाराज ही कुछ कर देवे तो ठीक है। अन्यथा शरीरका भी विश्वास नहीं है।" मैं धर्म संकटमें फंस गया। तभी गुरु महाराजका आदेश रूप श्लोक याद आया—

भयार्त्तदीन वदने दैवज्ञो न दिशेद् यदि।
विफलं भवति ज्ञानं तस्मात्तेभ्य: सदा वदेत् ।।

मैंने एक अष्टवर्षदेशीय बालकको बुला कर 'हजरात' द्वारा फल निकालनेका विचार किया। अगलेका भाग्य तथा मन्दिरका प्रभाव समझिये। चोरका नाम तथा आकृति रूप संकेत मिले। चोरने भी मन्दिरमें आकर आत्म-समर्पण किया। अभयदानकी इच्छा प्रकट की। हमने अभयदानका वचन तथा वस्तुका प्रत्या-वर्तन कराया।

एक अध्यापक बन्धुका बालक "टाइफाइड" से प्राय: ग्रस्त रहता था। हमने उसकी समस्या समझी। यन्त्र बान्धनेकी सलाह दी। बालक १२ मास तक बीमार नहीं हुआ। वह यंत्र ताम्बेका होनेके कारण नीचेसे कट गया। उन्होंने नवीन चान्दीका यन्त्र बनवाया। पर वैसा लाभ प्रद न रहा। मेरे अब भी समझमें नहीं आया कि कमी क्या रह गई? हो सकता है, कुपथ्य कर न बताने वाले रोगीके सामने चिकित्सककी जो स्थिति होती है, वही मेरी हो।

एक प्रसिद्ध यान्त्रिक-मांत्रिक सज्जन मेरे पास आये। वे अत्यन्त क्रुद्ध थे। आते ही तार स्वरमें बोले—

"आपने तो मेरी रोटी व रोजी बर्बाद कर दी।"

"कैसे" मैंने आश्चर्यसे पूछा।

"आपने जबसे यह काम प्रारम्भ किया है, मेरे पास लोगोंने आना बंद कर दिया।"

"मैंने तो किसीको रोका नहीं।"

"यह तो सत्य है, पर आपके सेवाभावी यंत्रोंके सामने फीस देकर कौन यंत्र लेंगे?"

"आप भी निःशुल्क कर दो।"

"मैं तो भूखा मर जाऊं।"

"तो मेरे पास कोई उपाय नहीं।"

"उपाय आपके पास है। पर आप न जाने क्यों नहीं चाहते?"

"कौनसा?" मैंने चकित होकर पूछा।

"आप भी फ़ीस लेना शुरु कर देवें।"

"शिव……शिव……। यह मुझसे नहीं होगा।"

"क्यों"?

"यह गुरु महाराजके साथ विश्वासघात होगा। मैं तो उपकृत व्यक्तिके यहां जल पीना भी हराम समझता हूँ।"

"तो यह व्यवसाय आप करते ही क्यों हैं?"

"मेरी इच्छासे नहीं। यह तो गुरु ऋण उतार रहा हूँ।"

"आप ऐसे नहीं मानेंगे। कभी मूठ (मारण प्रयोग) चलानी पड़ेगी।"

"चला सकते हैं। आप स्वतन्त्र हैं। क्या आपने गायत्री साधना की है?"

"नहीं, मैं तो चण्डीकी साधना करता हूं। सुरा-मांसका भोग लगाता हूँ।"

"तब आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"क्यों?"

"तामसको सत्व सदैव जीतता है। यदि इच्छा हो तो करके देख लो। कहीं विपरीत न चल पड़े।"

वे घबराये। उठकर चल दिये। फिर कभी हमारा उनसे साम्मुख्य न हुआ।

एक वृद्ध सज्जन कुछ दिनसे बीमार चल रहे थे। हमें जन्म पत्र दिखाया। मारक ग्रहकी महादशा चल रही थी। तीन मास पश्चात् प्रबल मारक ग्रहकी अन्तर्दशा आने वाली थी। हमने शीघ्र ही काशीवास करनेकी सलाह दी। उन्होंने भी हमारी बात मानकर शिवपुरीकी ओर प्रस्थान किया। अढाई मास पश्चात् उनका पुत्र भी जा पहुँचा। छै मास पश्चात् वे स्वस्थ होकर लौट आये। मुझसे मिलने आये। आते ही बोले—आपने तो मुझे तीन मास पूर्व ही मार डाला था। पर मैं विश्वनाथकी कृपासे जीवित हूँ। उनकी स्पष्टोक्तिके सामने मैं स्तब्ध रह गया। मैंने उनसे क्षमा मांगी। उन्हें सहर्ष बिदा किया। अब मुझे अपनी गलती खोजनी थी। अब भी मेरे पास उनका जन्म-पत्र पड़ा था। मैंने फिरसे गणित किया। कोई अशुद्धि नहीं मिली। दो दिन तक मैं अनुसन्धान करता रहा, पर कोई समाधान न मिला। एक दिन उनके सुपुत्रसे भेंट हो गई। उन्होंने सारा रहस्य उद्घाटित किया। वह निम्न प्रकार है। उक्त सज्जनने मौतको पास

आई जान एक वक्त आहार, तुलसी सहित गंगाजल लेना प्रारम्भ कर दिया । यम-नियम-प्राणायामका सहारा लिया। वर्धित आध्यात्मिक शक्तिने मृत्युको परास्त कर दिया। घोषित मृत्यु वाला रोगी यदि स्वोपचारसे बच जाता है तो चिकित्सकका क्या दोष ?

एक सेठकी लड़की विधवा हो गई। इस का मुझे आज भी दुःख है । बात यह हुई कि एक दिन सेठ साहब दो जन्मपत्र लेकर हाजिर हुए। उन्होंने कहा कि छोरी (लड़की) का सम्बन्ध करना है । दोनोंके (लड़का और लड़की) जन्मपत्र लाया हूं अतः सावल (अच्छी तरह) देखकर देवें। मैंने कल आनेको कह विदा किया । लड़कीके जन्म पत्रमें चतुर्थ स्थानीय भौम था । वह भी स्वगृही । अत्यन्त दीप्त। अतः मंगलीक (चूनड़ी थी) भौम परिहार भी देखा पर उससे भी समस्या हल न हुई। अब स्पष्ट था कि यह सम्बन्ध नहीं हो सकता। क्योंकि मंगलीकका मंगलीकसे ही सम्बन्ध होना समीचीन है।

"नमस्कार"

"आइये, आइये······पण्डितजी, आज तो बड़ी कृपा की।

"······ जी. सेठ······जी आपको ही जन्म पत्र दे गये हैं।"

"हां, हां,···। मुझे ही दे गये हैं, क्यों ? क्या बात है ?"

"बात यह है कि एक ब्राह्मणकी प्रतिष्ठाका सवाल है।"

"यानी·········मैं समझा नहीं।"

"बात यह है कि मैंने लड़के वालोंके दबाव में आकर स्वीकृति दे दी है।"

"आपने स्वीकृति देकर अनर्थ कर दिया। वह स्पष्ट मंगलीक है। लड़की विधवा हो जायेगी, या दाम्पत्य सौख्य नहीं रहेगा।"

'क्या करूं, मुझसे गलती हो गई। अब मेरी इज्जत आपके हाथमें है।"

"स्पष्ट कहनेमें क्या हर्ज है ? अनर्थ होने से बच जायेगा।"

"नहीं, एक ब्रह्महत्या हो जायेगी। क्योंकि बात ही ऐसी है। अब केवल आपकी हां, या ना पर निर्भर है।"

"मैं-धर्म-संकटमें फंस गया। हां कहते बना, न ना कहते बना।"

तब तक पण्डितजी बोले—आप कुछ चिन्ता मत कीजिये। केवल विरोध न कीजिये। बाकीका काम मैं अपने आप कर लूंगा। मैंने दीर्घ निश्वास छोड़ा और कहा—'आप क्या करेंगे।'

"दोनों जन्मपत्र मुझे दे दीजिये। आप निश्चिन्त रहिये।" उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा।

मैंने हरिस्मरण कर दोनों जन्मपत्र उन्हें दे दिये। उन्होंने क्या किया ? क्या न किया ? मालूम नहीं। कुछ दिनके बाद विवाह सम्पन्न हुआ। परिणाम सुनिश्चित था ही। उस दिन बादसे मैंने 'मेलापक' वाला अध्याय ही बन्द कर दिया।

हमारे एक मित्र हैं। दिन रात अदालतके चक्करमें रहते हैं। कभी वकीलोंकी ठकुर-सुहाती करते हैं तो कभी मुन्शियोंके पैर पकड़ते

[शेष पृष्ठ ५६ पर]

अवधान कला और जैन अवधानकार

[लेखक :—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी, आचार्य द्वय, एम०ए० द्वय, पी.एच०डी०,]

[अवधान कलाके जानकार भारतमें ही थे और अब यहां भी बहुत कम कहीं इस विद्याके जानकार रह गये हैं। अवधानमें चित्तवृत्तिकी एकाग्रता परमावश्यक है जो योगका एक अंग है—'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'। आजसे लगभग ४० वर्ष पूर्व श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूलाके वार्षिक महोत्सव पर जैन मुनी श्री रत्नचन्द्रजी शताबधानीका अवधान प्रयोग हुआ था—उसमें पंचांगकार और नवीनप्राचीन गणितमर्मज्ञ—दैवज्ञके नाते प्रश्नकर्ताके रूपमें कुरालीसे श्रद्धेय श्री पं० मुकुन्दवल्लभजी राजज्योतिषी और इन पंक्तियोंके लेखकको सादर आमंत्रित किया गया था। हम दोनोंने नव्य एवं प्राच्य गणित और फलित सम्बन्धी ६ जटिल प्रश्न पूछे थे। ९४ प्रश्नकर्ता अन्य सज्जन थे। जैनमुनी शतावधानीजी सबका क्रमशः उत्तर देते जा रहे थे। हमारे गणितजालके लाखोंकी संख्याका सही यथार्थ उत्तर देकर सबको आश्चर्यमें डाल दिया। इतने बड़े गणितके प्रश्न स्लेट पेन्सिल तथा कागजके बिना जबानी हल करना सर्वथा असम्भव था। परन्तु शतावधानीजीने हमारी बताई संख्या भी १०० प्रश्न सुनने तक स्मरण रक्खी और अपने योगबलसे उसका सही संख्यामें उत्तर भी प्रश्न क्रमसे बता दिया। यह कोई कम आश्चर्यकी बात न थी। ऐसे महापुरुष अब कहीं विरले ही मिलते हैं। विद्वान् लेखकने अवधानकला पर इस लेखमें पर्याप्त प्रकाश डाला है। भारतको इस गौरवमयी योगविद्याके संरक्षण संवर्द्धनार्थ प्रयत्न करना प्रत्येक भारतीयका परम कर्तव्य है। —सम्पादक]

भारतीय ज्ञानकी भूमिका

विश्वके मनीषियोंने जब भौतिक जीवनको सजाने संवारनेकी दिशामें ही अपनी बुद्धिका उपयोग किया और उसकी परिणतिसे उपलब्ध सुख-सुविधाओंको पाकर ही मानव-जन्मकी सफलता मान ली, तब भी भारतीयोंने युगोंसे पूर्वजों द्वारा अनुशीलित आध्यात्मिक ज्ञानकी आराधनासे मुंह नहीं मोड़ा। ज्ञानको ही सर्वाधिक सत्य एवं शाश्वत निधि मानने वाले भारतीय भावी और वर्तमानको महत्व न देकर भूतको अधिक महत्व देते हैं, उसका कारण यह है कि सुख-शान्तिका जो साम्राज्य भूतकालमें था वह आज कहां? बिना सुख-शान्तिके साधनाकी सिद्धि भी कैसे सम्भव है? और जब सिद्धि ही खपुष्पायित हो, तो साध्यके पीछे भटकनेसे भी क्या लाभ?

उपर्युक्त दृष्टिकोणकी दृढ़ताका परिणाम पाश्चात्योंकी दृष्टिमें पिछड़ापन है, अन्धभक्ति है, तथा जागतिक सुखोंकी अनुभूतिका अभाव है, किन्तु बुद्धिपूर्वक विचारने पर ऐसा कुछ नहीं। हम अतीतके आदर्शोंको प्रशान्तभावसे सोचते हैं तो ऐसे अनेक रहस्य हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं जिनकी ज्योति आजके नश्वर एवं विनाशकारी उपादानोंकी अपेक्षा कहीं अधिक है, और यही कारण है कि **"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते"** तथा **"ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः"** जैसे मङ्गल-सूत्रोंको अपने जीवनका आदर्श-लक्ष्य बनाकर ज्ञानकी साधनामें निरन्तर लगे रहना ही यहां सर्वाधिक हितावह कर्म माना गया है।

भारतीय मेधाशक्ति

यद्यपि यह कहना असंगत प्रतीत होगा कि भारतीय ही मेधाशक्तिके सर्वोच्च धनी हैं अथवा भारतीयोंने मेधाशक्तिको आत्मसात् कर लिया है तथा अन्य इससे शून्य हैं, तथापि इस कथनमें कोई अत्युक्ति नहीं है कि 'भारत-वासियों' ने अपनी बुद्धिके वैभवका कई विषयों में इतना उत्तम प्रमाण उपस्थित किया है कि जिसका उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

यहां हम ज्ञानसे साहित्यिक ज्ञानको ही लें, तथा मेधा-शक्तिसे कृति-निर्मिति-शक्तिको ग्रहण करें तो ऐसी अनेक कृतियां संस्कृत-साहित्यमें सहज मिल जाती है जिनकी विलक्षणता लोकोत्तर चमत्कारिणी हैं तथा इतर जनसाधारण द्वारा निर्मेय नहीं है। ऐसी कृतियोंमेंसे कुछ इस प्रकार हैं—

कुछ अद्भुत कृतियां

संस्कृत साहित्यके आराधकोंमें कुछ कवि ऐसे हुए हैं जिन्होंने एक निश्चित स्थान और निश्चित अवधिमें पूरे काव्योंका निर्माण किया है, जिनमें सूर्यनारायण कविका 'एक दिन-प्रबन्ध' तथा घटिका शतकोंको लिया जा सकता है। प्रतिज्ञाबद्ध होकर पूरे ग्रन्थके प्रत्येक पद्यमें सात-सात कथाओंका निर्वाह एवं पांच-पांच कथाओं का गद्यमें निर्वाह 'सप्त-सन्धान-काव्य' तथा 'पंचकल्याण-चम्पू' में परखा जा सकता है। ३२ अक्षरोंके एक अनुष्टुप छन्दमें पूरी रामायणके कथानकको आवर्जित कर ६ कांडोंमें विभक्त १२८ अर्थों वाले एक पद्यकी रचना—"कङ्कण-बन्ध-रामायण" अपने ढंगकी अनूठी ही कृति है। किसीने संवाद-काव्यमें रावण एवं सीताके संवादको इस तरह गूंथा है कि प्रत्येक पद्यके तीन चरणोंमें रावण रामकी निन्दा करता है और सीताजी चौथे चरणमें कह उठती है कि "हे मूढ़! तेरे द्वारा कहे गये इन तीन पदोंमें अमुक अक्षरको अथवा अमुक मात्राको या अमुक स्थानके अक्षरोंको बदलकर अथवा उस स्थान पर अमुकको देकर फिरसे पढ़।" फल यह होता है कि पूरा अर्थ बदल जाता है जो रामकी प्रशंसा करता है और रावणकी निन्दा। "सीता-रावण-संवाद-झरी" जैसी तीन-तीन कृतियां इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। शूर्पणखा की नाक कट गई और वह रावणके समक्ष अपनी शिकायत करने जाती है। नाक कट जाने पर अनुनासिकका उच्चारण सरल नहीं होता, अतः पूरी कथाको निरनुनासिक वर्णोंमें ग्रथित कर "निरनुनासिक-चम्पू" की रचना और अभिनय करने वाले पात्रका ओठ दैववशात् कट जाने पर निरोष्ठ्य वर्णोंका पूरा कथानक बनाना भी कम आश्चर्यकी बात नहीं है।

इसी प्रकार लोम-विलोम काव्य, चित्र-काव्य, श्लेषकाव्य, यमककाव्य, अनेकार्थी काव्य, समस्या-पूर्तिकाव्य, एकाक्षरी, द्वयक्षरी त्र्यक्षरी काव्य, एक छन्दके अक्षर त्यागसे विविध छन्दोंका निर्माण तथा "राजानो ददते सौख्यं" इन आठ अक्षर वाले पदके आठ लाख अर्थकी योजना भी कम आश्चर्यकारक नहीं है। एक पद्यमें आठ-आठ भाषाका समावेश, खाद्यनाम गर्भस्तुति, भेषजगर्भ-स्तुति, आभाणक-गर्भ-स्तुति आदि विविध स्तुतियां हमारे मनको मुग्ध किये बिना नहीं रहतीं। और इन सब रचनाओंका उद्देश्य केवल "ममायं धर्मः ममेदं कर्त्तव्यम्" के अतिरिक्त कुछ नहीं रहा।

अवधान-कला

उपर्युक्त आश्चर्योंकी परम्परामें एक आश्चर्य

'अवधान-कला'' भी है। मेधाशक्तिके चमत्कारोंमें "अवधान'' एक साहित्यिक चमत्कार कहा जा सकता है। इससे पाश्चात्य जगत्, भाषा एवं संस्कृति अनभिज्ञ है। इस कलाका उन्मेष कब हुआ, यह कहना तो कठिन कार्य है। किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि–
"ब्राह्मणेन निष्कारणं षडङ्गो वेदोऽध्येयो०''
इत्यादि आज्ञाके अनुसार वेदोंके अध्ययनमें अनवरत संलग्न द्विजोंने बहुत प्राचीन कालसे इस कलाको अक्षुण्ण रखा है। वेदोंके पद, क्रम, जटा, घन आदि विकृतियोंका यथावत् पठन कर पुस्तकोंके अभावमें भी गुरुद्वारा अध्यापित पद्धतिके अनुरूप श्रुतको सस्वर स्मरण रखना ही "अवधान'' की उद्गम भूमि है। प्राचीन कालमें वेदज्ञको "अवधानी'' पदसे सम्बोधित किया जाता था, जिसका कुछ अंशोंमें आज भी प्रचलन हो रहा है। आन्ध्रवासी विद्वज्जनों की नाम-परम्परा इसका प्रमाण है।

अवधानका अर्थ एवं प्रकार

अवधान शब्दका अर्थ है "एकाग्रता अथवा ध्यान।'' मनकी एकाग्रताको आलोच्य वस्तुसे हटाकर अन्य विषयों पर भटक जानेसे बचाना और उसे नियन्त्रित रखकर अनेक बाधाओंके रहते हुए भी प्रस्तावित विषयकी ओर ही बनाये रखना इसकी विशेषता है। मनः सृष्टि की चित्र-विचित्र देनमें यह विचित्रतम देन है। चित्तको पूर्णरूपेण किसी दिशा विशेषमें एकाग्र करने पर भी वह उसी भांति भटकता रहता है, जिस भांति किसी वस्तु-विशेष पर रश्मि-कान्ति केन्द्रित होने पर भी, उसकी छाया समीपवर्ती चीजों पर पड़े बिना नहीं रहती। जो मनुष्य इस तरहकी एकाग्रता पर अधिकार प्राप्त कर लेता है वह "अवधानी'' कहलाता है।

प्राचीन कालमें वेदाध्यायी - वेदके किसी अवयवका उल्लेख करने पर पंचाशिकाका ज्यों का त्यों उच्चारण करने वाले व्यक्तिको, अवधानीकी संज्ञा दी जाती थी। विकृतियोंके पाठ में तनिक भी अपस्वर या पाठदोष न आने देते हुए, सही-सही पाठके लिये अवधानीको अखण्ड धारण-शक्ति अपेक्षित होती है और वैदिक मन्त्रोच्चारको उदात्त अनुदात्त, स्वरित तथा प्रचय नामके चतुर्विध स्वर-विधान द्वारा लयबद्ध सुनानेके लिये दूर बैठा हुआ पृच्छक मनमें किसी पंचाशिकाको सोचकर उसे अपनी अंगुलियों पर अंगुष्ठिकाके स्पर्श द्वारा उसके स्वर विशेषकी ओर संकेत करता है। अंगुली का इंगित पाकर अवधानी उस पंचाशिकाका पाठ कर जाता है, इस पद्धतिको "स्वरावधान'' कहते थे।

इस कलाका दूसरा प्रकार "नेत्रावधान'' है। इस कलामें दो अवधानी होते हैं। पृच्छक द्वारा दिये गये वाक्यसे एक व्यक्ति अपने सहचर को केवल नेत्रोंके संचालन द्वारा अवगत कराता है। उसका सहचर नेत्र-संचालन द्वारा प्रेषित भावोंको शब्दोंमें उतारकर, उसे पुन: वाक्यके सांचेमें ढालकर पृच्छकको बतला देता है। इस प्रकार एकाग्रताकी इस कलाने शनै: शनै: वैदिक ज्ञान सरोवरसे साहित्य-महासागर तक अपना प्रसार आरम्भ किया, जो पूर्णावस्थाकी ओर अग्रसर है।

अष्टावधान

उपर्युक्त अवधानोंका प्रारम्भिक समन्वित रूप "अष्टावधान'' है जिसकी तुलना आलंकारिक भाषामें अष्टदल कमलसे की जा सकती है। पृच्छकके प्रश्नोंको सुनकर जब अवधानी अन्तर्मुखी होता है तब उसकी समता मुकुलित

कमलसे होती है। मनमें प्रश्नोंका मनन कर अवधानी उनके उत्तर तैयार कर लेता है, तब क्रमशः उनके उत्तर प्रकट रूपमें देता है। काव्यालंकारके प्रणेता वामनने 'अवधान' की परिभाषा चित्तैकाग्रता देकर कविताके सहायक उपकरणोंमें इसे स्थान दिया है। पर वास्तविकता यह है कि काव्य-रचनाकी अपेक्षा इस 'अवधान' में पर्याप्त एकाग्रता अपेक्षित है। अष्टावधानमें आठ बातों या विषयोंमें एक ही समय पर मनको एकाग्र किया जाता है, जैसे कविता, वार्तालाप, शास्त्रार्थ, आकाशपुराण, निषिद्धाक्षरी, शतरंज, व्यस्ताक्षरी, एवं गणित। इन प्रयोगोंमें अवधानकार अपनी रुचि एव योग्यताके अनुसार किसी एक विषयको स्वीकृत कर आठ अवधानोंको प्रकट करता है। समस्या-पूर्ति, किसी वस्तु विशेषका वर्णन, पुष्प गणना, घण्टानाद और सूचित दिनांकके अनुसार वारका निर्देशन, यंत्रिका चित्र आदिका भी इसमें समावेश है। इस प्रकार अवधानकार पंडित अपनी प्रतिभा और रुचिके अनुसार कुछ विशिष्ट वस्तुओंका चयन कर लेता है।

इन आठ विषयोंमें यदि एक-एक प्रश्नकर्ता सम्मुख आवें तो कठिनाई नहीं होती। किन्तु जब सभी एक साथ उत्तरोंको चाहते हैं तब कुछ कठिनता होती है। बहुतसे स्थानों पर अवधानकार पद्यके रूपमें उत्तर देता है और बीच-बीचमें शतरंजकी चाल चलता है। सुने हुए विषयको पौराणिक अंशोंके माध्यमसे पूर्ण करता है, व्यंग्यके द्वारा मनोविनोद करते हुए कुछ उत्तर देता है तथा पद्य पूर्ति हेतु श्लोकके चरणोंको भी कहता रहता है। निषिद्धाक्षरीमें बीचमें अनुप्रासके माध्यमसे अथवा एकाक्षर कोशके आधार पर सफलता प्राप्त की जाती है, जिसमें सूचित किसी वर्ण अथवा वर्गका निषेध होता है। पुराण-पाठकी प्रक्रियामें अवधान कर्ममें कुछ व्यवधान आता है, किन्तु अवधान कर्ता उससे भुलावेमें न पड़कर पृच्छकके उत्तरको यथावत कहता है और अन्य व्यक्तियोंसे वार्तालाप भी करता रहता है। इसमें किसी काव्य अथवा पुराणके अंशको सुनकर मूल स्थानकी खोज करना बहुत महत्वपूर्ण है। इसी प्रक्रियामें कभी कभी व्याकरण, अलंकार शास्त्र जैसे शास्त्रोंकी चर्चा भी सम्मिलित है। दत्तपदीमें पृच्छक ऐसे चतुर शब्दोंको देता है कि जिनमें ध्वनिकी समानता हो और वे परस्पर असम्बद्ध हों उन्हीं शब्दोंको लेकर अवधानकार प्रत्येक पंक्तिमें निर्दिष्ट वस्तुका वर्णन करते हुए उन शब्दोंका समावेश करता है और चार चरणोंमें सूचित छन्दकी पूर्ति भी करता है। कपड़ा बुननेकी प्रक्रियाके समान विविध सूत्रोंका एकीकरण तथा असंगत सूत्रोंकी व्यवस्था इस क्रियाका महत्वपूर्ण अंग है।

वार्तालाप द्वारा अवधानकारको पृच्छक भुलानेका बहुधा प्रयास करते हैं, किन्तु अवधानकार उनके द्वारा किये गये प्रसंगोंमें बिना किसी हिचकिचाहटके हास्य विनोद करता हुआ प्रश्न और उत्तरोंकी कड़ियोंको मन ही मन जोड़ता रहता है। आश्चर्य तो तब होता है कि जब विविध प्रश्नकारोंमेंसे बातचीत करते हुए जो भी अपने प्रश्नका उत्तर मांगता है उसे तत्काल समुचित उत्तर दिया जाता है। यह एक अपूर्व सिद्धि कहना चाहिए।

अवधानके कुछ आवश्यक तत्व

उत्तम अवधानकी सिद्धिके लिए बुद्धिका

दुहरा विभाजन आवश्यक है। उसे आभ्यन्तर और बाह्य भेद कह सकते हैं। अवधानकार चित्तको केन्द्रित करके अन्यत्र गमनसे रोकता है। धारणा और स्फुरणाकी सहायतासे वह विजय प्राप्त करता है। यह आभ्यन्तर बुद्धि का फल है। शीघ्र कविता-निर्माण, पाण्डित्य प्रदर्शन, प्रत्युत्पन्न मतित्व, परिहास प्रियता—ये बाह्य बुद्धिके अंग हैं। अप्रतिहत कवित्व, धारा शुद्धि, शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण तथा निरन्तर अभ्यास—ये भी इसी भेदमें आते हैं। अवधानकारके गुणोंमें शीघ्र कवित्वके साथ विविध विषयोंमें और शास्त्रोंमें प्रवेश तथा स्वाध्याय शीलता, विनम्रता, व्याख्यान निपुणता, शारीरिक उत्तम स्वास्थ्य आदि आवश्यक तत्व हैं। अष्टावधानका कार्य प्रायः चार घण्टोंमें पूर्ण हो जाता है, किन्तु शतावधान सोलह अथवा अठारह घण्टोंमें समाप्त होता है। स्मृति शक्तिके अंतिम शिखर पर बैठा हुआ अवधानकार सौ प्रश्नकारोंको क्रमसे अथवा व्युत्क्रम से अपेक्षानुसार उत्तर देता हुआ कभी काव्य रचना करता है, निबन्ध लिखवाता है, अंक यंत्रकी पूर्ति करवाता है, ताश अथवा अन्य खेलोंको खेलता है, विविध भाषाके वाक्योंको सुनकर स्मृतिमें रखता है, आवृत्ति तथा गणित की प्रक्रियाओंको करता है। यह उसकी अग्नि-परीक्षाका काल कहा जा सकता है। क्योंकि पृच्छकोंमें नवीन, प्राचीन ज्ञानसे सम्पन्न तथा विज्ञानवादी व्यक्ति अपनी-अपनी रुचिके अनुसार उसकी मेधा-शक्तिका परीक्षण करते हैं।

कुछ प्रख्यात अवधानकार

यह कला कहां उद्भूत हुई—यह कहना तो कुछ कठिन ही है, किन्तु आन्ध्र देशमें बहुत प्राचीन कालसे इस कलाके प्रचलनका ज्ञान होता है। वहां बहुतसे अवधानकार हुए हैं—जिनमें "वसुचरित्रा" के लेखक भट्टभूति—जो कि एक घटिकामें सौसे अधिक पद्य रचना करते थे और एक दिनमें एक प्रबन्ध काव्य लिखनेकी क्षमता रखते थे। "विक्रमांक चरित" के प्रणेता श्री गक्कन, "चित्रभारत' के रचयिता श्री चरिगोण्डा धर्मना अवधानी सम्राट् प्रमुख थे। आज भी मार्कण्डेयपुर स्थित श्री चिलुकुरि रामभद्र शास्त्री बचपनसे ही अवधान कलामें निपुण हैं। ये दिवाकर्ल तिरुपति शास्त्रीके शिष्य हैं। इन्होंने अष्टावधानका वर्णन इस प्रकार किया है—

पुष्पाणां गणना च वर्णविततेर्व्यस्तो निषेधस्तथा,
वार्तालापकृतिः पुराणकथनं व्याघ्राजयोर्द्यूतकम् ।
पश्चाद्वृत्तपदी ततोपि च समस्यापूरणं श्रद्धया,
ज्ञातव्यं भुवि रामभद्रसुकवेरष्टावधानं महत् ।।

इनके अतिरिक्त ये ही नेत्रावधान, अंगुष्ठा-वधान, घण्टावधान आदि विविध प्रकारके अवधानोंसे बहुत अद्भुत ज्ञान प्रकट करते हैं।

श्री पिशुपाटि चिदम्बर शास्त्री इस कला में अति प्रवीण हो गये हैं। उन्होंने अपनी अवधान कलाके बारेमें निम्नलिखित पद्य पुरस्कृत किये हैं—

चित्तैकाग्र्यमिहावधानमुदितं देशे विविक्ते तथा,
रात्रौ तत्समवाप्यते हि कृतिभिः काले तुरीये पुनः ।
अभ्यासे सति देशकालनियमोऽप्यास्तां निरस्तः स्वयं
सैषा योगविदश्चिदम्बरकवेरात्मानुभूतिः स्मृतिः ।१।
दत्तव्यस्तनिषिद्धवर्णमपरं पद्यं विवर्गाक्षरं,
छन्दोभाषणपृष्टकल्पनसमासार्थैकसन्धाग्रहाः ।
एते धारणया सहाष्टविधयो यत्र क्रियन्ते क्रमात्
तत्तादृक्षमिदं चिदम्बरकवेरष्टावधानम्मतम् ।।२।।

तत्तद्वाञ्छितवृत्तवर्ण्यविषयानुद्दिश्य पर्यायतः,
पादान् प्रोच्य शतावधानधिसमं शिष्टन्तु पादत्रयम् ।
साकं धारणया यथाक्रममथो पूर्णं सुविज्ञाप्यते,
सर्वं यत्र चिदम्बरः शतवधानाख्यं तदाशंसते ।। ३।।

इसी प्रकार पिशुपाटि सुब्रह्मण्य शास्त्री भी चिदम्बर कविके शिष्यके रूपमें सहस्रावधानी हैं, जो कि अपनी प्रतिभा वैखरीके द्वारा अवधानके प्रयोगोंमें उच्च प्रतिष्ठाको प्राप्त हैं। उनकी विशेषताका एक उदाहरण यह है कि एक बार किसी सभामें उन्होंने सौ घड़े क्रम से रखकर लकड़ीके द्वारा क्रमसे उन्हें बजाया गया और उनकी ध्वनिको अवधानके रूपमें सुन लिया गया। तदनन्तर दूसरे कक्षमें उन्हें बिठाकर किसी एक घड़ेका लकड़ी द्वारा शब्द किया गया जिसे सुनकर उन्होंने उसकी संख्या बतला दी। वेंकट रामकृष्ण कवि नामक दो विद्वानोंने अपने समवेत शतावधानमें एक बार एक घण्टेमें विविध अनुप्राससे युद्ध पादशतक की रचना करके अवधान कलाकी अभिवृद्धि की। इसी प्रकार तीन-तीन भाषाओंका मेल करते हुए भी कुछ रचनाएं अवधानकारोंने की हैं। जिसका प्रमाण 'अद्‌भुत-शतावधान' नामक ग्रन्थसे प्राप्त होता है। काव्य-कण्ठ गणपति शास्त्री भी इस दिशामें बड़े ख्याति प्राप्त हैं। उत्तर भारतके अवधानकारोंमें श्री अम्बिकादत्त शास्त्री, श्री गट्टूलालजी महाराज आदि अनेक विद्वान् हुए हैं—जिनको अवधान कला विविध शास्त्रोंके माध्यमसे प्रकट हुई है।

जैन अवधानकार

सम्भवतः दाक्षिणात्य विद्वानोंकी इस अवधान कलाका अवतरण दिगम्बर सम्प्रदाय के आचार्योंके माध्यमसे जैन सम्प्रदायमें हुआ है। वैसे प्राचीन आचार्योंमें कुछ अवधानकार अनन्त शक्ति सम्पन्न हुए हैं जिनके नाम उनकी रचनाओंके अध्ययनसे ज्ञात होते हैं। बादशाह अकबरके समयमें भानुचन्द्रगणीके शिष्य श्री सिद्धचन्द्र गणी शतावधानी थे। उन्होंने अपनी प्रतिभासे अवधानके किन प्रयोगोंका प्रकाशन किया—यह यद्यपि ज्ञात नहीं होता, तथापि उनकी बहुश्रुतताके प्रमाण उनकी रचनाओंसे अवश्य उपलब्ध होते हैं। इसी प्रकार जैन-सिद्धान्त-कौमुदीके रचयिता श्री रत्नसूरिका नाम भी उल्लेखनीय है। इस परम्परामें मुनि सुन्दरसूरि विलक्षण प्रतिभावान् थे और वे सहस्रावधानीके रूपमें प्रख्यात हुए हैं। साहित्य की विभिन्न धाराओंमें अविरल ज्ञानधारा बहाने वाले मुनि सुन्दरसूरिका रचना सौष्ठव बहुत ही मनोज्ञ है। व्याख्या साहित्य, स्तुति साहित्य, चित्र काव्य एवं आधुनिक ज्ञानके क्षेत्रमें इनकी देन महत्वपूर्ण मानी जाती है। "राजानो ददते सौख्यम्" इस वाक्यके आठ लाखसे भी अधिक अर्थ करनेका गौरव भी उन्हींको प्राप्त है।

श्रीमद् रामचन्द्र और मुनि संत बालजी आदिकी शतावधान-प्रवृत्तिने गुजरातमें प्रचार-प्रसार पाया। श्री धीरजलाल टोकरशी शाहने सन् १९३५ के सितम्बर मासकी २० तारीख को बीजापुर जैन संघके समक्ष अपने १०० अवधान पूर्ण कर शतावधानी विरुदको प्राप्त किया। सरस्वतीके इस वरद पुत्रने अवधान कलाको वस्तुतः कलाके रूपमें समाजके समक्ष प्रस्तुत किया और 'स्मरण-कला' नामक पुस्तक के माध्यमसे स्मृति-रहस्यको प्रकाशित भी कुछ अंशोंमें किया। आज उनकी इस कलाका विकास उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। उन्होंने

आचार्य श्री कीर्तिचन्द्र सूरि, प्रवर्तक मुनि श्री जयानन्द विजयजी, मुनि श्री धनराजजी स्वामी, मुनि श्री श्रीचन्द्रजी स्वामी तथा आचार्य श्री प्रेमसूरि महाराजकी शिष्य परम्परामें अवधान प्रयोगोंकी परम्पराको सुरक्षित रक्खा है, तथा लोक समूहको इस विद्याकी ओर आकर्षित करनेमें स्मरणीय कार्य किया है। साध्वी श्रीनिर्मल श्रीजीके कलकत्तामें हुए अवधान प्रयोग तथा आचार्य श्री तुलसीकी शिष्य परम्परामें मुनि श्री नथमलजी, मुनि श्री नगराजजी और श्री महेन्द्र मुनि प्रथमके अवधान प्रयोग भी इसी परम्परामें आते हैं। राष्ट्रपतिजीके समक्ष जब अवधानोंका प्रयोग किया गया था, तथा भारत का सम्भ्रान्त मनीषि वर्ग उसमें सम्मिलित हुआ था तब इस विद्याके गौरवका वर्णन करते हुए डा० राजेन्द्रप्रसादजीने कहा था कि भारत की प्राचीन विद्याओंका जो महत्व दिग्दिगन्त तक व्याप्त हुआ था वह ऐसी ही विद्याओंका प्रभाव था। शतावधान वस्तुतः एक कला है, किसी मन्त्र तन्त्र अथवा अन्य रहस्योंसे आक्रान्त नहीं।

आज संस्कृत भाषाके अध्येताओंकी न्यूनता है। प्राचीन पाण्डित्यके सम्पादनका न तो अवसर है, न प्रकाशनका ही। इसलिए अवधान की पूर्व परम्पराको परिष्कृत करते हुए श्री धीरजलाल भाईने एक नया मोड़ दिया है, जिसे उनकी अपनी सूझ कहा जा सकता है। वे अवधानके प्रयोगोंमें गणित सिद्धिके विशिष्ट प्रयोगोंको भी प्रस्तुत करते हैं। इनकी अवधान प्रक्रियाओंमें पंचेन्द्रिय ज्ञानावधान एक विशिष्ट प्रक्रिया है जिसमें एककालावच्छेदन वे नेत्रसे देखते हैं, कानोंसे सुनते हैं, नासिकासे सूंघते हैं, जीभसे स्वाद लेते हैं और त्वचासे बिना देखे स्पर्श करते हैं और यथासमय प्रश्नकारों को पंचेन्द्रिय ज्ञानसे सम्बद्ध उक्त प्रश्नोंका उत्तर देते हैं। गणितके द्वारा की जाने वाली प्रक्रियाओंमें संख्यावधारण, चित्रस्मृति, वस्तु कथन, शताधिक पुस्तकोंमेंसे किसी एककी पंक्तिका अवधान करके उसे बतलाना, विचित्र निर्णय, प्रश्न शोधन, संस्कृत पद्योंका अदृश्य ज्ञान, अदृश्य घण्टानादके द्वारा उत्तर, जीवनकी कथाओंके अंग विशेषका कथन, सुगध सृष्टि, अंक वेध, अन्नपूर्णा पात्र द्वारा अभीष्ट खाद्य का देना और आकाशपेटिका द्वारा वस्त्र-दान आदि विशिष्ट प्रयोग हैं।

उपसंहार

जैन सम्प्रदायने विद्याके क्षेत्रमें अनेक विधाएं प्रदान की हैं। साधू, मुनिराजोंकी ज्ञान साधनाके फलस्वरूप कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण सृष्टियां हुई हैं कि जिनका साम्य अन्य साम्प्रदायिक साहित्यमें उपलब्ध नहीं होता। धार्मिक साहित्यको यदि हम छोड़ भी दें तो भी ऐसी कितनी ही रचनाएं आज विश्व-साहित्यके सम्मुख प्रस्तुत करने योग्य हैं, जिन्हें देखकर कोई भी मेधावी आश्चर्यान्वित हुए बिना नहीं रह सकता। अवधान कला भी उनकी विद्यानुरागिताका एक उदाहरण है। वेद विद्याके अवधानसे प्रारम्भ हुई यह कला लौकिक विषयों में व्याप्त होती हुई भारतीय विद्वानोंकी अपूर्व मेधा शक्तिका गौरव उपस्थित करती है। इस कलामें न केवल आमोद प्रमोद ही होते हैं परन्तु प्रतिभाके उद्रेकसे उत्पन्न ज्ञानका परिष्कार देखनेसे सामाजिकोंकी मानसिक भूमि भी उन्नत बनती है। आज ऐसी विद्याओंका संरक्षण और पोषण नितान्त आवश्यक है और जैन समाजसे यह आशा की जाती है कि वह इस दिशामें अग्रसर हो।

त्रैमासिक व्यापार दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन, पर्जन्य एवं अर्घकाण्ड वाचस्पति]

कार्तिक मास

कृष्णा १ का क्षय एवं विशाखामें बुधसे रुई रेशम पाट कालीमिर्च सोना चांदी तेलके बीज दाल अन्न तुअर मटर (चवला) चना उड़द मूंग मोठ रमास (लोबिया)) मन्दे। १ बजेसे चन्द्र-भौम युति वायदेमें तेलके बीज गुड़ खांड तेज करेगी। ता० १५ अक्टोबरको विशाखामें बुधका, अनुराधामें शुक्रसे चरणात्मक वेध २।५३ बजेसे आज ही रात तक बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि, सोना चांदीके साथ सभी वस्तुयें मन्दी, शामको ७ १८ बजे भौम-शनि त्रिरेकादश वायदोंमें अच्छी चाल देगा। ता० १७ को सूर्य हर्शल युतिसे पूर्व (मंगलवारमें) श्री सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे वारात् ३ नक्षत्रात् ४ (३० मुहूर्ता-भूखी अवस्था) में बुधसे युक्त भौम से प्रतियोग करते हुये तुला राशिस्थ होंगे। प्रथम सप्ताहमें गुड़ खांडके साथ सभी वस्तुयें तेज होंगी। साथ ही आज शनि वक्री (भौम-शनि दोनों वक्री) विश्वमें अथवा देशमें महोत्पात बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि, तेलके बीज कपासियामें घोर तेजी हो सकेगी। सभी वस्तुयें प्रभावित होंगी। ता० १८ को हर्षल अपनी प्रिय राशि तुलामें आकर अच्छी तेजी करेगा। आज ही ढाई बजे ज्येष्ठामें शुक्र मन्दी का झटका सभी वस्तुओंमें लावेगा। कृष्णा ८ को पुष्य नक्षत्र शुक्रवारा (विषयोग) रुई रेशम पाट ऊन कालीमिर्च तेज करेगा। ता० २१ से मकरांशे शनि-शुक्र तेलके बीज शेयर्सको ता० २४ तक तेजी कर देगा। ता० २३ को जल राशि में वृश्चिके बुध होकर शुक्र+बुधयोग ता० ३० तक यत्र-तत्र बादल वर्षा वायुवेग, गुड़ खांड शक्कर चीनीमें अच्छा मन्दा, अन्य उपर्युक्त सभी वस्तुओंको मन्दा ही करेगा। ता० २५ को दीपावली गुरुवारी भी मन्दीका ही सङ्केत करती है। यथा :—

बुध-गुरुकी जो आय दीवाली।
जीवैं रंक मरै भँडसाली॥

२६ अक्टोबरको श्रवणे गुरु तेलके बीजों के साथ ही हल्दी भी तेज करेगा। शुक्ला १ शनिवारी आगामी आषाढ़ शुक्ला १५ से अन्नादिमें तेजी, मलमास (भाद्रपद) पर्यन्त फिर इससे भी आगे मार्गशीर्ष संवत् २०३१ में भी तेजी होगी। ता० २७ को सूर्य-गुरु केन्द्रसे शेयर्स चांदी सोना सर्वधातु रुई रेशम पाट तेलके बीज अन्नादि वायदोंमें मन्दी लावेगा। ता० ३० को बुध वक्री बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि, शामको धनुर्षि शुक्र होकर राहु+शुक्र योग (भौम-शनि-बुध तीनों वक्री) अन्नादि मन्दे, गुड़ खांड तेज, सोना चांदी सर्वधातु रुई पाट रेशम तेलके बीज लालमिर्च, श्रीफल नारियल घी मन्दे, गुड़ खांडमें मन्दा भी हो सकेगा। आजसे चली लाइन ता० ५ को बदलेगी। ता० ४ को बुधास्त पश्चिममें पुनः बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि होगी। ३१ अक्टोबरको शुक्ला ५ बुधवारी मूल संयोगी अन्नादिमें कृत्रिम तेजीका भीषण चमत्कार भी प्रत्यक्ष हो सकेगा। चलती लाइनका उपयोग

करना उचित होगा। ता० ६ को सायं शुक्र-राहुयुति ता० ७ को सभी वस्तुयें मन्दी करेंगी। ता० १०को सायं सूर्य-बुधकी अन्तर्युति १ सप्ताह पूर्वसे सभी वस्तुओंमें मन्दीका धमाका भी ला सकेगी। कार्तिकी पूर्णिमा शनिवारी भरणी संयोगी आगे तेजी लावेगी।

मार्गशीर्ष मास

इस मासमें ५ रविवार घी तेल कपड़ामें तेजी, अग्नि-भय व रोगोपद्रव करेंगे। ता० १३ को शनि+चन्द्रसे भी सभी खाद्य वस्तुओंको मन्दा करेगा। १६ नवम्बरको गुरुवार पुष्य नक्षत्रमें (शुक्रवारको सूर्योदयसे पूर्व) श्री सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे वारात् ३ नक्षत्रात् ४,३० मुहूर्ता भौमसे संदृष्ट बुध-शुक्रके मध्य होकर वृश्चिक राशिस्थ होंगे, फलतः सभी खाद्य वस्तुओंके साथ तेलके बीज (सींगदाना) एक मासमें समान या मन्दे होते जावें आश्चर्य नहीं। गुड़ खांड सोना चांदीमें तेजी आ सकेगी। ता० १७ को पूर्वोदयी बुधसे बादल वर्षा वायुवेग ता० १५ को चली लाइनको आज बड़े जोर-शोरसे बदल देगा। भूसा-चारा ग्वार जई खली कपास सभी अन्न तेलके बीज तेज करता है। प्रजामें आन्दोलनकी भावना जाग्रत होगी। ता० १९ की रातको मूल ४ चरणे केतु रुई रेशम पाट ऊन कालीमिर्चमें तेजीकी लाइन देगा। तेलके बीज दाल अन्नादिमें भी तेजी होगी। ता० २० को ३ बजे वक्री भौमकी हर्षल से अंशात्मक प्रतियुति (दृष्टि) से महान् दुष्कांड हाहाकार, सोनासे मिट्टी पर्यन्त सभी वस्तुओंमें जबर्दस्त तेजी या मन्दी करेगा। आज रातको मार्गी बुधसे बादल वर्षा या शीतवृद्धि वायुवेग, ता० १७ को चली लाइन ता० २१ को टर्निङ्ग प्वाइण्ट देगी। ता० २२ को कृष्णा १३ में उ०प्र० पञ्जाब राजस्थान म०प्र० में पहाड़ों पर गिरने वाली बर्फका प्रभाव मन्दीका होगा। रातको गुरु-नेपच्यून त्रिरेकादश कल तेजी करेगा। ता० २३ को चली लाइन ता० २६ को बड़े जोर-शोरसे टर्निङ्ग प्वाइण्ट देगी। ता० २२।२३ को चन्द्र-बुध योग शेयर्स चांदी जस्ता तेलके बीज तेज करेगा। कृष्णा १४।३० को सूर्य चन्द्रमा बादलोंमें ही रहें तो पूर्वोल्लिखित क्षेत्रोंमें ४ मास बाद भयानक मन्दीकी आशा करनी चाहिये। कृष्णा ३० शनिवारी सभी वस्तुयें तेज करेगी। ता० २६।२७ को मार्गी भौमसे बादल वर्षा वायुवेग या शीतवृद्धि, पशु मशीनरी सामान रुई रेशम पाट ऊन कालीमिर्च तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नादि ज्वार बाजरा मक्का मूंग मोठ उड़द रमास (लोबिया) तूअर मटर (बटला) सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल किराणामें लालमिर्च कत्था चपड़ा लोंग सुपारी हिल केडियम आदिमें अच्छा मन्दा आ सकेगा। किन्तु ध्यान रखिये, ता० २३ को चली लाइन आज बदल भी सकेगी। साथ ही विश्वमें विचित्रता नेताओंका पतन वा अवसान भी हो सकेगा, तत्स्वभावानुसार तेजी-मन्दी भी चल पड़ेगी। ता० ३० को मकरे शुक्र होकर जलराशिमें गु.+शु योगसे पूर्वोल्लिखित क्षेत्रोंमें यदि अच्छी वर्षा होगी तो सभी वस्तुओंमें अच्छी मन्दी, अन्यथा ओलापात पाला वायुवेग का दौर चला तो तेजी, यह योग युद्धादिकाण्ड तो कभी शीतको एकदम घटा भी देता है। ३ दिसम्बरको शुक्र-हर्षल केन्द्र सोना चांदी शेयर्स तेलके बीज मन्दे करेगा। दिसम्बर मास में जाड़ा कम पड़े तो शीतकालमें श्रेष्ठ वर्षा, जाड़ा अधिक पड़े तो वर्षा नहीं होती। ता०

६ की रातको भौम-हर्षल (दोनों मार्गी) की अंशात्मक प्रतियुति (दृष्टि) से महान् दुष्काण्ड, २० नवम्बरसे विपरीत चाल देगी। चतुर्दशी परतः पूर्णिमा रविवारकी अन्तिम रात्रिमें १० दिसम्बरको (सोमवारको सूर्योदयसे पूर्व) ६।३९ बजे प्रातः से खण्डग्रास ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण रोहिणी नक्षत्र वृष राशि पर पड़ेगा, किन्तु काशी से कालीकट पर्यन्त भारतके मानचित्र पर रेखा खींचने पर पूर्वी क्षेत्रोंमें ग्रहण नहीं होगा। चांदी पोस्ता (दाना खसखास) अफीम गुड़ खांड रुई पाट रेशम कालीमिर्च १५ दिन पहले से बेचो। मन्दीमें खरीदनेसे पाँचवें मासमें लाभ होगा। ग्रहण पर बादल हों कि दिखाई ही न दे तो सभी खाद्य वस्तुओंमें निश्चित रूपसे मन्दा ही आता है, परीक्षित है।

पौष मास

कृष्णा १ के क्षयसे सभी खाद्य वस्तुयें मन्दी, १३ दिसम्बरको श्रवणे शुक्र होते ही इस नक्षत्र में गुरुसे योग तेलके बीज गुड़ खांड दाल अन्नादि सोना चांदी सर्वधातु रुई पाट ऊन रेशम कालीमिर्चमें अच्छा मन्दा आ सकेगा। १५ दिसम्बरकी रातको ७।५० बजे श्री सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे वारात् ३ नत्रत्रात् ४ (३० मुहूर्ता) राहुसे युक्त शनिसे प्रतियोग करते हुये धनुः राशिस्थ होंगे, जो रुई रेशम पाट ऊन कालीमिर्चको प्रायः एक मास तक मन्दा करते रहेंगे। सोना चांदी तांबा जस्ता पीतलमें तेजी भी सम्भव है। ता० १६ की रातको पूर्वमें बुध अस्तसे उ०प्र० पञ्जाब राजस्थान म०प्र० में बादल वर्षा वायुवेग करेगा तो सभी खाद्य वस्तुओंमें अच्छी मन्दी। रुई रेशम ऊन काली-मिर्च सोना चांदी सर्व धातुमें तेजी सम्भव है। ता० २१ को दक्षिणी हिन्दमें अस्त ता० १६ को चली लाइनको यहां बदल देगा। कृष्णा या शुक्ला ६ वा एकादशीको उपर्युक्त क्षेत्रोंमें प्रातः पूर्वमें मेघ गर्जन अथवा वर्षा रहित पश्चिमी वायु जोरसे चलेगी तो उस क्षेत्रमें खेतीका नाश होकर सभी खाद्य वस्तुओंमें तेजी का विचित्र चमत्कार हो सकेगा। यहांसे गुरु शीघ्री (शनि वक्री चल रहा है) सभी वस्तुओं में तेजीकी लहर आ सकती है। कृष्णा १३ शनिवारी तो तेजीकारक होती ही है। पौष कृष्णा ३० (कुहिया अमावस) सोमवारी सोम-वती मूल संयोगी संवत् २०१०।१३।२७ की भांति इस वर्ष भी आवेगी जो आगामी उपज को निश्चित रूपसे श्रेष्ठ बनावेगी। अविश्वासियों को चुनौती है, अन्यथा समय तो बता ही देगा। साथ ही आगामी माघ शुक्लामें किसी महान् नेताका निधन अथवा महोत्पात होते ही सभी वस्तुओंमें खतरनाक मन्दी भी आ सकेगी, परीक्षित है।

पौष शुक्लामें दक्षिणी वायुसे पूर्वोल्लिखित क्षेत्रोंमें अच्छी वर्षा होती है। पूर्वी वायु अन्नादि में कीड़ा लगा देती है। शुक्ला २ को बुधवारा (४५ मुहूर्ता) उत्तरशृङ्गी मोटा चन्द्रोदय, शुक्ला २ बुधवारी, शुक्ला ५ की वृद्धि परतः षष्ठी रविवारी, शुक्ला ६ परतः दशमी गुरु-वारी देशी घीमें मन्दा आ चुका हो तो खरीदें, अन्यथा सभी वस्तुओंमें मन्दी आजाने पर मन्दी में घी खरीदनेसे आगे लाभ होगा। पौष व माघ शुक्लामें दिनभर वायु चलकर शामको बन्द होते ही उसी रातमें उ०प्र० पञ्जाब राज-स्थान म०प्र० में पाला भी पड़ता है जो तेजीका कारण बना देता है। ता० ३१ को कर्कांशे गुरु-बुध कल तक उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा लावेंगे तो सभी खाद्य वस्तुओंमें मन्दा ही होगा। सन्

१९७४ का प्रारम्भ सोमवारको होनेसे सर्वत्र महिलाओंका वर्चस्व बढ़ेगा । शुक्ला ८ को रेवती नक्षत्र गुड़ खांडमें मन्दीकारक है, साथ ही अन्नादिका स्टाक करनेकी राय नहीं देता । ३ जनवरीको शुक्र बक्री बादल वर्षा वायुवेग शीत वृद्धि, बंगला देशके नगर ढाका पावना बगुडा राज्यशाही फरीदपुर विदर्भ (बरार-खानदेश-हैदराबाद-मध्यप्रदेशका कुछ भू-भाग कर्नाटक प्रान्तोंकी प्रजा व नेतागण पर संकट । चाँदी सोना तेलके बीज रुई पाट रेशम ऊन कालीमिर्च सूत कपड़ा गुड़ खांडमें तेजी अन्नादि में मन्दी सम्भव है । चलती लाइनका उपयोग करें । ता० ५ शुक्ला १२ का क्षय, दैनिक तेजी करेगा । ता० ७ ८ को शनि+चन्द्रयोग तेलके बीज शेयर्स तेज करेगा । पौषी पूर्णिमाको उपर्युक्त क्षेत्रोंमें जहां भी बादल रहेंगे वहां आगे मन्दीकी आशा करनी चाहिये । लाभ हानिका पूर्ण उत्तर-दायित्व अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थितिको देखते हुये अपनी शक्तिके अनुकूल कार्य करें ।

राष्ट्रीयकरण—की हवा १९७३ के प्रारम्भमें उड़ते ही चीनीके स्थान पर गेहूँका होगा, जानकर तथा नोट कैन्सिल होनेकी अफवाहसे व्यापारियोंको नम्बर दो का कालाधन सोनेके साथ अन्य वस्तुओंमें लगानेका अवसर मिल रहा है । सन् ३९।४० में करैन्सी नोट ३ अरबके थे जो अब ५५ अरब ८० लाख हो जाने से जनताके पास ब्लैक रिश्वत (सेलटैक्स-इनकम-टैक्स) की बचतके काले धनने प्रत्येक व्यक्तिको प्रत्येक वस्तु संग्रहकी होड़से वस्तुओंके भावों को आसमान पर रख दिया है । करैन्सी नोट की अधिकता रेजगारीको भी अप्राप्य किये रहती है । बेजीटेबिल अलोप हो जानेके कारण देशी घी भी खूब ऊंचे भावों गया । गेहूंके भावों से उ०प्र० में चना मटर (बटला) दूने भाव, ज्वार बाजरा मक्का सवाये डयोढ़े मूल्य पर बिक रहे हैं ।अतः कृषक पशुओंको गेहूँ ही खिलाता है जो. इसकी कमीका कारण है । दालोंके राष्ट्रीयकरणके भयसे तुअर (अरहर) चना मटर (बटला) काफी ऊंचे बढ़ते ही जा रहे हैं । चीनीके भाव राष्ट्रीयकरणके भयसे शान्त हैं । संवत् २०३० रुद्र विंशतिका अन्तिम क्षय संवत्सर सभी वस्तुओंका क्षय दिखा रहा है । क्या गेहूँ बोवनी कम न होगी ? अभी न जाने और क्या-क्या क्षय होगा ? भगवान ही जाने ।

[पृष्ठ ४४ का शेष]

हैं। कभी कभी तो बड़े बड़े थालोंमें मिष्ठान्न और फल भरकर अफसरोंके यहां भिजवाते रहते हैं। मैं देखकर हैरान था कि ये इतने झंझट पीछे लगाये कौनसे आनन्दका अनुभव कर रहे हैं? अन्तमें हमने एक दिन पूछ ही लिया तो खुल पड़े—

"मेरे तो सारा गांव ही पीछे पड़ा है।"

"क्यों?" मैंने सान्त्वनाके स्वरमें कहा।

"न जाने क्यों? मेरी इनसे पूर्वजन्मकी दुश्मनी है।"

मैं उनके इस उत्तरसे सन्तुष्ट न हुआ, मुझे एक श्लोक याद आया—

सुखस्य दु:खस्य न कोऽपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमान:,
स्वकर्म सूत्रे ग्रथितो हि लोक:॥

अर्थात् सुख और दु:ख स्वत: उद्‌भूत होते हैं। इसलिये दूसरोंको दोष देना व्यर्थ है। अपने कर्मोंसे ही मित्र और शत्रु बनते हैं।

उन्होंने कहा—यदि इनसे एक बार पिंड छुट जाये तो नया खाता नहीं डालूंगा। मैंने एकमुखी हनुमत् स्तोत्र तथा यंत्र लिखकर दिया। जगदम्बाकी कृपासे उनका उद्धार हो गया। वे मुक्त होकर आजकल बम्बईमें स्वतन्त्र व्यवसाय कर रहे हैं। मेरे पास कभी कभी पत्र आते रहते हैं।

त्रैमासिक राशिफल विमर्श

[लेखक :—श्री पं० कैलाशनाथ उपाध्याय ज्योतिषी]

कातिक मासका राशिफल

१३ अक्तूबर से १० नवम्बर १९७३तक

मेष—मासारम्भमें सप्तमस्थ सूर्य एवं दशवें नीचके बृहस्पति भाग्योन्नतिमें बाधक हैं। स्वास्थ्यमें पीड़ाकारी योग रहेंगे। मानसिक गुप्त शक्तियोंके आश्रयसे आप पारिवारिक सुखका आनन्द नहीं ले सकेंगे। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। अध्ययनमें सफलता मिलेगी आकस्मिक हानि, व्यर्थ-खर्च और छिपे शत्रुओंसे सतर्कता बरतें। पहली नवम्बरसे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ संभल जायेगी, साधारण आमदनी का जरिया बना रहेगा।

वृष—मासफल अशुभ है। आपकी कल्पना शक्ति बढ़ जायेगी। रोज नये-नये किस्मके विचित्र स्वप्न देखेंगे। आपका मस्तिष्क बहुत-सी उलझनोंमें उलझा रहेगा। कठोर कर्मोंमें चिन्ताकी प्रवृत्ति अच्छी रहेगी। स्वास्थ्यके लिए पीड़ाकारी प्रभाव दिखाई देंगे। मानसिक वेदनाएं लगी रहेंगी। महत्वपूर्ण कार्योंके सम्पादन में विघ्न-बाधाएं आयेंगी। विद्यार्थियोंको बौद्धिक विकासका मौका मिलेगा। तीसरा-चौथा सप्ताह कुछ उत्तम रहेगा।

मिथुन—आपकी राशि पर शनिदेव वक्री हो रहे हैं, यह वाहन-दुर्घटनाका सूचक है। यह मास सावधानीसे बिताये जाने योग्य है। कानूनी मामलोंमें अधिक दिलचस्पी रखना ठीक न रहेगा। सन्तानको पीड़ा होगी। कर्ममें आलस्य रहेगा और मनमें विविध चिन्ताएं लगी रहेंगी। आर्थिक संकटोंका भयंकर रूपसे सामना करना पड़ेगा; मध्यम श्रेणीके व्यक्ति दो वक्त रोटीको परेशान रहेंगे। महिलाओंको कमर और पेटकी संभावना रहेगी।

कर्क—मासफल साधारण है। स्त्री-सुख उत्तम होगा। व्यापारकी स्थितिमें सुधार होगा। विविध प्रकारके विवादोंमें सफलता मिलेगी। क्रूर बुद्धिका आश्रय लेकर आप अपना कार्य करेंगे। दिलो-दिमाग काबूमें न रहेगा। नौकरी वालोंकी आर्थिक व पारस्परिक स्थिति ठीक रहेगी। आदित्य-हृदय-स्तोत्रका पाठ करना शुरू कर दें तो २८ अक्टूबरसे आपकी मानसिक परेशानी दूर हो सकती है। भूना चना और गुड़ बन्दरोंको खिलाना चाहिये।

सिंह—मासफल शुभ है। सावधानी पूर्वक आप प्रगतिके पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। शत्रु नष्ट होंगे। भाग्योन्नतिके मार्गमें आने वाले विघ्न दूर होंगे। घरेलू जीवनमें अधिक रुचि होगी। शुभ समाचारोंकी प्राप्ति होगी। घरकी आवश्यकताएं बढ़ेंगी। प्रथम सप्ताह शरीर कष्टका सूचक है। दूसरे सप्ताहमें मेहमानोंका आगमन होगा, उन पर खर्च करेंगे। शुक्लपक्षके दिन धन-लाभके लिए तथा व्यावसायिक सफलता हेतु अच्छे रहेंगे।

कन्या—अष्टमस्थ वक्री मंगल सतर्क रहने की चेतावनी देता है। उपासनामें अधिक आकर्षण हो तो उत्तम है। वाणीमें कठोरता आ जायेगी। दिल बेचैन रहेगा। विद्यार्थी

और महिलाएं यात्रा करेंगी। व्यापारिक कामों में साधारण लाभ होता रहेगा। नेताओंको भाषण देनेका अवसर मिलेगा। काला व्यापार वाले भारी हानि उठावेंगे। नौकरी पेशा वाले खर्चकी अधिकतासे खूब परेशान होंगे। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रक्खें।

तुला—जन्मराशि पर नीचस्थ सूर्य एवं सप्तमस्थ वक्री मंगल रोजी-रोटीके लिए बाधक है। व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य पर प्रभाव अच्छे नहीं रहेंगे। वाद-विवादमें विशेष रुचि रहेगी। कौटुम्बिक एवं मित्रोंके मेलजोलमें विरोध होगा। एकाग्रताका अभाव रहेगा। घरेलू झंझटोंसे हृदय कलुषित रहेगा। विज्ञान के छात्र दुर्घटनाग्रस्त हो सकते हैं। व्यापारियों को चौथा सप्ताह श्रेष्ठ है। 'दुर्गा-कवच' के पाठसे आप अपनी उलझनें दूर कर सकते हैं।

वृश्चिक—मासफल साधारण है। ज्वरकी आशंका रहेगी। चित्तमें उद्वेग, सन्तान सम्बन्धि-उलझनें, कुटुम्बमें विवाद और विदेशोंसे नुकसानकी संभावना होगी। व्ययकी प्रधानतासे मन खिन्न रहेगा। काला-धन्धा और सट्टा-जूआ से बचकर रहना जरूरी है। साधारण स्थिति के महानुभाव भगवान पर भरोसा रखकर छोटा-मोटा कारोबार करें तो कोई हानि न होगी। प्रथम सप्ताह कष्टप्रद है, चतुर्थ सप्ताह में लाभ होगा, शेष दिन मध्यम है।

धनुः—मासफल मध्यम है। सम्मानके लिए समय उत्तम रहेगा। विविध धन-धान्य-वस्त्रादिके खरीदनेमें रुचि लेंगे। स्त्री-पक्षसे प्रसन्नता मिलेगी। व्यय अधिक होगा। आपके शत्रु बढ़ेंगे। सहयोगियोंके सम्पर्कमें सावधानी रक्खें। मोटे व्यापारी संचित सम्पत्तिकी हानि उठाते देखे जायेंगे। विद्यार्थी और महिलाओंका बौद्धिक विकास, प्रतियोगितामें सफलता, सामाजिक सेवाओंमें रुचि तथा मनोरंजक कार्यक्रम हस्तगत करेंगे।

मकर—मासफल अशुभ है। स्वास्थ्यमें पीड़ाकी आशंका है। मनमें विरोधी भावनाओं का संचार होगा। सन्तान-पक्षसे कुछ उलझनें भी रह सकती हैं। क्रोधकी मात्रा अधिक रहेगी। टेक्नीकल विषयोंमें आपकी दिलचस्पी सफल होगी। दिमाग काबूमें न रहेगा। राज-नेताओंको जनवर्गसे अपमान प्राप्त हो सकता है। व्यापार मध्यम चलेगा। सामाजिक कार्य-क्रमोंमें सफलता नहीं मिलेगी। कृष्णपक्ष अशुभ है, शुक्लपक्ष मध्यम रहेगा।

कुम्भ—मासफल उत्तम है। मित्रोंसे लाभ एवं उपयुक्त सम्बन्धका अनुभव आपको होता रहेगा। सन्तान-पक्षसे सम्बन्ध भी सुधरेगा और उनके लिए भाग्योन्नतिकारी योग भी मिलेंगे। अध्ययनके क्षेत्रमें पहलेकी अपेक्षा कम सफलता मिलेगी। प्रयास करें तो खर्चमें न्यूनता आ जायेगी। भारी पूंजीके व्यापारी भारी लाभ उठावेंगे। महिलाओंका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। चौथे सप्ताहमें यात्राके योग हैं।

मीन—मासफल सन्तोषप्रद है। वाणीका प्रयोग सफलताप्रद रहेगा। पराक्रमके प्रदर्शन में सफल रहेंगे। शत्रु नष्ट होंगे। धन संचयमें सफल न हो सकेंगे। यदि आप इष्टदेवकी उपासनामें लग जायं तो भाग्योन्नतिका मार्ग दिखाई देने लगेगा। प्रत्येक उलझनोंको ललकार कर अपने आगेसे भगा सकते हैं। घरमें सुख-शान्तिका अनुभव करेंगे, परन्तु खूनकी खराबीसे चर्म-रोग होनेकी संभावना रहेगी।

महामृत संजीवनीके मंत्रका यथा संख्या जप करना-कराना चाहिये ।

मार्गशीर्ष मासका राशिफल
(ता० ११ नवम्बरसे १० दिसम्बर १९७३)

मेष—आपकी राशि पर वक्री मंगल शरीर जायदाद, व्यापार एवं परिवारके सम्बन्धमें अशुभ फल देने वाला है । सामान्यतया विवाद एव स्वास्थ्यमें गड़बड़ीके प्रभावसे आप पीड़ा-ग्रस्त रहेंगे । धर्मम प्रतिकूलताकी भावना उत्पन्न होगी, चित्त व्यथित रहेगा । कमरतोड़ खर्चका बोझ बढ़ेगा । अस्वाभाविक भोग-विलासकी इच्छाओसे दूर रहना ही अच्छा होगा । प्रथम सप्ताहमें स्वास्थ्य खराब, दूसर-तीसर सप्ताहम सघष, चौथा सप्ताह साधारण ।

वृष—शनि मगल एव राहु विशेष कष्ट देने वाले ग्रह हैं । स्त्री-पक्षसे विरोधकी सभावना तथा उदर सम्बन्धी व्याधि एव रक्त-दोषस आपकी पत्नी पीड़ाग्रस्त रहेंगी । स्वयक स्वास्थ्यमे भी पीड़ाकी आशका रहेगी । कष्ट-प्रद खर्च बढ़ेगा । व्यापार-नौकरी मध्यम, भाषण शक्तिमें तीव्रता; शत्रुओंसे कष्ट तथा बाहरकी यात्रामें चोट-चपेटकी सभावना रहेगी । महिलाओंको आजीविकाकी प्राप्ति होनी चाहिये । आपको पक्के लोहेका छल्ला धारण करना ठीक रहेगा ।

मिथुन—मासफल साधारण है । अपने कर्त्तव्यमें विशेष रुचि बढ़ेगी और सम्मान प्राप्तिके लिए उचित अवसर मिलेगा । आध्यात्मिक अनुभवोंकी प्राप्तिके कारण आप कोई अच्छी प्रेरणा प्राप्त करेंगे । दुःस्वप्न और अनिद्रासे पाचन-शक्ति कमजोर होगी । व्यवसाय व नौकरीमें उन्नति-योग है । राजनीतिक महानुभाव वरिष्ठ नेताओंसे सम्मान प्राप्त करेंगे । आशातीत सफलता प्राप्त करनेके लिए मध्यमा ऊंगलीमें लौह-मुद्रिका धारण करना चाहिए ।

कर्क—मासफल मध्यम है । कुछ अतिरिक्त परिश्रम और कार्य बढ़ जायेगा, जिसे आप सफलता पूर्वक निभा लेंगे । दिलो-दिमाग पर पाबन्दी रखना जरूरी है । अनियंत्रित व्यय-भारसे मनमें खिझलाहठ आ जायेगी । पुरुषोंको वीर्य दोष और महिलाओंको माहवारीमें रक्तदोष दीखेगा । नीलम पत्थर धारण करें, यदि सूट कर जाय तो ज्यादा फायदेमें रहेंगे । कृष्ण पक्षमें संघर्ष व शारिरिक कष्ट, तथा शुक्लपक्षमें शुभ समाचारकी प्राप्ति होगी ।

सिंह—मासफल उत्तम है । आर्थिक दृष्टि से शुभकारी समय है, इच्छानुसार अर्थ-लाभ प्राप्त कर सकते हैं । पारिवारिक सुखके लिए उत्तम प्रभाव मिलेंगे । आपकी वाक्शक्तिका विकास होगा । यदि कुण्डलीमें शुभ दशा चल रही हो तो लाटरी-सट्टेसे विशेष लाभ उठा सकते हैं । लोग आपसे खुश रहेंगे । आतिथ्य-सत्कारका अवसर मिलेगा । मामले-मुकदमें आदि चल रहे हों तो सफलताका आसार दिखाई देगा, ३रा-४था सप्ताह श्रेष्ठ है ।

कन्या—मासफल साधारण है । अपने हिम्मतके अनुसार आप अच्छा लाभ प्राप्त कर कर सकते हैं । उच्च वर्गोंके व्यक्तियों तथा देशान्तरके व्यापारसे लाभकारी प्रभाव दिखाई देगा । विद्यार्थियोंको वीर्य-स्खलनसे काफी कष्ट होगा । अनिद्रासे मन अशान्त रहेगा । यश-

प्रतिष्ठा तथा प्रारब्धका विस्तार होगा। नौकरी वालोंको ग्रावश्यक कार्यवश ग्रवकाश लेना पड़ेगा । सट्टा-जूग्रासे बचकर रहना चाहिये । ता० १५,१६,२२,२३,२६,३० नवम्बर छोड़कर शेष दिन ग्रच्छे हैं।

तुला—मासफल मध्यम है। ग्रार्थिक लाभ की ग्राशा बनी रहेगी । ग्रपने कठोर श्रमके ग्रनुसार उद्योग-व्यवसायमें भी तरक्की कर सकते हैं। पुराने मित्रोंसे कलहकी संभावना रहेगी । घर-परिवारके सुखोंका ग्रभाव रहेगा। ग्रनियन्त्रित खर्च बढ़ेंगे। धर्म पर श्रद्धाकी हीनता तथा ग्रशुभ कार्योंमें प्रवृत्ति जगेगी। विद्यार्थियोंके लिए यह मास शुभ है। राजनीतिक व्यक्तियोंकी कुर्सी खतरेमें पड़ सकती है, शनिकी शान्तिका उपाय करना हितकर सिद्ध होगा।

वृश्चिक—जन्मस्थ सूर्य एवं ग्रष्टमस्थ शनि (पिता-पुत्र) का षडष्टक सम्बन्ध स्वास्थ्य-परिवार-धन एवं व्यापारकी दृष्टिसे ठीक फल देने वाले नहीं है। विशेष खर्च ग्रौर ग्रनावश्यक हानिसे दिमाग परेशान रहेगा। बन्धु-बान्धवों एवं मित्रोंसे विरोध बढ़ सकता है। चौथे सप्ताहमें कुछ राहत मिलेगी, फिर भी हनुमानजीकी ग्राराधना ग्रौर 'हनुमान-बाहुक' का पाठ करना कल्याणकारी रहेगा।

धनुः—मासफल साधारण है बने-बनाये कामोंमें विघ्न उपस्थित होगा। सहयोगियोंसे झगड़े-झंझट तथा उदर-रोगसे परेशानी होगी। धर्मपत्नीसे झड़पकी संभावना रहेगी । व्यापार में पूंजी बढ़ानेकी चेष्टा हानिकारक सिद्ध होगी। प्रातः सूर्यको जल दें तथा रात्रिमें नवार्ण-मंत्रका यथा-संख्या जप करें तो दैव-कृपासे ग्रमावास्या बाद ग्रापकी स्थिति सुधर जायेगी, ग्राप प्रसन्न दिखाई देंगे।

मकर—मासफल उत्तम है। मनोरंजन व ग्रामोद-प्रमोदके ग्रच्छे ग्रवसर मिलेंगे। ग्रनिच्छित द्रव्यकी प्राप्ति होगी। व्यवसायमें परिवर्तनकारी ग्रनुकूलताका ग्रच्छा लाभ उठा सकते हैं। यद्यपि घर-परिवारकी ग्रनेक समस्याएं पैदा होंगी, तथापि उससे कोई चिन्ता या हानिकी ग्राशंका न रहेगी। तीसरे सप्ताह में पत्र-व्यवहारसे कोई शुभ समाचार मिलेगा ग्रौर चौथे सप्ताहमें मेहमानों पर ज्यादा खर्च करना पड़ेगा। चौथे सप्ताहमें लाटरीके टिकट खरीदकर भाग्य ग्राजमा सकते हैं।

कुम्भ—मासफल मध्यम है। जहां तक ग्रार्थिक लाभका प्रश्न है, वहां तो ग्राप पूर्णतः सफल रहेंगे, बराबर लाभका मार्ग दिखाई देगा। ग्रापका मस्तिष्क विविध दृष्टियोंसे स्वार्थपरायणतामें ग्राकृष्ट रहेगा। स्वास्थ्यके लिए पीड़ाकारी प्रभाव दिखाई देंगे। विद्यार्थियोंका बौद्धिक विकास नहीं हो पायेगा। महिलाग्रोंके लिए यह मास हर्ष-उल्लास ग्रौर प्रसन्नताकारक है। प्रथम सप्ताहमें गुप्त शत्रुग्रों से सतर्कता ग्रावश्यक है।

मीन—मासफल प्रगतिमें बाधक है। शीघ्र लाभार्जनकी प्रवृत्ति ग्रापके लिए हानिप्रद सिद्ध हो सकती है। साधारणजन कठोर परिश्रम से भी दो वक्तकी रोटीका इन्तजाम नहीं कर सकेंगे। महिलाग्रोंको पारिवारिक कष्टके साथ-साथ पति एवं सन्तानसे चिढ़ रहेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाईसे विमुख रहेंगे किन्तु नौकरी पेशे

वाले तरक्की या स्थानान्तरणका योग प्राप्त कर सकेंगे। इस मासका चौथा सप्ताह कुछ सन्तोषजनक रहेगा।

पौष मासका राशिफल

११ दिसम्बर ७३ से ८ जनवरी १९७४

मेष—मासफल साधारण है। मनमें दीनता एवं नैराश्की भावनाएं जगेंगी। धनका खर्च ज्यादा होनेसे चित्तमें उद्वेगकी भी संभावना रहेगी, परन्तु आपका ध्यान मुख्यतया निजी आवश्यकताओं पर केन्द्रित रहेगा। स्वास्थ्य की स्थितिमें सुधार होगा और कठिन परिश्रम से श्रेष्ठ लाभका अवसर मिलेगा। कानूनी विवादोंमें विजय प्राप्त हो सकती है। शत्रु-पक्ष से पीड़ाकारी प्रभावकी शान्तिके लिएं श्री बगला मुखी देवीका जप करना-कराना श्रेष्ठ होगा।

वृष—अष्टम सूर्य-राहु कष्टदायी रहेगा। मानसिक चिन्ताएं अधिक रहेंगी, स्त्री एवं सन्तान पक्षसे पीड़ाका योग बनेगा। आपका दिमाग एकाग्रता रहित तथा क्रोधयुक्त रहेगा। आपको परिश्रम ज्यादा करना पड़ेगा, आलस्य और थकानसे स्वास्थ्यमें गड़बड़ी उत्पन्न होगी। शत्रुओंका उत्पात बढ़ेगा। श्री हनुमानजीकी आराधना और शनि स्तोत्रका पाठ करें। महिलाएं प्रसन्न रहेंगी। विद्यार्थीवर्ग खूब जम कर अध्ययन करें तो सफल रहेंगे।

मिथुन—यह मास मानसिक परेशानियों का कारण बनेगा। रोजमर्राके खर्चसे ज्यादा दुखी रहेगा। दु:स्वप्न, अनिद्रा और क्रोध रूपी शत्रु कष्ट देंगे। व्यापारी कामोंमें कठोर परिश्रम करने पर साधारण सफलता मिलेगी। महिलाएं स्वास्थ्य-रक्षाकी ओर ज्यादा ध्यान दें। यदि आपकी जन्मपत्रीमें कोई अनिष्ट दशा चल रही हो, तब तो आपको शत्रु-रोग और ऋणसे सतर्कता रखनी आवश्यक है, तथा उचित शान्तिका उपाय करा देना चाहिए।

कर्क—मासफल उत्तम है। स्त्री-पक्षसे सुखकी प्राप्ति होगी और उच्चवर्गीय व्यक्तियों के सम्पर्कमें रुचि बढ़ेगी। अर्थ-लाभका यथेष्ट अवसर मिलेग। आवश्यक वस्तुओंके संग्रहमें प्रवृत्ति बढ़ सकती है, फिजूलखर्चीसे आपको सावधान रहना चाहिये। बुरी भावनाओंका अन्त होगा, आप प्रसन्न रहेंगे। व्यापारिक कामोंमें खूब तरक्की होगी। अरुचिकर खान-पानसे दूर रहें तो स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

सिंह—यह मास रोजी-रोजगारकी दृष्टि से उत्तम है, किन्तु धन-संचयके लिए अनुकूल अवसर नहीं मिलेगा। घरमें सुख-शान्तिका साम्राज्य रहेगा। सट्टे-लाटरीसे दूर रहें तो अच्छा है। शत्रु-परास्त होंगे। स्वास्थ्यमें सुधार होगा। कृष्णपक्षमें लाभदायी यात्राका प्रोग्राम बनेगा। शुक्लपक्षमें अभीष्ट सिद्धि, बौद्धिक विकास, आतिथ्य-सत्कार ऋण बोझसे मुक्ति तथा प्रफुल्ल हृदय होनेका शुभ परिणाम मिलेगा।

कन्या—चतुर्थ सूर्य+राहु एवं अष्टम मंगल अशुभ रहेगा। कर्त्तव्यमें जुटे रहेंगे, परन्तु पर-स्पर विरोधी कार्यकलापोंमें रुचि रहेगी। व्यय की अधिकता बनी रहेगी। आपका मनोबल छिन्न-भिन्न रहेगा। लाख कोशिश करने पर भी घरमें सुख-शान्ति बना नहीं सकेंगे। व्यापार

में न्यूनाधिक सफलता मिलती रहेगी। विद्यार्थी और महिलावर्ग प्रयत्न करके हर काममें सफल रहेंगे। सुन्दरकाण्ड रामायणका पाठ करनेसे बिगड़ता हुआ कार्य बन सकता है। भगवद्‌भजन में मन लगाना जरूरी है।

तुला—मासफल उत्तम है। अपनी पुरुषार्थ शक्तिके अनुसार व्यापारमें कुछ परिवर्तन करके श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करें। शत्रुबाधासे राहत मिलेगी, दूसरे सप्ताहमें भाग्यको चमकाने वाले ग्रहयोग प्राप्त होते हैं, अपने-अपने भाग्य व कर्मानुसार शुभ फल प्राप्त करेंगे। विद्यार्थीवर्ग कुछ अस्वस्थ रहेंगे। महिलाओंको रक्तदोषकी आशंका रहेगी। छोटी-मोटी यात्राएं महत्वपूर्ण सिद्ध होंगी। नौकरी वालोंको उच्चाधिकारियों का समादर प्राप्त होगा। ता० ६-११-१७-२५ छोड़कर शेष सभी दिन शुभ प्रभावयुक्त हैं।

वृश्चिक—स्वतः पुरुषार्थ एवं प्रयत्नसे प्रत्येक वांछित कार्यमें सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। व्यावसायिक विस्तार एवं साज-सजावटका यथेष्ट अवसर मिलेगा। मित्रोंसे विनोद वार्ताएं होंगी। तीसरे सप्ताहके आस पास किसी प्रिय वस्तुके नष्ट होने या खो जानेका भय रहेगा। व्यापारमें आशातीत सफलता मिलेगी। बाल-बच्चोंका सुख साधारण है। चौथे सप्ताह में पदोन्नति, स्थानान्तरण, छोटी-मोटी यात्राएं तथा मनोरंजक कार्यक्रमोंके अवसर प्राप्त होंगे। राजनीति वाले व्यक्ति भारी सफलता प्राप्त कर धन-संचय कर सकेंगे।

धनुः—आपका स्वास्थ्य ठीक न रहेगा। सूर्य+राहु एवं मंगलकी शान्ति करावें। आमदनीके लिए यह समय बाधक है, व्यर्थकी कलहपूर्ण परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। अनावश्यक जोश, क्रोध, खिझलाहट और काम में जल्दबाजी इस मासकी विशेषता है। रोजी-रोटीका प्रश्न बना रहेगा। बाल-बच्चोंकी खुराफातसे कष्ट होगा। महिलाओंका पारिवारिक जीवन दुख और परेशानियोंसे परिपूर्ण रहेगा। शुक्रवारका व्रत रखना शुभ होगा।

मकर-मासफल साधारण है। प्रेम-सम्बन्धमें असफलता, पारिवारिक शोक, द्रव्य-हानि, शरीर अस्वस्थ तथा यात्राके योग हैं। रिश्ते-नातेदारोंकी भलाई करनेमें कहींसे अपयश भी प्राप्त हो सकता है। कामोंमें जल्द-बाजी न करें, वर्ना बना-बनाया काम बिगड़ सकता है। व्यवसायमें साधारण लाभ होगा। शुक्लपक्षकी सप्तमीसे पूर्णिमा तक कोई विशेष महत्वपूर्ण कार्य बनेगा, जिससे आप प्रसन्न रहेंगे।

कुम्भ—यह मास उत्तम है। स्त्री पक्षसे फल कुछ अनुकूल मिलेंगे, परन्तु अभी सर्वथा अनुकूल फलकी आशा नहीं करनी चाहिये। व्यापारकी हालत दुविधाजनक रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। समाजमें मान-प्रतिष्ठा, जन-प्रियता, नवीन वस्त्र धान्यादिकी प्राप्ति तथा कानूनी विवादों पर विजय प्राप्त होगी। विद्यार्थियोंके लिए बौद्धिक विकासका सुयोग है। चौथे सप्ताहमें मित्रोंके बीच बदनामीका भी सामना करना पड़ सकता है। ता० १-५-११ १९-२७ छोड़कर शेष दिन अच्छे रहेंगे।

मीन—मासफल प्रगति एवं अर्थलाभमें सहायक है। आप अपने कार्योंमें सफलता प्राप्त करेंगे। सहयोगीजनोंसे हर्ष रहेगा, शत्रु विनष्ट

त्रैमासिक हाजिर वायदा और शेयर बाजार-भविष्य

[लेखक :—दैवज्ञभूषण श्री पं० हंसराज शर्मा ज्योतिश्चन्द्रमणि]

ता० १३ अक्तूबर १९७३ से ८ जनवरी १९७४ तक

ग्रहयोग

इस अवधिमें सबसे अधिक ध्यान देने योग्य स्थिति यह है कि मंगल ग्रह जो अब तक पूरी शक्तिसे पृथ्वीके निकट आ रहा था, अब दूर होने लगेगा। १७ अक्तूबरको यह निकटतम अर्थात् ४ करोड़ ५ लाख ४८ हजार मीलकी दूरी पर होगा, जब कि २५ सितम्बर १९७२ को २४ करोड़ ४२ लाख मीलकी दूरी पर था, अब १८ अक्तूबरसे पृथ्वीसे दूर हटने लगेगा, (यह रात्रिमें ११ बजेसे प्रातः तक लाल रंगका चमकता अंगारा सा देखा जा सकता है।)

शनि भी निकटतम आ रहा है, जो १५ जूनको ९३ करोड़ ३२ लाख ५५ हजार मीलकी दूरी पर था, अब २३ दिसम्बरको ७४ करोड़ ६९ लाख ७६ हज़ार मीलकी दूरी पर होगा। इस समयमें चन्द्रमा शनिकी युति १७ अक्तूबर, १३ नवम्बर और ११ दिसम्बरको भी इतनी निकटसे होगी कि चन्द्रमा शनिको ग्रस्त कर लेगा और शनि दिखाई देना बन्द हो जाएगा। बृहस्पति भी पृथ्वीसे दूर होता जा रहा है।

शुक्र भी तेजीसे पृथ्वीकी ओर आ रहा है, यह १३ अप्रेलको १६ करोड़ ६ लाख ९१ हज़ार मीलकी दूरी पर था, अब २३ जनवरी १९७४ को केवल २ करोड ५० लाख १४ हज़ार मीलकी दूरी पर आ जावेगा, इसकी चमक भी दिन प्रति दिन बढ़ रही है, और १९ दिसम्बरको चमक अधिकतम होगी, फिर कम होने लगेगी (यह ग्रह सूर्यास्तके पश्चात् पश्चिम में देखा जा सकता है।)

१४ अक्तूबरको शुक्र नैप्चूनकी युति और दूसरे दिन मंगल शनि त्रिएकादश, और अगले दिन सूर्य हर्षलकी युति, २० अक्तूबर मंगल वृहस्पति केन्द्र, २५ अक्तूबर सूर्य मंलगकी प्रतियुति, २८ अक्तूबर सूर्य शनि ट्राईन, ९ नवम्बर शुक्र शनिके सामने, और दूसरे दिन सूर्य बुधकी युति, २९ नवम्बर सूर्य नैप्च्यूनकी युति, ३० नवम्बर सूर्य बृहस्पति त्रिएकादश, २३ दिसम्बर सूर्य शनिकी प्रतियुति, २७ दिसम्बर मंगल शनि त्रिएकादश काफ़ी महत्व-पूर्ण योग हैं।

मंगल जो वक्री है २६ नवम्बरसे मार्गी होगा, परन्तु इस सारी अवधिमें स्वगृही ही रहेगा, बुध ३० अक्तूबरको वक्री होकर २ नवम्बरको अस्त होगा और १५ नवम्बरको उदय होकर १९ नवम्बरको मार्गी होगा, शनि १७ अक्तूबरसे वक्री होगा और सारी अवधिमें वक्री ही चलेगा।

होंगे। व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। व्यापारमें सफल रहेंगे। नौकरी वाले उदासीन रहेंगे। घरेलू कलह बने रहना स्वाभाविक है। राज-नीतिक महानुभाव अच्छी सफलता प्राप्त करेंगे। कृष्णपक्षमें शरीर सम्बन्धी पीड़ा छोटी-मोटी यात्रा तथा शुक्ल पक्षमें उत्तम द्रव्य लाभ हो सकेगा।

इस प्रकार आप देखेंगे कि जहां पहले मंगल विशेष भूमिका निभा रहा था अब शनि निभाएगा और दैत्यराज शुक्र इसको पूर्ण सहयोग देगा, नैप्च्यून भी इसका साथ देता दिखाई देगा।

हाजिर मार्केट

१४ अक्तूबरकी शुक्र नैप्च्यूनकी युति और १७ अक्तूबरको चन्द्रमा शनिकी भेद युति (शनि चन्द्रमा द्वारा ग्रस्त होगा) यह सफेद वस्तु जैसे चीनी, कागज, सफैद कपड़ा, रुई, कपास, घी, वनस्पति, नमक, सफैदा, पलास्टर आदि पर विशेष प्रभाव करेगा, और इनमें अच्छी तेज़ीकी आशा है। बिनौले, सरसों, तिल, मोटर पार्ट, ऊन, निकल किया माल, स्टैपल, सूत कोयला, लकड़ी आदि भी बराबर तेज़ीमें रहेगी। कुछ दालोंमें तेज़ी रहेगी, जैसे अरहर मसूर, चना आदि। परन्तु मूंग उड़दकी दालमें आगे मन्दीकी आशा है, जिससे इनका स्टाक निकाल देना उचित रहेगा। गर्म कपड़े होज़री, कम्बल, शाल आदिकी स्थिति डांवा-डोल रहेगी, यह १६ नवम्बर तक तेज़ रहकर किसी भी समय मन्दीमें चलेंगे, और कुछ वस्तुओंमें तो कमरतोड़ मन्दीकी संभावना है। बिल्डिग मैटीरियल, सीमेंट, ईंट, लोहा, लकड़ी तथा शीशा जिनका प्रयोग नव-निर्मित भवनोंमें होता है, स्थितिमें तनिक सुधार होगा, परन्तु न के तुल्य ही।

बारदाना, जूट, बान, खल, गत्ता, तांबा, रेशमी कपड़ा, ज्वार, लालमिर्च, हल्दी, काली-मिर्चमें अच्छे मन्दीके झटके लगेंगे, परन्तु काली ज़ीरी, धनियां, लौंग, जावित्री, जायफल, केसर, कस्तूरीमें बराबर तेज़ी बनी रहेगी, जो दिसम्बरके प्रथम सप्ताह तक रहकर फिर भाव एकदम नीचे आ जावेंगे। गेहूं, चावल, बाज़रा, मक्का, चनाके भाव पहले मजबूत रहेंगे, परन्तु ९ नवम्बरको शुक्र शनिकी प्रति-युतिके पश्चात् अकस्मात् ही तेज़ीकी आशा है, और यह भी संभव है कि कुछ नगरोंमें इनमें से कुछ वस्तुओं पर प्रतिबन्ध लगे या राशन आदिकी व्यवस्था हो।

वायदा तथा शेयर बाजार

यह अवधि जहां वायदा बाजारमें विशेष महत्वपूर्ण है और कुछ वस्तुओंमें ऊंचे भाव बनेंगे वहां ऐसी स्थिति भी है कि सीधी मन्दी चलेगी और शेयर बाजार तथा सराफा सब जुदा-जुदा चलेंगे। सोना और चांदी भी एक दूसरेसे उल्ट चलेंगे। इस अवधिमें लम्बी लाईन कुछ इस प्रकार रहेगी, थोड़ी सावधानी से इससे अच्छा लाभ उठाया जा सकता है, केवल इतना ध्यान दें कि अधिक वस्तु इसके अनुसार चलेंगी।

१३-१०-७३	से	१७-१०-७३ तक	मन्दी।
१७-१०-७३	से	३०-१०-७३ तक	तेजी।
३१-१०-७३	से	१०-११-७३ तक	मन्दी।
११-१०-७३	से	१९-११-७३ तक	तेजी।
१९-११-७३	से	२५-११-७३ तक	मन्दी।
२६-११-७३	से	३-१२-७३ तक	तेजी।
४-१२-७३	से	१०-१२-७३ तक	मन्दी।
११-१२-७३	से	१९-१२-७३ तक	तेजी।
१९-१२-७३	से	२४-१२-७३ तक	मन्दी।
२४-१२-७३	से	३१-१२-७३ तक	तेजी।
१—१-७४	से	८-१-७४ तक	मन्दी।

इस अवधिमें १४,१७,२१,२५,३० अक्तूबर, ५,९,११,१४.२१,२८ नवम्बर, ३,७,११, १४,१९,२४,२८ दिसम्बर और ४ जनवरी काफ़ी महत्वपूर्ण दिन हैं, इनमें भाव काफ़ी चलेगा।

त्रैमासिक व्यापारिक भविष्यफल

[लेखक :—श्री दुर्गा प्रसाद गुप्त साहित्य विशारद]

कार्तिक मास

बदी १ शनिवार "कातिक मास अँधार पख पडिवाये शनिवार। ए त्रिहुं दुःख कारिया जाणो रौरवकार ॥" एक दुर्भिक्षकारी योग है। इस मासमें नाना प्रकारकी दुर्घटनाओंसे प्रजा को कष्ट होगा। बदी दूजका क्षय मन्दीकारक हैं। आज रुईका भाव मन्दा रहेगा। तीन दिन के अन्दर हर एक वस्तुमें मन्दीका झटका आवेगा। बदी ४ को रुईमें अच्छी मन्दीकी संभावना है। मोटी मन्दी हो तो माल खरीदें। बदी ५ मंगलवारी तुला संक्रांति है, तुलागत सूर्य सोना तेज करता है। अनाज तथा हाथियों में भी हानि होनेसे तेजी आती हैं। मंगलवार होनेसे काँगनी, चावन, चौला मन्दा परन्तु कुलथीकी तेजी हो। यह फल २७ अक्तूबरसे ५ नवम्बर तक होगा। आज गुड़, खांड, रुई, कपास, सूत, सन पाट तेज रहेगा। बदी ६ को शनि वक्री होगा। आर्द्रा नक्षत्रमें शनिका वक्रत्व अनावृष्टि भयानक दुर्भिक्ष, भय तथा मित्रोंसे विरोध कराने वाला होता है। बदी ७ ज्येष्ठायां शुक्रः गल्ला, अलसी, सरसों, तिल, तैलमें तेजी होगी। रुई, कपास, सूत, सन, खाण्ड, चावल मन्दा। पांच वर्षकी आयुके बालकोंको रोग होगा। बदी ८ पुष्य नक्षत्र चांदी तेज करेगा। यह एक चांस है। आज सोना, रुई, कपास, रेशम, तेल मूंगफली गुड़ गेहूं मन्दा रहेगा। बदी एकादशी :—चांदी रुई नमक लाख चपड़ामें मन्दीका रुख रहेगा। वृश्चिके बुध: घी तेल तिलहनमें तेजी करेगा। त्रयोदशीको श्रवणे गुरु अलसी तेज करेगा। चांदी, सोना, रुई सूत, कपड़ा, गुड़, तेलके बीज, चना तथा हल्दी मन्दी। बदी चतुर्दशी गुरुवार रात्रिको महालक्ष्मी पूजन होगा। बदी ३० शुक्रवारको गौवर्धन पूजा है।

सुदी एकम—शनिवार रुई तेज होगी। इस पक्षमें जनरल लाईन तेजीकी रहेगी। सरसों, तिल तेल, गुड़ तेज। सुदी २ का चन्द्रोदय रस कस तेज करने वाला है। सुदी ३ को बुध वक्री होकर बाजारकी लाईन पलट देगा। गुड़ खाण्डमें तेजी और अनाज मन्दा रहेगा। यहाँ मंगल, बुध, शनि तीनों ग्रह वक्री हैं अतः कई वस्तुओंमें मन्दीकी लाईन बनेगी। आज सोना चांदी ताम्बा पीतल खाण्ड, मिर्च गोला घी गेहूंका भाव मन्दा रहेगा। सुदी ४, सोना चांदी, ताम्बा, रुई, अनाजमें तेजी। धनुःका शुक्र खेतीमें हानि करेगा। सुदी ५ अलसी, सरसों अनाजमें एक दम तेजी लायेगी। सुदी ८ सरसों, अलसी, अरण्डी, तिलहन, लोहा, जस्ता, तेज। रात्रिको पश्चिममें बुधका अस्त अनाज तथा चांदीमें तेजी लायेगा। सुदी १० बाजारमें मन्दीका रुख रहेगा। सोना चांदी रुई कपास जूट बारदाना जौ गेहूं अरहर मटर ज्वार गुवार मन्दा। रात्रिको विशाखाका सूर्य सोना चांदी गुड़ रुई सूत प्रामेसरी नोट शेयर्स तेज करेगा। सुदी द्वादशीकी रात्रि निर्मल रहे—बादल न हों तो श्रेष्ठ है। आज सोना, चांदी, कांसी, पीतलमें अच्छी मन्दी होगी। सुदी पूनम शनिवारी तेजी करेगी। आज आठ दिनकी तेजी लगा दें। भरणी नक्षत्र दुर्भिक्ष कारक है। आगामी मासोंमें तेजीको बल

मिलेगा। कृत्तिका न होनेसे संवत्का एक स्तम्भ टूट गया है। व्यतिपात योग रुई मन्दी करेगा।

इस मासमें शनि मंगल दोनों वक्र रहेंगे। बिनोलामें भयंकर तेजीकी संभावना है।

मार्गशीर्ष मास

बदी १ रविवार, इस मासमें पांच रविवार हैं, कपड़ा, घी, तैल, का भाव तेज होगा। अग्नि भय तथा रोगोंसे प्रजामें कष्ट होगा। बदी २ रुई, कपास, पाट, बारदाना, सूत, सन्, गल्ला, गेहूं जौ चना, सोना चांदी मन्दा रहेगा, पू०षा० का शुक्र मन्दीको बढ़ावा देगा। बदी ३ को बाजार मन्दीमें खुलेगा। और घटबढ़ होते हुए तेजीमें बन्द होगा। बदी ५ का क्षय सभी खाद्य वस्तुओंमें मन्दी लायेगा। परन्तु साथ ही प्रजामें उपद्रवकी सूचना भी है। वृश्चिक संक्रांति गुरुवारी गुड़ खांड शक्कर लाल रंगके पदार्थ लाल मिर्च, गेहूं, गेरू सरसों, अलसी, मसूर, घी तेज करेगी। गाय भैंस बैल ज्वार बाजरा अरहर मन्दा। सर्दी अधिक, रोगोंका उपद्रव। लाल रंगके पदार्थ संग्रह करके छः मास पीछे बेचनेसे लाभ होगा। बदी ७ शुक्रवारी रुई आदि सफेद वस्तुएं चावल, चांदी, चीनी, खाण्ड, सूत, सन तेज करेगी। पूर्वमें बुधका उदय रुई, कपासमें घटबढ़ करेगा। उत्पात एवं आन्दोलनसे प्रजाको कष्ट होगा। बदी १० अनुराधाका सूर्य सब प्रकारके शेयर्स अन्न गेहूँ गुड़ तेज करेगा। आज भावोंमें घटाबढ़ी रहेगी। बदी ११ को बुध मार्गी होकर बाजारकी लाईन पलट देगा। बदी त्रयौदशीको औला बर्फ तुषारादि पड़ना सुभिक्ष कारी है। बाजार मन्दा रहेगा। बदी चौदशको मंगल मार्गी होगा। रुईमें अच्छी मन्दीका चांस है। गाय बैल भैंस आदि पशु तेल और तेल के बीज मन्दे होंगे। झगड़े फिसाद बढ़ेंगे। आज स्वाति नक्षत्र है। आगे श्रावणमें वर्षामें कमी करेगा। नोट कर लें। अमावस्या शनिवारी तेजीकारक है। आर्द्राके प्रथम चरण पर शनि, आगे टिड्डीदलसे खेतीमें हानि होगी।

सुदी २ उ०षा० का शुक्र अलसी, अरण्डी तेल तिलहन मन्दा करेगा। रुईमें जोरदार घट बढ़। विशाखाका बुध अन्न जौ, गेहूँ चणा बाजरा आदि मन्दा करेगा। आज ही चंद्रदर्शन होगा। सोमवारा चंद्रदर्शन एक मासमें अन्न तेज अथवा किसी राज्यमें मंत्री-मंडल भंग करेगा। सुदी ३ की वृद्धि मन्दी कारक है, मूंग, उर्द मोठ आदि दाल अन्न और घी मन्दा रहेगा। सुदी ४ गुड़, खाण्ड, चीनी, चावल, चना गेहूं मन्दा। रात्रिको मकर राशि पर शुक्र खेतीका नाश करता है और अनाज मंहगा होता है। यहां शुक्र बृहस्पतिसे राशि योग करेगा। वर्षा अथवा युद्धकी घटायें घहरायेंगी। चांदी सोना सूत सनमें घटबढ़से तेजी। गुड़ गेहूंमें तेजीका चांस है। सर्दी बढ़ेगी। सुदी ६ श्रवण नक्षत्र की वृद्धि, अन्न तथा गुड़ खाण्डमें मन्दीका झटका आयेगा। सुदी ७ ज्येष्ठायां रविः सोना, चांदी, रुई, सूत, कपड़ा गल्ला तेज, करेगा। खांसी जुकाम रोग बढ़ेगा।

सुदी ९—बृश्चिकका बुध घी तेल तेज, गल्ला मंदा करेगा। सुदी ११ रुई मंदी रहेगी, सोना चांदी अन्न जौ गेहूं चावल भी मन्दा, सुदी १४ तक कोई विशेष योग नहीं है। आज रातको ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण प्रातः ६॥ बजे आरम्भ होगा और आठ बजे स्पष्ट हो जायेगा, इसका फल राजाओं पर संकट और अन्नमें तेजीकारक रहेगा। अन्नका स्टाक छः मास

बाद लाभकारी रहेगा । रोहिणी नक्षत्रका क्षय तेजीको स्पोर्ट देगा—

इस मासके कृष्ण पक्षमें तिथि क्षय और शुक्लपक्षमें वृद्धि होनेसे जनरल लाइन मन्दीकी रहेगी । बुधका उदय चारा घासमें अच्छी तेजी लाएगा ।

पौष मास

बदी १ का क्षय होनेसे आज रुई तथा चांदी मन्दी रहेगी । तीन दिन बाद तेजी होगी । बदी २ गेहूँ चांदीमें तेजी आयेगी । बदी ३, जौ, गेहूँ, मूंग, सोना चांदी, रुई सूत, मन्दा, रातको श्रवणे शुक्रः पशुओंमें रोग, रुई मन्दी । वदी ४ गुरुवारी मूंग-मोठ उर्द बाजरा जुवार मकई मन्दी करेगी । वदी ६ धनुः सक्रांति है । शनिवारी संक्रांति घोर तेजीकारक रहेगा । जौ, गेहूं, चणा चावल तिल तेल तिलहन रुई सूत कपासमें अच्छी तेजी आयेगी । सोना चांदी काँसी, पीतलके बर्तन तेज होंगे । बृश्चिक संक्रांतिमें लिया हुआ माल अब बेचनेसे लाभ होगा । ४ से १३ जनवरी तक यह फल होगा । ज्येष्ठाका बुध रस पदार्थ तेज करेगा । बदी ७ को पूर्वमें बुधका अस्त सोना चांदी आदि धातुएं तेज करेगा । रुई और धातुएं पांच दिन तेज, पांच दिन मंदी, इस प्रकार बाजार चलेगा । मंगलवारी नौमी तेजीकारक हुआ करती हैं, तिलहनमें विशेष तेजी । धातुओंमें साधारण मन्दी । वदी ११।१२ दोनों दिन बाजारमें मन्दीका रुख रहेगा । बदी १३ घी, तेल, तिलहन, साबुन, सन, पाट कुष्ठा लोहा, जस्ता मशीनरी तेज । शनिवारी त्रयोदशी घी तथा गेहूँका स्टाक करनेकी राय देती है । आगे लाभ होगा यह एक चांस है । सोमवारी अमावस्या मूल नक्षत्र बहुत उत्तम सुभिक्षकारी योग है । प्रत्येक वस्तुएं मंदी होगी । एक सप्ताह की मन्दी लगा दें ।

सुदी १—रुई कपास चावल चांदी चीनी खाण्ड सूत सन, सफेद वस्तुएं मन्दी होगी । पूर्वाषाढ़ नक्षत्र सभी प्रकारका अनाज तेज करेगा । कार्तिक सुदी एकम शनिवारी, मंगसिर सुदी रविवारी और पौष सुदी मंगलवारी होनेसे "शनि अंगारक' योग बन गया है । यही योग पौष संवत् २०२७ में भी था । चोर बजारी (ब्लैक मारकीट) की गिरफ्तारी, युद्ध, भय, रक्त पात, भूचाल, बीमारी तथा कई प्रकारकी दुर्घटनाओंसे प्रजाको कष्ट होगा । एक मासके अन्तर्गत किसी नेता अथवा राज्याधिकारीका निधन भी हो सकता है ।

सुदी २ पू० षा०की वृद्धि, चन्द्रमा सूर्य राहू के कब्जेमें होनेसे तेजीका झटका आयेगा, आज का चन्द्रोदय किरानाकी वस्तुएं और रस पदार्थ तेज करेगा । सुदी ३ सरसों अलसी तिल तेल रुई कपास धातुएं मंदी । सुदी ४ पूषायां रवि- तिलहन गुड़ सोना चांदी हल्दी तेज । सुदी ४ की वृद्धि मूंग उर्द मोठ आदि दालें और घी मंदा होगा, तिलहन लोहा, जस्ता तेल साबुन तेज, सुदी पंचमीको शतभिषा है, चौतर्फा की हवा चलने पर तेजी होगी । सुदी ६ अनाज रुई कपासमें मन्दीका रुख रहेगा । सुदी ७ को शुक्र वक्री होगा । अतः अनाज घी तेल सोना चांदी रुई तेज होगी । शनि भी वक्री है अतः पाट कुष्ठा तेज । श्रवणका शुक्र वक्री होकर सुख शांतिका वातावरण बनाता है । पौष सुदी ८ को रेवती नक्षत्र उत्तम उपजकी सूचना है । अन्न मंदा होगा । पू०षा०का बुध वर्षाकारक है, सोना चांदी मंदा, बिनौला तेज । सुदी ११

शनिवारी कृत्तिका युता है। लाल वस्तुएं तेज। सुदी १३ वक्री शनि मृगशिरके चौथे चरण पर उज्जैनमें दुर्भिक्ष, गुड़ तेल नमक तेज। शुक्र-शनि दोनों वक्री होकर रुई, कपास कपड़ा तेज करके मन्दा करते हैं। सुदी १५ मंगलवारी तेजीकारक है। आठ दिनकी तेजी लगा दें। पुष्यका अभाव आगे तेजी करेगा।

इस मासमें गुरु अतिचारी और शनि वक्री रहेगा। कई प्रकारकी दुर्घटनाओंसे प्रजा परेशान रहेगी। सं० २०२७ के पौषमे जो योग थे वे ही इस मासमें हैं, अतः तेजी मन्दी जोरदार चलेगी।

शकुन विचार

कार्तिक मास

कातिक मड़वाके दिना जो रवि मंडल होय।
सरसों तिल और तेलका काम करो मत कोय॥
कृत्तिका कातिक पूर्णिमा चारों मास सुभिक्ष।
चार पहर भरणी रहै चार मास दुर्भिक्ष॥

मंगसिर मास

मंगसिर बदी त्रयोदशीके दिन पड़ै जो बर्फ।
बढ़ै धान्य धन सम्पदा मंगलमय चौ तर्फ।
सूरज बादलमें उगै मावस मंगसिर मास।
अन्न उपज कमती रहै मंहगा चारा घास॥
मंगसिर पूनम निर्मला अथवा ग्रहण मयंक।
लाभ मिले आगे करो संग्रह नाज निःशंक॥

पौष मास

बादल गर्जे पूर्वमें नौमी लागत पौष।
समझो खेती नाशका होता है यह घोष॥
मेघ छवैं आकाशमें पौषी पूनम पाय।
सोना, चांदी धातुएं संग्रह करौ सिवाय॥

अशान्ति, अभाव, अनेकताका मूलकारण

[लेखक —श्री गोवर्द्धन स्वामी 'दूत' सौरसन्यासी]

नम्र निवेदन

पिछले लेखोंसे सूर्यके विषयमें कुछ समझ गए होंगे। अब अशान्ति, अभाव, और अनेकता के मूल कारणों पर प्रकाश डालनेकी कोशिश तत्वकी परिभाषा (तत्वके अन्तर्गत), तात्विक दृष्टिसे किया जा रहा है। इसलिए सौर शासक तथा जनतासे क्षमा-प्रार्थनाके बाद उन विषयों को आप सबके समक्ष रख रहा हूं। क्योंकि राष्ट्रमें मैं (स्वामी गोवर्द्धन 'दूत' सौर-सन्यासी) अशास्त्रीय ढंगसे परीक्षित व्यक्ति हूँ।)

मानवको प्रेरित करने वाली शक्तियां

सूर्य, चन्द्र तथा विद्युत् तीनोंमें ही सहस्त्र किरणें होती हैं। इसी तरह अणु-परमाणु किरणें तथा परिवर्तन देने वाली शक्तियां भी तीनोंकी अलग-अलग हैं। ये शक्तियां आपसमें टकराना नहीं जानती। जिस प्रकार दिनमें सूर्य, रात्रीमें चन्द्र काम करते हैं—उसी प्रकार इन दोनोंके नहीं रहने पर यथा—सूर्य ग्रहणमें, तथा अमावस्या और चन्द्रास्तके बाद, तथा चन्द्रोदयके पूर्व और गोधूलीमें विद्युत् काम करती हैं। इसलिए मानव किसी एककी शक्ति-पुञ्ज-अणु-परमाणु, किरणें तथा परिवर्तन देने वाली शक्तियोंको रखता है और द्वन्द रहित होकर पूर्ण होता है। सूर्यकी शक्ति रखने वाला एक राष्ट्रके लिए प्रथम पूर्ण होकर विश्वमें पूर्ण (सम्राट) होता है, चन्द्रमाकी शक्ति पुञ्ज को रखने वाला एक भाषाका पूर्ण विद्वान् होता है और विद्युत्की शक्ति पुञ्जको रखने वाला राष्ट्रके व्यापार—जिनके कई भेद हैं, में पूर्ण होता है।

सूर्यकी पूर्ण शक्तिके काम करने पर मेधा देवी (सरस्वती) का दिया हुआ एक पूर्ण भाषा वेद-संस्कृत है। इसी प्रकार विद्युत्की शक्तिको देने वाली शक्ति—दुर्गाजीके नाम पर लैटिन अथवा हिब्रू भाषा और शारदाके नाम पर चन्द्रकी शक्ति फारसी भाषा पर काम करती है। किसीकी भी पूर्ण शक्ति नहीं होने पर उन भाषाओंसे सम्बन्धित छोटी-छोटी भाषाओंका प्रादुर्भाव हुआ और अधिक कमी होने पर बिना लिपी वाली भाषाएं (यथा—तुडु या जंगली भाषा-मिसमी, खाण्ती, सिफु, नागादि की लिपी नहीं है, ये असमिया तथा दखिनी भाषामें लिखते हैं, लेकिन बोली भिन्न-भिन्न है। इसी प्रकार विश्वके अन्य भागोंमें भी हैं) सामने आयीं। मानवकी कमीका प्रथम कारण यही है। ऊपरकी कमीके कारण मनुष्य पूर्ण भाषा को छोड़कर और भाषओंके पीछे पड़ा। राष्ट्र समाज तथा जनताके सेवियोंने अपने-अपने क्षेत्रका भार अपने ऊपर ले लिए। अधिक कमी होने पर वे लोग दूसरोंको तारोंके समान जो प्रकाश नहीं दे सकते, लेकिन प्रकाश देनेका दावा कर आपसमें टकराने लगे।

विद्युत् तथा चन्द्रमाकी शक्तियां सूर्यसे सम्बन्ध रखती हैं। सौर-मानवने अपना पथ त्याग दिया और अपना दोष दूसरों पर मढ़ने लगा। दूसरे लोग उस क्षमताको, जो प्राप्त किए थे, ठुकरा दिए और विश्व अशान्ति, अभाव तथा अनेकताकी गोदमें चला गया।

आज विश्वके सभी कोनेमें नक्षत्रोंका प्रकाश है। शान्ति, संतोष और एकताके शब्द (बोध) देने वाले वेद भी ऋचा न देकर, भूतों द्वारा कहे गये उन्मत्त (अशुद्ध) शब्द (बोध-शिक्षा) देते हैं। विश्वकी पूर्ण शक्तियां मानव शरीरमें नक्षत्रोंके समान काम कर रही हैं। इसलिए शासक, धर्म तथा जनता पूर्ण होने पर भी एकताके बन्धनमें नहीं बन्ध पा रही है। मानव शरीर पूर्ण होने पर भी, किसी एकको पूर्ण शक्तिका इनमें अभाव है। मानव यदि पूर्ण होगा तो राष्ट्रसे प्रेम करेगा, तथा राष्ट्र पूर्ण होने पर विश्वसे प्रेम करेगा. यदि मानव पूर्ण नहीं हुआ तो राष्ट्रसे प्रेम नहीं रहेगा, तथा अधिक कमी हुई तो परिवारसे प्रेम नहीं करेगा। अतः आज विश्वके मंगल सूत्रमें पिरोये गये एकता रूपी मोती बिखरे हुए हैं, एकता-मोतियोंको पुनः मंगल सूत्रमें पिरोएं तो सबका कल्याण निश्चित है। अब सौरसे सम्बन्धित प्रभाव देखिए :—

सौर मण्डलकी शक्तियाँ

प्रथम, आप सब शरीरके अदृश्य वाष्पके विषयमें पढ़ चुके हैं। जिस प्रकार ब्रह्माण्डमें धूल धूम तथा वाष्पसे सौर-किरणें धूमिल तथा कमजोर हो जाती हैं—सूर्य छिप जाता है। उसी प्रकार शरीरमें भी इन तीनोंके चलते सूर्य-किरणें मलीन तथा कमजोर हो जाती हैं। इसी प्रकार शरीर तथा प्रकृतिसे संबंधित सूर्य की संजीवनी शक्तियां तथा किरणें मन, बुद्धि तथा अहंकार पर काम करती हैं। सूर्यकी संजीवनी शक्तिसे आत्मिक शक्तिकी अदृश्य किरणें उत्थान लेती हैं। प्रकृतिके पोषणके लिए वाष्प बनानेकी एक विशेष क्रिया है। ये सभी शक्तियां आकर्षण-शक्तिसे खींचकर आती हैं। जहां आकर्षित करनेकी शक्ति-आकर्षण शक्ति नहीं है, वहां वे शक्तियां नहीं पहुंच पाती, इसलिए वहां अशान्ति रहती है। वह अशान्ति तीन भागोंमें बंट जाती है

(१) **दरिद्रता (अभाव)**—सूक्ष्म वाष्प आकर्षणकी कमीसे सेवा करनेमें असमर्थता लाती है। यह सूर्य-तत्वोंकी कमी दिखाती है।

(२) **अशान्ति अनेकता**—सूक्ष्म वाष्प, आकाशमें जाने पर अति या अनन्त जल-विन्दु वर्फ या वज्रपात (उल्का) के रूपमें परिवर्तित हो जाते हैं—परिवर्तन ले लेते हैं। आकर्षण शक्ति कम होने पर कुछ दिनों (समय) के बाद यह आकर्षण-शक्ति अत्यधिक दबाव (जोर) देती है, जिससे प्रकृतिमें बर्फ (हिम) या वज्रपात होता है और शरीरमें दुर्घटना तथा अपघात अप-मृत्यु होती है। यह अशान्ति तथा भ्रान्ति दोष है।

(३) **कलह तथा रोगादि**—विद्युत् रहित आकाश रहने पर ओस बननेकी क्रिया प्रारम्भ होती है। ओस नहीं बनने पर सुख और शान्ति, अमृत (चन्द्र-शक्ति) की कमीके कारण अधूरी प्राप्त होती है।

शरीरके भीतर और प्रकृतिसे सम्बन्धित संसर्ग सहित 'काम' को तत्वज्ञानकी परिभाषा में कोकशास्त्र कहते हैं। बर्फ (हिम) तथा वज्रपात पर कोकशास्त्र नहीं है। शरीर तथा ओस (संसर्ग सहित प्रकृति और शरीरके भीतर) से संबंधित 'काम' को तत्वज्ञानकी परिभाषामें "कामशास्त्र" कहते हैं। तत्वोंकी कमीसे मानव शरीरमें होने वाली क्षतिकी चर्चा नीचे की जाती है।

सूर्यकी सहस्र किरणें तत्वज्ञानमें जीवनी शक्तिका काम करती हैं। 'कोकशास्त्र'में

'विद्युत्' की सहस्त्र किरणें तथा कामशास्त्रमें चन्द्रकी सहस्त्र किरणें काम करती हैं। सूर्य किरणोंको यदि शरीर तथा प्रकृति (बाह्य) से हटा दिया जाए तो विद्युत् और चन्द्र-किरणें निरर्थक हो जायेंगी। दूसरे शब्दोंमें अन्ततः यह कहना पड़ेगा की मानव-शरीर तथा वाह्य प्रकृतिमें सूर्य किरणें नहीं है सूर्य-किरणोंका समुचित प्रयोग, धूल, धूम तथा वाष्प दोषसे नहीं हो रहा है। इससे जीवनी शक्तिकी भी अत्यधिक कमी हो गई है। इससे सूर्य, विद्युत् तथा चन्द्रकी शक्तिसे रहित होकर मानव जीवन ग्रस्त-व्यस्त हो रहा है। मानव जीवनमें अशान्ति अभाव तथा अनेकता घर कर गए हैं। दूसरे शब्दोंमें हमारा सम्बन्ध तथा कार्य "सौर विज्ञान" से रहित है। हम सौर-विज्ञान को भूल गए हैं—छोड़ दिए हैं। यदि हम मातृ सूर्यके विषयमें ही (सौर-विज्ञान तथा किरणों के विषयमें) बोध दें तो समय आने पर तीनों शक्तियोंका बोध हो सकता है। [क्रमशः]

जन्मपत्री शिक्षा—६

सप्त वर्ग साधन

[लेखक :—दैवज्ञभूषण श्री सीताराम स्वामी एम.ए. ज्योतिषाचार्य]

'ज्योतिष्मती' के गतांकोंमें बृहत् जन्म-पत्री-निर्माण-विधिसे सम्बन्धित पांच पाठ प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी सहायतासे ज्योतिषका कोई भी विद्यार्थी सरलतासे लग्न कुण्डली, राशि कुण्डली, ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित चक्र बना सकता है। भारतमें अधिकतर सप्तवर्ग वाली जन्म-पत्रिका बनाने की परिपाटी प्रचलित हैं। अतः प्रस्तुत पाठमें सप्त-वर्ग-साधन पद्धतिका विवेचन किया जाता है—

राशिके सूक्ष्म विभाग करनेको वर्ग साधन करना कहते हैं। सूक्ष्म विभाग करनेसे उनका सूक्ष्म फल प्रकट होता है। किस वर्ग कुण्डलीसे किस विषयका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, इसके विषयमें "जातकाभरण" में लिखा है :—

लग्ने नूनं चिन्तयेद् देह भावं, होरायां वै संपदाद्यं सुख च, द्रेष्काणे स्याद् भ्रातृजं भाव-रूपं स्यात् सप्तांशे सन्ततेः पुत्र पौत्र्याः। नूनं नवांशेऽपि कलत्र भावं, स्याद् द्वादशांशे पितृ-मातृ सौख्यं, त्रिशांशके कष्टतरं विचिन्त्यमेवं हि षड्वगजरूपमुक्तम्।।

लग्नसे शरीरका विचार करना चाहिए। होरासे धन-सम्पत्ति, द्रेष्काणसे भ्रातृ-सुख, और सप्तांश कुण्डलीसे पुत्र पौत्र आदिका विचार करना चाहिए। नवांश कुण्डलीसे स्त्री-सुखका विचार करें और द्वादशांश कुण्डलीसे माता पिताके सुखका विचार करना चाहिए। त्रिशांश कुण्डलीसे विशेष कष्टकी बातोंका विचार करना चाहिए। [यह विचार सर्व-सम्मत एवं तर्कसंगत नहीं जंचता। केवल सप्तांश कुण्डलीसे ही पुत्र-पौत्रोंका निर्णय सर्वथा असम्भव है—इसके लिए पंचम भाव पंचमेश और पुत्रकारक ग्रहके बलाबलका विचार भी अनिवार्य है। होरा तो सूर्य चन्द्रकी दो ही हैं, इससे धन सम्पत्तिका निर्णय असम्भव है। सप्तवर्ग दशवर्ग षोडशवर्ग ग्रहोंके बलाबल

ज्ञानके लिए उपयोगी है। —सम्पादक]

आजकल दैवज्ञ किसी भी जन्मपत्रीका फलादेश कहते समय प्राय: इन वर्ग कुण्डलियों पर ध्यान नहीं देते। फिर भी अधिकतर लोग नवांश कुण्डलीको अवश्य देखते हैं। किसी कार्यके मुहूर्तमें भी नवांश कुण्डलीका विशेष महत्व होता है, फिर भी जो ग्रह इन सप्तवर्गी कुण्डलियोंमेंसे अधिकांशमें बलवान् (उच्च, स्वगृही, अधिमित्र क्षेत्री आदि) हो वह शुभ फल देनेमें विशेष समर्थ होता है। जो ग्रह निर्बल (नीच अधि-शत्रु क्षेत्री आदि) होता है, वह अशुभ फल अधिक देता है, शुभ फल कम।

वैसे तो बड़ी जन्मपत्रियोंमें दशवर्ग बनाये जाते हैं, पर इनमेसे अग्रांकित सप्तवर्ग ही अधिक प्रसिद्ध है :—

(१) लग्न (२) होरा (३) द्रेष्काण (४) सप्तमांश (५) नवमांश (६) द्वादशांश (७) त्रिशांश।

परन्तु इन सातों वर्गोंको समान महत्व नहीं दिया गया है। किस वर्गको कितना महत्व देना चाहिए इसका निर्णय "बृहत् पाराशर होरा" शास्त्रमें इस प्रकार किया गया है :—

लग्न होरा दृकाणांक भाग सूर्यांशका इति।
त्रिशांशकश्च षडवर्गा अत्र विंशोपका: क्रमात्॥
रस नेत्राब्धि पंचाश्वि भूमय: सप्तवर्गके।
स सप्तमांशके तत्र विश्वका: पंच लोचनम्॥
त्रयं सार्द्धं द्वयं सार्द्धवेदा द्वौ रात्रिनायक:।
स्थूलं फलं च संस्थाप्य तत्सूक्ष्मं च ततस्तत:॥

अर्थात् षड्वर्ग एवं सप्तवर्गमें भिन्न-भिन्न वर्गोंको निम्नलिखित अनुपातसे महत्व देना चाहिए :—

यदि षड्वर्गका विचार करना हो	यदि सप्तवर्गका विचार करना हो
१. लग्न……६	१. लग्न………५
२. होरा……२	२. होरा………२
३. द्रेष्काण …४	३. द्रेष्काण……३
४. नवांश… ५	४. सप्तमांश …२॥
५. द्वादशांश…२	५. नवमांश …४॥
६. त्रिशांश…१	६ द्वादशांश……२
	७. त्रिशांश……१
योग २०	योग २०

वर्गोंसे तात्पर्य तथा वर्ग साधन विधि

१, होरा :—किसी भी राशिके दो समान भाग करने पर प्रत्येक भाग १५ अंशका होता है। एक भाग अर्थात् १५ अंशकी एक होरा होती है। विषम राशियों (१,३,५,७,९,११) में पहली होरा सूर्यकी तथा दूसरी चन्द्रमाकी होती है। सम राशियों (२,४,६,८,१०,१२) में प्रथम होरा चन्द्रमाकी तथा द्वितीय सूर्यकी होती है। जो उदाहरण कुण्डली गतांकोंमें ली गई है उसमें लग्न कुम्भके तीन अंश बीते हैं अत: इस कारण होरा लग्न सूर्यका अर्थात् ५ हुआ। तात्कालिक सूर्य कन्या राशिके १४ अंश पार कर चुका था अत: सूर्य चन्द्रकी होरा अर्थात् ४ में होगा। इसी प्रकार समस्त ग्रह अंकित होंगे।

२. द्रेष्काण चक्र :—यदि एक राशिके तीन भाग किये जायें तो १०-१० अंशका एक एक भाग होगा। प्रत्येक भागको द्रेष्काण कहते हैं।

चक्र अगले ७३वें पृष्ठ पर दिया है।

द्रेष्काण चक्र

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	कं०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	राशि
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१ से १० तक
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	११ से २० तक
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२१ से ३० तक

द्रेष्काण कुण्डली बनानेके लिए लग्नका जो द्रेष्काण है उसी द्रेष्काणकी राशिको लग्न स्थानमें रखना चाहिए। उद्धृत कुण्डलीमें कुम्भ लग्नके ३ अंश ४८ कला बीती है। १० अंशसे कम होनेके कारण द्रेष्काण कुण्डलीका लग्न भी कुम्भ ही आया। लग्न भावमें कुम्भ राशि रख कर द्वितीय भावमें १२, तृतीय भावमें १ आदि लिखकर द्रेष्काण कुण्डली बना ली जायेगी। चक्रके अनुसार ग्रह जिस-जिस राशिके द्रेष्काणमें आयेंगे उन्हें उस राशिमें स्थापित कर दिया जायेगा। सूर्य कन्या राशिके १४ अंश पार कर चुका है अतः चक्रानुसार सूर्य मकर राशिके द्रेष्काणमें होगा। इसी प्रकार समस्त ग्रह द्रेष्काण कुण्डलीमें अंकित होंगे।

३. सप्तमांश चक्र :—यदि एक राशिके ७ भाग किये जायं तो प्रत्येक भाग $\frac{३०}{७}$ अर्थात् ० अंश १७ कला ८॥ विकलाके करीब हुआ। इसे सप्तमांश कहते हैं। सप्तमांश चक्र प्रायः सभी पंचांगों व पुस्तकोंमें अंकित रहता है, अतः चक्रकी सहायतासे द्रेष्काण कुण्डलीकी भांति सप्तमांश कुण्डली बना लेनी चाहिए।

४. नवमांश चक्र :—यदि एक राशिको ९ भागोंमें विभाजित करें तो प्रत्येक भाग $\frac{३०}{९}$ अर्थात् ३ अंश २० कलाका हुआ। प्रत्येक भागको नवांश कहते हैं। पंचांगोंमें अंकित नवमांश चक्रकी सहायतासे नवमांश कुण्डली सहज ही बनाई जा सकती है। यदि कोई ग्रह जिस राशिमें हो उसी नवांशमें भी हो तो वह वर्गोत्तममें कहलाता है। वर्गोत्तम वैसा ही शुभ फल देता है जैसा स्वगृही ग्रह।

५. द्वादशांश चक्र :—यदि एक राशिको १२ बराबर भागोंमें विभाजित करें तो प्रत्येक भाग २ अंश ३० कलाका होगा। इसे द्वादशांश कहते हैं। द्वादशांश चक्र भी पंचांगोंमें दिये हुए रहते हैं, जिनकी सहायतासे द्रेष्काण कुण्डलीकी तरह द्वादशांश कुण्डली बनती है।

६. त्रिशांश कुण्डली :—त्रिशांशमें एक राशिके पांच भाग किये जाते हैं। जो विषम राशियाँ है उनमें ५ अंश तकका अधिपति मंगल, ६ से १० तकका अधिपति शनि, ११ से १८ तकका गुरु, १९ से २५ तकका बुध, २६ से ३० तकका अधिपति शुक्र होता है। जो सम राशियां हैं उनमें १ से ५ तकका शुक्र, ६ से १२ तकका बुध, १३ से २० तकका गुरु, २१ से २५ तकका शनि और २६ से ३० तकका अधिपति मंगल होता है। पंचांग आदिमें अंकित त्रिशांश चक्र एवं लग्न तथा ग्रह स्पष्टकी सहायतासे अन्य वर्गोंकी भांति त्रिशांश कुण्डली भी बनाई जा सकती है।

ज्योतिषशास्त्रमें दिव्य विज्ञान (२)

[लेखक :—श्री पं० हंसराजजी कपिल ज्यौतिषाचार्य]

(गताङ्कसे आगे)

नक्षत्र विज्ञान

'नक्ष-दीप्तौ नैघंटुकं' दीप्त्यर्थमें नक्षधातुसे अत्रल् प्रत्यय लगानेसे नक्षत्र सिद्ध होता है। तैत्तरीय शाखामें—"**सुकृतां वा एतानि ज्योतिंषि यन्नक्षत्राणि**" अर्थ—पुण्यात्माओंकी ही जो ज्योतियें हैं वे आकाशके नक्षत्र संज्ञक तारें हैं। उन नक्षत्रोंका तिथियों और वारोंके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होनेके कारण अद्भुत निरन्तर प्रभाव विश्व पर पड़ता रहता है। उनसे मनुष्य पशुपक्षी वृक्षादि सभी प्रभावित रहते हैं। जिनका अथर्व वेद संहितादिमें भाव देखनेमें आता है। अथर्ववेदमें २७ नक्षत्रोंका विशद रूपमें वर्णन है। कई नक्षत्रोंका शुभ कइयोंका अशुभ फल देखनेमें आता है।

चारों वेद ब्राह्मणभाग और ज्यौतिष-शास्त्रके तात्विक रहस्यपूर्ण-वेत्ता प्रकाण्ड-पण्डित, आर्य समाजके संचालक वैदिक धर्मके उपदेशक अपने युगके महापुरुष महर्षि श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती तो इन्हीं नक्षत्रों और नक्षत्रोंके स्वामियोंको यज्ञादिमें प्रत्येक संस्कार में आहुतियें देनी लिख गये हैं, जिन्होंने अत्यधिक हिन्दु जातिको पतनसे बचानेके लिये अभिनव सप्रदायकी स्थापना की। इन्हीं नक्षत्रोंका प्रभाव क्रमशः अश्विनीसे रेवती तक २७ नक्षत्रोंका प्रभुत्व अथर्ववेद ब्राह्मण भागादिमें पाया जाता है। जो मानव पशुओं और वृक्षादि पर प्रभावित होते हैं। जिस जिसका अश्विनी आदि नक्षत्रों के साथ संबन्ध है अन्तिम कोष्ठमें लिखा जावेगा उदाहरणमें स्वाति नक्षत्रका अर्जुन वृक्षसे सम्बन्ध है, जिसका सभी नक्षत्रों पर शासन रहता है। इस नक्षत्रका स्वामी वायु देवता है। जिसका धर्म है शोषण करना, स्वामी के धर्मानुसार वही धर्म स्वाति नक्षत्रका है। स्वाति नक्षत्रसे संबन्धित अर्जुन वृक्षका वही धर्म शोषण करनेका है। स्वाति नक्षत्र, शुक्रकी राशि तुलाके अन्तर्निहित होनेसे स्त्री जाति पर विशेष प्रभाव डालता है, क्योंकि कामिनियें शुक्र-प्रिया होती हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि यह वृक्ष स्त्रियोंकी स्थूलताको नष्ट कर नव-युवती बना देता है।

प्रत्यक्ष अनुभूत

२-३ दिनमें सौम्य शरीर हो जावेगा यह नित्य प्रतिदिन करे। पृथ्वीमें आकर्षण शक्ति है इसलिये पैरों तले कुछ रखे।

विधि :—स्थूल शरीरा स्त्री अर्जुन वृक्ष की ३ प्रदक्षिणा कर शुद्ध जलसे वृक्षके चारों ओर छींटे दे. जहां तक स्त्री शरीर उन्नत है। फिर गोधूमके आटेका दीपक बनाकर शुद्ध घृत

---

७. सप्त वर्गी चक्र :—सप्तवर्गी कुण्ड-लियोंके पश्चात् उन सबकी सहायतासे सप्त-वर्गी चक्र बनता है जिसको देखकर सरलतासे बताया जा सकता है कि होरामें अमुक ग्रह किसकी होरामें है तथा नवमांशमें किसके नवांशमें है। उस राशिका स्वामी कौन है तथा उस ग्रहका राशि स्वामी मित्र है या शत्रु आदि।

[क्रमशः]

से ज्योति जला दे, फिर गन्ध अक्षत पुष्प धूप नैवेद्य (पतासे) आदि वृक्षके साथ लगा दें। इस प्रकार पूजन कर फिर पैरोंके नीचे टाट बोरी आदि रख कर सूर्यसे पश्चिम वृक्षमें खड़ी होकर दोनों भुजाओंमें वृक्षसे लिपट जाये अर्थात् उरःस्थल और उदर वृक्षसे लगाकर २० मिनिट तक खड़ी रहे। किसी २ समय वाम और दक्षिणकी ओरसे सूर्यको देख लिया करे। २० मिनट बाद कुछ विश्राम कर फिर वैसे ही आलिंगन करें २० मिण्ट। ऐसा करनेसे १०-१२ सेर वजन घट जावेगा। एवम् २-७ वार शुभ दिन शुभ नक्षत्र विचार कर करनेसे नवयुवती हो जावेगी, यदि नग्न उरःस्थल और उदरसे आलिंगन करें।

सभी नक्षत्रोंमें यह प्रयोग किया जा सकता है। अपने जन्म नक्षत्रसे संबन्धित वृक्षका पंचोपचार पूजन करनेसे आरोग्य और आयुकी वृद्धि होती है। शारदा-तिलक ग्रन्थमें '**···आयुष्काम: स्वर्क्ष वृक्षं छेदयेत् कदाचन?**" नक्षत्रों का महत्व देखना चाहें तो बृहज्जातकमें देखिये। मैंने स्थूलकाय स्त्रीके साथ जाकर प्रत्यक्ष अनुभूत किया है। स्त्रीने एक बार ऐसा किया था, उसका ५ सेर वजन कम हो गया था। स्थूल पुरुषों पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ता है। "**इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते,**" परमात्मा अपनी माया द्वारा बहुतसे रूप धारण करता है 'माया का दूसरा नाम प्रकृति है "**मायां तु प्रकृतिं विद्धि मायिनं पारमेश्वरम्।**" प्रकृति क्या है— "**प्रकृष्ट वाचकः प्रश्च कृतिश्च सृष्टिवाचकः सृष्टौ प्रकृष्टा या देवी प्रकृतिः साभिधीयते**"।

सृष्टिको रचने वाली प्रकृति ही है। 'मूल प्रकृतिरविकृति महदाद्या प्रकृतिविकृतयः सप्त, इस प्रकार मूल प्रकृति है। विकार वह इस मूल' प्रकृति सहित अविकृति है। यह महदादि सात और विकार १६ इस मूल प्रकृति सहित २४ तत्व हैं। अतः अहोरात्र २४ विभागोंमें है। अहोरात्रके आद्यन्त 'अ—त्र' लोप करने पर 'होरा' बन जाता है, एवं अढाई अढाई घटिका क्रमकी २४ होरा (घंटा) हो जाते हैं। जिन का संबन्ध सूर्यादि सातों ग्रहोंसे है। सूर्यादि सातोंकी प्रत्येक होराके तीन चक्रोंसे २१ होरा अहोरात्रमें निकल जाती है। फिर ३ शेष रह जाते हैं। शेष प्रथम २२वीं होरामें ३ मिलानेसे चतुर्थ होरा आ जाती है, वह २५वीं होरासे जिस ग्रहका नाम होता है उसीके नामका वार होता है। यथा सूर्यसे चतुर्थ ग्रह नीचे चन्द्रमा आता है। सूर्यके बाद चतुर्थ चन्द्रवार। पूर्वोक्त क्रमसे चन्द्रमासे चतुर्थ शनि गुरुको छोड़कर मंगल आता है एवं मंगलसे चतुर्थ सूर्य शुक्रको छोड़कर बुध आता है, एवं वारोंमें ३—३ मिलानेसे सातों ग्रहोंके क्रमशः सातों वार बन जाते हैं।

होराके तीन सप्तकोंके बाद २४ तत्वोंमेंसे ३ शेष रहे हैं, वह तो प्रकृति सत्व रज तम नामके गुण हैं। इन तीन ही गुणोंसे सृष्टिकी रचना और संवत्सर-अयन, ऋतुएं, मास, होरा, दिन, वार घटिकादियोंकी रचना हुई है। यही बात श्रीकृष्णने कही है "**प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहंकार विमूढात्मा कर्ताऽह मिति मन्यते।**"

नक्षत्रोंके वृक्ष

संख्या	नक्षत्र	संस्कृत	हिन्दी
१	अश्विन	— कारस्कर	= कुचला।
२	भरणी	— धातृ	= आँवला।
३	कृत्तिका	— उदम्बर	= गूलर।
४	रोहिणी	— जम्बू	= जामुन।

५ मृगशिर — खदिर = खैर ।
६ आर्द्रा — कृष्णा = अगर ।
७ पुनर्वसु — वंश = बांस ।
८ पुष्य — अश्वत्थ = पीपल ।
९ अश्लेषा — नाग = नागकेसर ।
१० मघा — रोहिण = बड़ाबोड़ ।
११ पू.फा. — पलाश = ढक्क ।
१२ उ.फा. — प्लक्ष = पिल्कन ।
१३ हस्त — अंवष्ठ = पाठा ।
१४ चित्रा — बिल्व = बेलपत्र ।
१५ स्वाति — अर्जुन = अर्जुन ।
१६ विशाखा — विलंवित =बबूल, कीकर
१७ अनुराधा — वकुल = मोलसिरी ।
१८ ज्येष्ठा — सरल = देवदार ।
१९ मूला — खर्ज = शालवृक्ष ।
२० पू.षा. — मंजुल = बत ।
२१ उ.षा. — पनस = कडखडर ।
२२ श्रवण — अर्क = आक ।
२३ धनिष्ठा — शमी = जंडी, खेजड़ी
२४ शतभिषा — कदंब = कदम्ब ।
२५ पू.भा. — निम्ब = नीम ।
२६ पू.भा. — आम्र = आम ।
२७ रेवती — मधुक = महुवा ।

उपरिष्ठात् ग्रहा

शनि १
गुरु २
मंगल ३
सूर्य ४
शुक्र ५
बुध ६
चन्द्रमा ७

"वृद्धो ज्यायान् ग्रहेषु" इस सूत्रानुसार शनैश्चरके वारसे तिथि, नक्षत्र योगादिका महत्व क्या है "शनिवारे तिथिः शान्ता शयुग्मं चामुकेश्वराः। नाड्यां मन्दारयोश्चेत्स्युर्वाति वाढं प्रभंजनः' इति प्रश्ननाड्याम् ।" शनि के वारमें जिनके 'श' अन्तमें—एकादशी द्वादशी त्रयोदशी चतुर्दशी पूर्णमासी हों, शनिवारमें ही 'श' से युक्त अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, हस्त, स्वाति, विशाखा, शतभिषक नक्षत्र हों। तथा सौभाग्य, शोभन सुकर्मा शूलादियोगमें और शनिकी राशि १०-११ में ग्रह, उक्त नक्षत्रोंमें स्थित ग्रह और इन सक्षत्रों वाली राशियोंके स्वामी यदि शनि और मंगलकी नाड़ियोंमें हो तो अत्युग्र प्रभंजन नाम वायुके उत्पातोंसे पशु पक्षी और मनुष्य मारे जाते हैं अथवा भयसे व्याकुल हो जाते हैं। यहां श. स. ष, में अन्तर नहीं है। शास्त्रादिमें जिन वारमें आदिमें यथा शुक्र सोम सूर्य बृहस्पति वारमें हों इनमें शनिवार वत् पूर्ण फल होते हैं। इस योगमें जल राशियों और नवांशोंमें इन्ही योगोंमें समुद्र आप्लावोंसे सहस्रों प्राणियोंके प्राण जाते हैं।

सप्त नाड़ी चक्र

प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
शनि	सूर्य	मं०	गुरु	शुक्र	बुध	चंद्र
कृ०	रो०	मृ०	आर्द्रा	पुन	पुष्य	अश्ले
ध०	स्वा०	चि०	ह०	उ.फा	पू.फा.	म०
अनु	ज्ये०	मू०	पू षा	उ.षा.	अभि	श्रव.
भर.	अश्वि	रे०	उ.भा.	पू भा	शत.	धनि.

लेखके अत्यधिक बढ़ जानेसे यहां पर ही इत्यलं किया जाता है।

बृहस्पति देवता

[लेखक :—आयुर्वेद बृहस्पति श्री रघुवीर शरण शर्मा वैद्य]

सुवर्ण गुणके ज्ञाता बृहस्पति सर्वप्रथम देवता हैं "यद् वेद राजा वरुणो वेद देवो बृहस्पतिः"।

इन्द्रो वद् वृत्र हा वेद ततते आयुष्यं भुवत् तत्तेवर्चस्यं भुवत् (अथर्व वेद कांड १९। सूक्त २६ मंत्र ४

जिस सुवर्णके गुणको राजा वरुण जानता है, जिसको बृहस्पति जानता है, जिसको इन्द्र जानता है वह सुवर्ण तेरी आयु और तेजकी वृद्धि करे।

औषधियोंके ज्ञाता

त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोम राजा विद्वान् यक्षस्मादमुच्यत ॥

(ऋ० मं०१०सू० ९७ यजु० १२।९२)

हे औषधे ! तुझे गन्धर्व जातिके लोग खोदते हैं। तुझे सोमराजा खोदता हैं। तू रोगीको राजयक्ष्मासे मुक्त कर दे।

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्तु अंहसः।

(ऋ० १०।९७।१५'यजु०१२।८९)

कुछ औषधियां फल देने वाली हैं, कुछ फल नहीं देती हैं। कुछ फल देती हैं, कुछों पर फूल नहीं आता, उक्त चारों प्रकारकी औषधियों का आविष्कार बृहस्पतिने किया है, ये रोगीके रोगको दूर करें।

तारकामय संग्राम

बृहस्पतिके जीवनका तारकामय संग्राम एक दुःखद घटना है जिसका वर्णन इस प्रकार है।

एक बार चन्द्रमाने यज्ञ किया, इसमें इन्द्रादिक देवता सपत्नीक आये और देवगुरु बृहस्पति भी अपनी पत्नी ताराके साथ आये। इसी यज्ञके अवसर पर समीपके किसी उद्यान (बाग) में तारा भ्रमण कर रही थी, अकस्मात् चन्द्रमा भी वहां पहुँच गये। चन्द्रमाने ताराको देखा और ताराने चन्द्रमाको। चन्द्रमा युवक और तारा युवति थी, दोनों ही सुन्दर थे, दोनों ही एक दूसरे पर मोहित हो गये। परिणाम-स्वरूप वहीं उद्यानमें ही दोनोंका समागम हो गया। परन्तु दोनोंकी तृप्ति नहीं हुई। चन्द्रमा ताराको अपने घर ले गये और उस पर अधिकार कर लिया। इसका वर्णन मत्स्य-पुराणमें इस प्रकार है—

कदाचिदुद्यानगतामपश्यदनेक-
पुष्पाभरणैश्च शोभिताम्।
बृहन्नितम्बस्तनभार खेदात्
पुष्पस्य भंगेप्यतिदुर्बलाङ्गीम् ॥
भार्यां च तां देवगुरोरनङ्ग-
बाणाभिरामायत चारु नेत्राम्।
तारां स ताराधिपतिः स्मरार्त्तः
केशेषु जग्राह विविक्त भूमौ ॥
सापि स्मरार्त्ता सह तेन रेमे
तद्रूप कान्त्याहृतमानसेन ।
चिरं विहृत्याथ जगाम तारां
विधुर्गृहीत्वा स्वगृहं ततोपि।
न तृप्तिरासीच्च गृहेपि तस्य

तारानुरक्तस्य सुखागगेषु ॥
(मत्स्य पुराण २३.२९—३१।)

इस प्रकार ताराको अपने घर पर रखकर भी चन्द्रमाकी तृप्ति नहीं हुई और ताराको वापिस नहीं किया। इस पर देवगुरु बृहस्पति को बड़ा क्रोध आया। बृहस्पतिने चन्द्रमासे ताराको वापिस करनेकी प्रार्थना की, इसमें सफलता न मिली। पितामह ब्रह्मा और शिवजी ने भी चन्द्रमाको ताराको वापिस करनेका परामर्श दिया, परन्तु चन्द्रमाने किसीकी भी नहीं मानी। अन्तमें युद्ध हुआ, चन्द्रमाके पक्षमें दैत्य दानव, और दैत्योंके गुरु शुक्राचार्य थे। बृहस्पतिके पक्षमें इन्द्रादिक समस्त देवता तथा शकरजी थे। क्योंकि शिवशंकर बृहस्पतिके पिता ऋषि अङ्गिराके शिष्य थे। युद्ध भयंकर हुआ, दोनों पक्षके सैनिक मरे, अन्तमें पुनः ब्रह्माजीने हस्तक्षेप किया, युद्ध समाप्त हुआ। चन्द्रमाने ताराको वापिस कर दिया। इस कालमें ताराके गर्भ रह गया, इससे बुध* नामके पुत्रका जन्म हुआ। यह चन्द्रमाको दे दिया गया। यह युद्ध तारकामय नामसे प्रसिद्ध है।

"आसीत् त्रैलोक्य विख्यातः संग्रामस्तारकामयः।" (मत्स्य पुराण १७२।१०।)

इसी युद्धमें प्रह्लादके पुत्र विरोचनको इन्द्र ने मार दिया था। जोकि सदैव ही इन्द्रको मारनेकी फिक्रमें रहता था।

विरोचस्तु प्राहलादिर्नित्यमिन्द्रवधोद्यतः।
इन्द्रेणैव विक्रम्य निहतस्तारकामये।
(मत्स्यपुराण)

* बुध ऋग्वेद मंडल १० सूक्त १०१ मंत्र १ से १२ तकका और यजुर्वेद अ० १७ मंत्र ६७ और ६८ का ऋषि है।

प्राणियों पर सूर्यका प्रभाव

[लेखक :—श्री विनोदकुमार बिजल्वाण बी.एस-सी.]

यह प्रायोगिक सिद्ध है कि पौधे भी जीवित (*Living*) हैं तथा इनमें भी अन्य प्राणियोंके समान जीवनकी प्रत्येक क्रिया, गति, वृद्धि, श्वसन, उत्तजनता, प्रजनन, मृत्यु आदि (*Motion, Growth, Respiration, Irratibility, Reproduction, Death etc.*) पायी जाती हैं।

पौधों पर प्रकाश, गुरुत्वाकर्षण-शक्ति आदिका जिस प्रकार सीधा प्रभाव पड़ता है उसी प्रकार मनुष्य पर भी सहज ही इसका प्रभाव देखनेको मिलता है। पौधोंको प्रकाश मात्र-सूर्यसे ही प्राप्त होता है, तथा सूर्य प्रकाश के पड़ते ही पौधेके पर्ण हरिम रहित (*Chlorophyllus*) भागोंमें एक विशेष प्रकारकी क्रिया आरम्भ हो जाती है जिसे प्रकाश संश्लेषण (*Photosynthesis*) कहते हैं—के फलस्वरूप भोजन बनना आरम्भ हो जाता है। यदि यह मान लिया जाय कि कुछ दिनोंके लिए सूर्य कहीं उदय ही न हो या किसी देश विशेष या स्थान पर प्रकाश न पड़े तो वनस्पति जगत् पर प्रकाशके न पड़नेसे प्रकाशसंश्लेषण क्रिया न होनेके कारण भोजन नहीं बनेगा। भोजन न बनने पर पौधेकी वही दशा होगी जो कि किसी प्राणीको भोजन न मिलने पर होती है। वनस्पतिके न होने पर मनुष्य अपने शाकाहारी स्वभावके होने के कारण जीवित नहीं रह सकता।

पौधोंका झुकाव सूर्यके प्रकाशकी ओर सहज ही देखा जा सकता है। मनुष्य व अन्य जीव-जन्तुओं पर भी प्रकाशके न होनेका प्रत्यक्ष प्रमाण दैनिक जीवनमें देखनेको मिलता रहता है। रात्रीके होते ही सामान्यतः जीव-जन्तु सोते एवं कुछ अपनी प्रकृतिके अनुसार रात्रिमें अपने भोजनकी खोजमें निकलते हैं।

जैसे सूर्यके प्रकाशके न होनेसे पौधा शिथिल सा पड़ जाता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी प्रकाशके न होने पर अपने कार्यको शिथिल कर देता है, तथा प्रकाशके होते ही वह अपने दैनिक कार्यमें रत हो जाता है।

इस प्रकार ठीक ही फलित ज्योतिष-शास्त्रमें सूर्यको प्रतिभाशाली, तेजस्वी, जग-प्रसिद्ध होनेका (राशि व योगके अनुसार) द्योतक माना है, क्योंकि ये विशेषता मनुष्यके कार्य पर ही निर्भर करती है। इस प्रकार पूर्ण रूपेण वैज्ञानिक आधार पर फलित ज्योतिष-शास्त्र खरा उतरता है।

विघ्नबाधाओंको दूर करनेका अनुभूत प्रयोग

[आजसे ४ वर्ष पूर्व सं० २०२६ वि० में तत्व अनुसन्धान प्रतिष्ठान जयपुरसे एक अद्वितीय त्रैमासिक पत्र 'तत्व अनुसन्धान' नामसे प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। दो वर्ष तक उक्त पत्र उत्तम रूपमें प्रकाशित होता रहा परन्तु गुणग्राहकोंका सहयोग न मिलनेसे बन्द हो गया। इस देशमें जहां चलचित्र सम्बन्धी चरित्र भ्रष्ट करने वाली अनेक पत्रिकाएं धड़ल्लेसे चल रही हैं—वहां चरित्रनिर्माण और प्राचीन विद्या (तन्त्रशास्त्र) पर प्रकाश डालने वाला एक पत्र भी सुन्दर रूपमें पनप न सके तो इससे बढ़कर देशके पतन और अकर्मण्यताका प्रमाण और क्या होगा। सं० २०२६ विक्रमीमें तत्व-अनुसन्धानके प्रधान सम्पादक वयोवृद्ध विद्वान् श्रद्धेय डा० श्री अम्बालालजी शर्मा थे। डाक्टर अम्बालालजी शर्मा आयुर्वेद एवं एलोपैथीके भी मर्मज्ञ पीयूषपाणि सिद्धहस्त चिकित्सक सहृदय साधु स्वभावके सज्जन हैं। अजमेर ही नहीं, राजस्थानमें सर्वत्र इनकी विशेष ख्याति हैं। आप राजस्थान विधान-सभाके विधायक भी रह चुके हैं। अधिकांश जन इन्हें सफल चिकित्सक समाज-सेवीके रूपमें ही जानते हैं। परन्तु, यह बहुत कम उनके अन्तरङ्ग व्यक्ति ही जानते हैं कि डाक्टर साहब एक उच्चकोटिके उपासक और तंत्र शास्त्रके साधक शक्ति-सम्पन्न विद्वान् भी हैं। इन पंक्तियों के लेखकसे डाक्टर साहबका घनिष्ठ स्नेह सम्बन्ध वर्षोंसे चला आ रहा है। पंचांग प्रकाशनार्थ जब भी मुझे अजमेर जानेका अवसर मिलता है और मैं अधिक कार्य व्यस्तताके कारण एक दो दिनमें न मिल सकूं तो इस वृद्धावस्थामें भी वे स्वयं मेरे निवास पर तीन मंजिल ऊपर लाठी टेकते हुए चढ़नेका कष्ट करते हैं। वार्तालापमें तन्त्र शास्त्रके रहस्य और देशकाल परिस्थिति पर डाक्टर साहबकी मनोव्यथाका आभास मिलता है। जगन्माता अपने इस वरद पुत्रको शतायुः करे, ऐसे सहृदय सज्जन मित्र संसारमें कम मिलते हैं। 'ज्योतिष्मती' पाठकोंके लाभार्थ 'तत्व अनुसन्धान' प्रथम वर्षके ३-४ अङ्कसे एक अनुभूत प्रयोग यहां प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

सर्व बाधा हरण

मनुष्यको अपने जीवन कालमें कठिन समस्याओंका सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थितिमें वह दैवी शक्तिका सहारा देखता है। यहाँ अनुभूत प्रयोग कष्ट निवारण हेतु दे रहे हैं, आशा है समय पड़ने पर अपनावेंगे। यह मन्त्र दुर्गा सप्तशतीके एकादशाध्याय का ३९ वां श्लोक है—

"सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम् ॥३९॥

अर्थात्—'हे अखिलेश्वरी! तीनों लोकोंकी सम्पूर्ण बाधाको शान्त (दूर) करो तथा इसी प्रकार हम (देवगण) लोगोंके वैरीका विनाश करो।"

यहां देवीने देवताओंसे संसारका उपकार करने वाला वर मांगनेको कहा, तब देवताओंने उपरोक्त श्लोकसे प्रार्थना की "हे अखिलेश्वरी सम्पूर्ण बाधाएं दूर कर हमारे बैरीका नाश करो।" इस विषयान्तर्गत यह जानना जरूरी हो गया कि 'मन्त्र' शब्दका क्या अर्थ है। तन्त्र शास्त्रोंमें वर्णमाला (अक्षरों) के वैज्ञानिक संग्रहको मन्त्र कहते हैं। आगे यह भी जानना

आवश्यक है कि वैरीका शब्दार्थ क्या है और वैरी, शत्रु और दुश्मनमें क्या भेद है ?

वैरी—विचारोंके भेद होनेके कारण एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिका वैरी हो जाता है, अगर जिन कारणोंसे दोनोंमें मत-भेदभाव उत्पन्न हुए वह वस्तु (विषय) स्पष्ट या दूर हो जावे तो उनका वैर भाव दूर हो सकता है।

शत्रु—शरीरको हनन करने वालेको कहते हैं, यह भी भेदबुद्धिके कारण ही होता है और रोग जिससे शरीरका हनन हो सकता है, शत्रु ही है।

दुश्मन—दुष्ट वृत्ति वाले व्यक्तिका नाम-करण है। ऐसे व्यक्तिका स्वभाव कारण-अकारण सताना या वाधा पहुंचाना होता है।

मनुष्यके जीवन कालमें समय पर अर्थ प्राप्ति न होनेके कारण इच्छित कार्यको पूरा करनेमें वहुत वड़ी वाधा है। इस मन्त्रमें विशेष शक्ति है, जो विविध प्रकारकी वाधाका निवा-रण कर वैरीका नाश करता है। परन्तु साधक को मन्त्र और देवतामें पूर्ण निष्ठा होनी चाहिये। मन्त्र जपकी विधि निम्नलिखित है :—

आचमन, प्राणायाम, गणपति स्मरण कर सङ्कल्प करें :—

सङ्कल्प—तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि
द्वितीय-प्रहरार्धे श्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरत-
खण्डे आर्यावर्तदेशे पुण्यक्षेत्रे। कलियुगे कलि-
प्रथमचरणे। अमुक संवत्सरे, अमुकमासे, अमुक
पक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकगोत्रो,
अमुकशर्मा (गुप्ता, वर्म्मादि) मम धनदा
प्रासाद सिद्धि द्वारा शरीरे सर्वबाधा सकला-
रिष्ट निवृत्तिपूर्वक दीर्घायु शरीरारोग्यैश्वर्याभि-
वृद्ध्यर्थं लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं मार्कण्डेय पुराणांतर्गत
भवानी चरित्रान्तर्गत सप्तशती पाठान्तरस्थस्य सर्वाबाधा प्रशमनेति मन्त्रस्य लक्ष जप पुरश्चरणा-न्तर्गत यथा संख्या जपमहं करिष्ये।

विनियोग :—अस्य श्रीमार्कण्डेय पुराणा-न्तर्गत भवानी चरित्रान्तर्गत रिपु-रोग-दारिद्रच निवारण सर्वाबाधेत्यस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः शुम्भासुर विध्वंसिनि दुर्गादेवता रिपु-रोगदारिद्रच नाशार्थें जपे विनियोगः। प्रणवादि सर्वत्र न्याय करें।

ध्यानम्

पाणिग्रन्थितमीलितो रिपुगणान्निघ्नंत्यभीक्ष्णंतुह
विघ्नध्वंसनकारिणी निजपद प्राप्तानवन्ती जनान्।
भक्तत्राण परावराभयकरी विद्वेषिणी सर्वतो,
भूयान्मे भवभूतये भगवती दुर्गारिगर्वापहा॥

एवम् ध्यात्वा सर्वा बाधा प्रशमनेति मन्त्रो लक्ष जपः॥ गुग्गुल होमस्तर्पणादि कुर्यात्॥

(१) मन्त्रः

ॐ श्रीं सर्वा बाधा प्रशमनम्
त्रैलोक्यस्या-खिलेश्वरि !॥

एवमेव त्वया कार्यं मस्मद्
दारिद्रच नाशनम्॥ श्रीं ॐ स्वधाः॥

(२) मन्त्रः

ॐ ह्रीं सर्वा बाधा प्रशमनं
त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि !॥
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम्॥
ह्रीं ॐ हुँ फट् स्वाहाः॥

(१) इस मन्त्रका पवित्रता और नियमसे पुरश्चरण तथा अनुष्ठान करनेसे बाधाएं शान्त हो जाती हैं और इच्छित लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है॥

(२) इस मन्त्रसे बाधाओंका निवारण हो जाता है और वैरी अथवा भेदबुद्धिका नाश होता है। मनोवांछित कार्यकी सिद्धि होती है। यह मन्त्र राज्यमें विजय, रोग क्लेशसे मुक्ति, और मन:कामना देने वाला है। इसको पवित्रता या अपवित्रता अथवा चलते फिरते या लेटे हुए भी जाप करनेसे फलकी प्राप्ति हो जाती है।

तन्त्र-शास्त्रके अनुसार मन्त्रको गुरु द्वारा ग्रहण करनेसे ही लाभ होता है। अगर सद्गुरु समय पर उपलब्ध नहीं होवे तो शिवसे मन्त्र ग्रहण करना चाहिये। और शुभ दिन देखकर जप प्रारम्भ करें तो साधककी अवश्य ही मन:-कामना पूर्ण होगी।

जप करनेसे पहिले मन्त्रको चैतन्य करना आवश्यक है। बिना चैतन्य किये हुए मन्त्रका अनुष्ठान करनेसे फलकी प्राप्ति नहीं होती है। 'वरदा तन्त्र'में ऐसा उल्लेख मिलता है कि यदि मन्त्रको "ईं" से सम्पुटित करके जप किया जाय तो स्वयं ही मन्त्र चैतन्य हो जाता है।

यहाँ श्री गुरुदेवकी कृपासे उपरोक्त बीज-मन्त्रोंके अर्थ प्रकट किये जाते हैं :—

"श्रीं"—श=महालक्ष्मी, र=धन—सम्पत्ति, ई=तुष्टि, नाद=विश्वमाता और बिन्दु =दु:ख हरण ॥ इस लक्ष्मी बीज अथवा श्रीँ बीजका अर्थ है—धन-सम्पत्ति, तुष्टि-पुष्टिकी अधिष्ठात्री माता महालक्ष्मी मेरे दु:खोंका हरण करें।।

"ह्रीँ"—ह=शिव, र=प्रकृति, ई=महामाया, नाद=विश्वमाता और बिन्दु=दु:ख हरण ॥ इस शक्ति बीज अथवा माया बीजका अर्थ है—शिवयुक्त विश्वमाता महामाया मेरे दु:खोंका नाश करें ॥

तन्त्रशास्त्रमें "ह्रीँ" का बहुत ही महत्व बतलाया है—माया प्रणव=ह्रीँ कार (विज्ञान भैरव तन्त्रे पृष्ठ ३३)! (श्रीविद्या मन्त्र-भाष्यम् पृष्ठ ३०) ह्रीँ कारस्य हकार रेफकार बिन्दु नादात्मकतया रविहरिगणेशशिवाम्बिकानां तद्वाच्यत्वात्पञ्चदेवानित्यर्थः ।। हकारस्सूर्य-इत्युक्तः, र पावके हरौ कामे, ई धातो शैणादिकः कर्तरि इच्प्रत्ययः । तस्माताणेश इति, "बिन्दु रूप सदाशिव" "नारायणी नाद रूपे" त्यादि प्रमाणवचनात् । ह्रीँ कारस्य पञ्चदेवता-त्मकेत्वम् । एवम् गृहस्थस्य सारभूत धर्मा निरूपिताः ।।

सारांश ह्रीँ बीज पञ्च देवतात्मक है और भुवनेश्वरीका एकाक्षर मन्त्र भी है। इस बीज को उच्चारण करते समय बहुत सावधानी रखनी चाहिये—प्रायः रीम् या रींग् का उच्चारण करते हैं, वह गलत है। इसका उच्चारण ह्रा, ह्रि, ह्री की बारखड़ी बोलकर ध्यानसे ह्रीम् ह्रीङ् तथा "ह्रीँ" उच्चारण शुद्ध करना चाहिये।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

वर्तमान विषम परिस्थिति पर ग्रहयोगका दिग्दर्शन

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

गतवर्ष सं० २०२९ के 'नववर्षाङ्क' (वर्ष १६ संख्या १) में और सं० २०३० वि० के पंचांगमें वर्तमान वर्षकी ग्रहस्थिति पर इस स्तम्भमें जो विचार व्यक्त किये थे उनसे पाठक भली भांति परिचित हैं। आजसे ६ वर्ष पूर्व सं० २०२४ सन् १९६७ से हम अन्न-समस्या पर बराबर लिखते आ रहे हैं कि इस ओर शासनसूत्र-संचालकोंको विशेष ध्यान देना चाहिए। गत वर्ष जब सरकारने गेहूँके व्यापारको अपने हाथ में लेनेकी योजना बनाई थी उसी समय हमने भविष्यवाणी (पंचांग और ज्योतिष्मतीमें) की थी कि 'इस योजनासे कोई लाभ नहीं होगा। उल्टी अशान्ति बढ़ेगी और लक्ष्यानुरूप गेहूंकी प्राप्ति न हो सकेगी। इससे न मँहगाई रुकेगी और न गरीबी दूर होगी।' तदनुसार जो हुआ वह पाठकोंके सामने है। ग्रहयोगोंका विश्लेषण करते हुए सं० २०३० वि० के क्षय संवत्सरका फल वर्तमान वर्षके पचांगमें पृष्ठ १७ पर यों लिखा है—

"...... रुद्रविंशतिके इस अन्तिम क्षय वर्षका फल शास्त्रकारोंने अन्नकी कमी मंहगाई और मधुर पदार्थ गुड़ शक्कर शहद तैल और कपासके उत्पादनमें हानि होना लिखा है। प्रकृतिप्रकोप दुर्भिक्ष रोग विग्रहादिसे जनहानि और बुद्धिजीवी सदाचारी ब्राह्मणवर्गको कष्ट तथा चौर डाकू लुटेरों, दुराचारी अन्त्यजोंकी अभिवृद्धि होती है। जन-स्वास्थ्य क्षीयमाण रहता है। यथा—

कार्पास गन्ध तैलेक्षुमधुसस्यविनाशनम्।
क्षीयमाणाश्चापिनरा जीवन्ति क्षयवत्सरे॥
क्षयमिति युगस्यान्त्यस्यान्त्यं बहुक्षयकारकम्
जनयति भये तद्विप्राणां कृषीबलवृद्धिदम्।
उपचयकरं विट्शूद्राणां परस्वहृतां तथा॥"

इस वर्ष कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टिसे फसल नष्ट होनेकी सूचना दी थी। तदनुसार पहले महाराष्ट्र उत्तर-प्रदेश आदिके अनेक भागोंमें सूखा पड़ा और बादमें महाराष्ट्र मध्यप्रदेश उ०प्र० बिहार राजस्थान गुजरातमें अतिवृष्टिसे बाढ़ें आईं, बांध टूटे और मार्ग अवरुद्ध हो गये। इसकी सूचना 'श्रीविश्व-विजयपंचांग' (सं० २०३०) के पृष्ठ २३ पर इन शब्दोंमें दी है—

"..........भाद्रपद मासमें १६ अगस्तसे २७ अगस्त तक अति वृष्टिका योग है। कई प्रान्तोंकी नदियोंमें बाढ़ आवेगी, मार्ग अवरुद्ध होंगे। जलाशयोंके बांध टूटेंगे।...... कई प्रान्तोंमें पर्याप्त बिजली उपलब्ध न होनेसे अनेक प्रतिष्ठानोंमें पूर्ण उत्पादन नहीं हो पायेगा।" इत्यादि

इस वर्ष प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीकी लोकप्रियता कम होने एवं नयी कांग्रेस में अन्दर ही अन्दर असन्तोषकी आग भड़कने की सूचना भी गतवर्ष उक्त पंचांगके प्रान्तीय भविष्यमें पृष्ठ २५ पर इन शब्दोंमें दी है—

"..........दिल्लीमें इस वर्ष प्रधानमंत्रीकी

सत्ता तो बनी रहेगी, परन्तु लोकप्रियता कम होगी और अन्तरङ्गजनोंमें असन्तोषकी आग अन्दर अन्दर भड़केगी।.........''

गेहूंका व्यापार सरकारी नियन्त्रणमें जाते ही सर्वसाधारणजनको उत्तम गेहूँका आटा और अन्य आवश्यक वस्तुएं मिलना दुर्लभ हो गयीं। कमरतोड़ मँहगाई और गरीबीने प्रधान-मंत्रीको बेनकाब कर दिया है। प्रधानमंत्रीको मंत्रणा देने वाले महामनीषि अनेक सचिव दूरदर्शी मंत्री बैठे हैं, जो भविष्यकी बड़ी-बड़ी सुखद योजनाएं बनाते रहते हैं और जब उनकी करोड़ों रुपयोंकी योजनाओं पर पानी फिर जाता है तब भी वे दैवज्ञकी बात या ग्रहगतिके प्रभावको स्वीकार करके अपनी प्रतिष्ठाको कम करना नहीं चाहते। ज्ञान लवविदग्धजनोंका यह सहज स्वभाव है— "ज्ञानलव-विदग्धानां ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयितुं शक्तः।" अस्तु।

दो वर्ष पूर्व श्रीमती गांधीने भारतीय जनतासे इस प्रतिज्ञाके साथ वोट मांगकर केन्द्र और प्रान्तोंमें अपने बहुमतकी सरकार बनाई थी कि मैं गरीबी बेकारी दूर कर दूंगी। बड़े उल्लासके साथ जनताने यह नारा लगया था—"नई कांग्रेस आई है। नई रोशनी लाई है।" किन्तु अब दो वर्षोंमें ही यह नई रोशनी गरीबोंके लिए घोर अन्धकारमें परिणत हो गयी। इसका दिग्दर्शन दिल्लीके मासिक सहयोगी 'लोकालोक' ने अभी आश्विन मासके अङ्कमें "हमें हमारी गरीबी ही लौटा दो!" शीर्षक सम्पादकीयमें इस प्रकार कराया है—

"गत मास दिल्लीमें बड़ी रौनक रही। अन्नाभाव मँहगाई एवं भ्रष्टाचारके विरोधमें दर्जनों सर्वदलीय सम्मेलन एवं प्रदर्शन हुए। जनसंघ व पुरानी कांग्रेसने सत्याग्रह भूख हड़ताल आदि द्वारा मँहगाईकी प्रमुख समस्या की ओर शासकोंका ध्यान आकर्षित किया। हजारों महिलायें खाली कनस्तरों और डिब्बों को बजातीं चिलचिलाती धूपमें बोटक्लब पर एकत्रित हुईं और राष्ट्रपति भवन पर प्रदर्शन करके कांग्रेसी शासनकी २५ वर्षीय एकछत्र दुर्व्यवस्था, भ्रष्टाचारिता व अराजकताके अभिनन्दनार्थं स्यापा पीटा।

जनताकी इस आकुलता पूर्ण कुलबुलाहट ने मस्तीमें सोये शासकोंको जरा करवट बदलने पर विवश किया, फलतः कम्युनिस्ट पार्टीको घिराव एवं गोदामों पर छापे आदि मारनेका गुप्त इशारा करके सरकारी मशीनरी अन्न भण्डारोंको सील करने, छापे मारने, माल चैकिंग करने आदिके लिये हरकतमें आई। परन्तु देखने वालोंने आश्चर्यसे देखा कि यह सब नकली कार्यवाही थी, क्योंकि कहा जाता है छापे पड़नेसे एक दिन पहले ही व्यापारियोंको टेलीफोन द्वारा इस सब कार्यवाहीकी सूचना दी जा चुकी थी। इसलिये सिविल सप्लाई वालोंका अमला, पुलिसकी गारद, कम्युनिष्ट पार्टीके नारे इन सबका अभियान हमें तो ऐसा ही मालूम हुआ जैसे यह 'उपकार' फिल्मकी सूटिंग चल रही है।

दिल्ली प्रशासनके एक मंत्रीजीने तो ऐसे समयमें दाल, चावल आदिके व्यापारियोंसे मिलकर बाजार भावसे सवाये मूल्यों पर प्रशासनिक कण्ट्रोलकी मुहर लगाकर न केवल समाचारपत्र व विज्ञापनादि द्वारा अपनी जनहित कारिणी नीतिका परिचय दिया, बल्कि सैंकड़ों डिपो भी रातों रात खोल दिये गये। इस प्रकार इन जनसेवकजीने इस अकेले दाल घोटालेमें

कितना लाख बनाया होगा, इसे राम जाने या रमण।

केन्द्रीय खाद्य मंत्रीने स्वयं स्वीकार किया है कि देशमें अनेक राशनकी दुकानोंका अस्तित्व नहीं, किन्तु सिविल सप्लाई वालोंकी किताबोंमें दुकानें चल रही हैं और लोग उनसे राशन प्राप्त कर रहे हैं, कोयलेका डिपो वस्तुत: अस्तित्वमें नहीं, परन्तु वैगन एलाट हो रहे हैं। जबकि दूसरी ओर जनता कोल डिपुओंके सामने लम्बी लम्बी लाइन लगाकर "नई कांग्रेस आई है। नई रोशनी लाई है"—नारेका सुनहला रूप देख रही है।

कीड़े पड़ा आटा कण्ट्रोल रेट पर, चार रुपये किलो दालें व चावल, पच्चीस रुपये किलो घी, डालडाके लिये भी दुकानदारकी मिन्नत खुशामद, कोयलेके लिये दफ्तर या काम से छुट्टी लेकर दिनकी बर्बादी और सपरैटा दूध प्राप्त करनेके लिये भी महिलाओंका रात-रात भरका जागरण। वाह भई! क्या कहने हैं नई रोशनीके! खूब आई है ये। सारा हिन्दुस्तान सचमुच निहाल हो गया है इसे पाकरके तो। देशका कोना-कोना जगमगा उठा है।

रोशनीका नाम लेनेसे बिजलीकी रोशनी की याद आ गई हमें, जो आजकल महीनेमें ३२ दिन गुल रहती है। जब देखो तब करण्ट गायब। मजा आ गया उस दिन तो जबकि हमारी प्रधानमंत्रीजी कमानी आडिटोरियममें एक सम्मेलनका उद्‌घाटन कर रही थीं कि करण्ट चला गया। सारे हालमें गुप्प अन्धकार! अंग रक्षक सुरक्षाके लिये प्रधानमंत्रीके चारों ओर चौकस हो गये। आपत्कालीन प्रकाश व्यवस्थामें श्रीमती गांधीको आधा घंटा बिना रोशनीके ही अपने भाषणकी रोशनी बिखेरनी पड़ी। सभी प्रमुख शहरोंमें बिजलीके साथ-साथ पानीकी भी यही समस्या है। बिजली व पानी कर्मचारियोंकी आये दिनकी हड़ताल व तोड़-फोड़ (जिसे वे कभी कौएके बैठ जानेके कारण होने वाली दुर्घटना कह देते हैं, अथवा कभी जनरेटरमें चूहा फंस जानेके कारण) की यह कार्यवाही भी मालूम देने लगा है शायद 'नई रोशनी' अथवा 'समाजवाद' का ही एक अनिवार्य अंग है।

इन तीन चार वर्षोंमें स्थिति यहां आ पहुंची है कि गांधी ग्राउंडके एक सम्मेलनमें जो कि आचार्य कृपलानीकी अध्यक्षतामें हुआ प्राय: वक्ताओंने यही मांग की कि हमारे आकाओ! हमारे हाल पर रहम करो। हम अब और अधिक अमीर नहीं होना चाहते, हमारी तीन वर्ष पुरानी वह गरीबी ही कृपा कर हमें वापिस दे दो।

पर यह सरकार क्या जनताकी इस मांग को पूरा कर सकेगी? शायद नहीं।"

ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण और शनिका प्रभाव

मार्गशीर्ष शु० १५ सोमवार दि० १० दिसम्बर १९७३ को प्रात: ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण वृश्चिक लग्नमें हो रहा है। इस ग्रहणका पूर्ण विवरण स्पर्श मोक्षकाल और चन्द्रास्तका भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम पहले पृष्ठ १५ पर दिया गया है। वृषभराशिमें चन्द्रग्रहण होगा। यह राशि केतु और मंगलकी पापकर्तरीमें है तथा लग्नेश मंगल छठे स्थानमें गया है। यह ग्रहण स्थिरराशि और स्थिर लग्नमें हो रहा है अत: इसका अनिष्ट प्रभाव लम्बे समय तक चलेगा। इस वर्षका धान्येश शनि है, यह प्रकृति-

प्रकोप बाढ़ एव कहीं सूखा तथा कहीं ओला पालासे फसलको हानि पहुंचाता है। १० जून १९७३ से शनि मिथुन राशिमें आया है, इसका फल हमने 'श्रीविश्वविजयपञ्चांग'में दुर्भिक्ष मँहगाई और पश्चिममें विग्रह लिखा था।

"मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥"

इस वर्षके प्रारम्भसे ही अन्नादि पदार्थके भाव बढ़ने लगे हैं और १० जूनसे आगे तो उत्तरोत्तर मँहगाई पराकाष्ठा पर पहुंच रही है। बम्बई कलकत्तामें गेहूं चार-पांच रुपये किलो तक भी सुविधासे प्राप्त नहीं हो रहा। अब १७ अक्तूबर ७३ से २७ फरवरी ७४ तक धान्येश शनि वक्री रहेगा, इसी अवधिमें २० नवम्बरसे गुरु अतिचारी हो रहा है और १० दिसम्बरको ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण तथा २३ जनवरी ७४ को मकरराशिमें पंचग्रही योग है। ये सब योग खाद्यान्नकी स्थितिको विषम और राजनैतिक सामाजिक साम्प्रदायिक स्थिति को विस्फोटक बनाने वाले हैं। गेहूँका भाव और ऊंचा जावेगा और अनेक स्थानों पर शुद्ध गेहूं तथा आटा अप्राप्य होगा।

प्रधानमंत्री और प्रान्तीय शासनसूत्र संचालकोंको हमारी चेतावनी है कि वे आने वाले संकटसे सावधान रहकर उचित व्यवस्था करें, अन्यथा विस्फोटक स्थिति पर काबू पाना उनके लिए कठिन हो जायेगा। गेहूँके सरकारी करणका जो प्रज्ञापराध उन्होंने किया है उसका प्रायश्चित्त करें और राष्ट्रहितमें उसे अपनी प्रतिष्ठाका प्रश्न न बनावें। चावल पर अभी हाथ न डालनेका निश्चय करके सरकारने बुद्धिमत्ता की है। गेहूँका शिरदर्द भी सरकार अपने माथेसे उतार फेंके और थोक एवं खुदरा गेहूँका भाव निश्चित कर दें तो समस्याका समाधान हो सकेगा। सरकारको दण्डनीति अपने हाथमें रखनी चाहिए। नियम (कानून) बनाना और उस पर चलानेका काम सरकार का है। स्वयं मनमानी नफाखोरीसे दुकानदारी चलाना सरकारका काम नहीं है।

मिथुनके शनिमें (विशेषतः वक्रत्वकालमें) केन्द्र और प्रान्तीय मंत्रिमण्डलोंमें कुछ अकल्पित फेर बदल होगा। दलबदलकी घटनाएं और जोड़-तोड़ अधिक होंगे। पंजाब उ०प्र० म०प्र० बिहार उड़ीसा असम हि०प्र० गुजरात राजस्थान तमिलनाडु और केरलकी राजनीति में उफान आयेगा। आरोप प्रत्यारोपसे कुछ प्रान्तोंमें मंत्रिमण्डल टूटेगा और कहीं राष्ट्रपति शासन होगा। श्रमिकवर्ग और साम्यवादी तत्व देशमें यत्रतत्र हड़ताल प्रदर्शनादि द्वारा अशान्ति फैलावेंगे। कुछ दुर्घटनाएं होंगी। पौष माघमें हिमपात ओलावृष्टि और शीत लहरसे भी पश्चिमोत्तरीय भारतमें फसलको हानि होगी। फरवरीसे जून १९७४ तक विश्व और भारतमें अनेक अकल्पित घटनाएं घटित होंगी।

क्षय संवत् और स्त्री-राज्यका चमत्कार

'वर्तमान भविष्यका निर्माता है' यदि यह सत्य है तो यह मानना चाहिए कि चावल गेहूं के थोक व्यापारका सरकारके अधिग्रहण करने के दुराग्रहसे सामान्य जनताकी विपत्तिमें कोई कमी नहीं आयेगी। इसके साथ, कम्युनिज्म सोशलिज्मके जादू या आकर्षणका भी अन्त हो जायेगा, जैसे कि रूसी वैज्ञानिक उद्जन बमके निर्माता 'सखारोव'का समाप्त हो गया

है। वैयक्तिक पूंजीवादकी तुलनामें संगठित सेना व पुलिससे संरक्षित सरकारी पूंजीवाद अधिक विनाशक, भ्रष्टाचार बढ़ाने वाला और जनताको निःसत्व और नपुंसक बनाने वाला है। यह सत्य भारतीय जनताको उजागर होना शेष है। वैयक्तिक पुञ्जीवाद यदि गलती करे तो उसके कान ऐंठनेके लिए सरकार है। परन्तु यदि सरकारी पूंजीवाद गलती करे, तो उसका कान पकड़ने वाला कौन है? वह निरंकुश है। लोकतंत्रको नष्ट करने वाला है। अतः वह प्रगतिमें सबसे बड़ी बाधा है। भारत इस वास्ते २६ साल बाद भी एक पिछड़ा देश है। पौष्टिक आहार न मिलनेसे हर साल १० लाख शिशु असमय मर जाते हैं। बंगलौरमें एक ३० वर्षकी युवती अपने चार भूखे बच्चों को कुएंमें फेंकनेके बाद आप भी कूद गई। यह है स्थिति उस समय जब भारतीय परम्परा का भंग कर इस देशमें स्त्री राज्य है।

"स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम्।"

दो सालमें कीमतें किस मात्रामें बढ़ी हैं। देखिए स्त्रीराज्य और क्षय संवत्‌का चमत्कार—

	जनवरी १९७१	जनवरी १९७३
	(रुपयोंमें)	(रुपयोंमें)
अच्छा आलू (प्रति किलो)	१.००	१.८५
डालडा वनस्पति (खुला प्रति किलो)	६.००	११.००
उड़द (दाल प्र०कि०)	१.६०	३.५०
गुड़ (प्र०कि०)	१.६०	४.००
नारियलका तेल	६.००	११.००
तिलका तेल (प्र०कि०	५.८०	११.५०
मांस (प्र०कि०)	६.००	१२.००
अण्डा (दर्जन)	३.००	६.००

दो वर्षमें कितना अन्तर आया। इससे सहजमें १९७४ की कीमतोंका अनुमान किया जा सकता है। वित्तमंत्री मानते हैं कि मुद्रा-स्फीति एक कारण है कीमतें बढ़नेका। पर वित्तमंत्रीने यह नहीं बताया कि किस मात्रामें १९७२ में घाटेकी वित्तीय व्यवस्थाका सहारा लिया गया। बजटमें केवल २८० करोड़ रु० दिखाया गया। पर यह वस्तुतः १९७२-७३ में ८०० करोड़ रु० हुआ। इसमें राज्योंका १५१ करोड़ रुपयेका घाटा नहीं जोड़ा गया है। इसको देखते हुए क्या माना जा सकता है कि १९७३-७४ में १००० करोड़ रुपयेसे कम मात्रा में घाटेकी वित्तीय व्यवस्थाका आश्रय न लिया जायेगा।

वित्तमंत्रीका ४०० करोड़ रु० व्यय घटाने का संकल्प तो इन्द्रदेवने उसी प्रकार बहा दिया, जिस प्रकार 'शिमला पैक्ट' सिन्धु सागर (अरब सागर) बहा ले गया। खरीफकी फसल तो वर्षा बहा ले गई। कमर-कमर तक सुलतानपुर जिला अवध के खेतोंमें पानी भरा हुआ है। ठीक है, गाजीपुर जिलेकी जर जमीन हरी भरी घाससे भरी है। क्या भारतीय सं० २०३१ वि० में घास खाकर जीयेंगे? यांग्सी नदीमें बाढ़ आनी बन्द हो गई तो ब्रह्मपुत्र, रामगंगा, गंगा, घाघरा, सरयूमें बाढ़ आनी क्यों नहीं बन्द हुई? क्योंकि यह देश इस बातको भूल गया।

शिला भूमि रश्मा पांसु सा भूमिः संधृता धृता।
तस्यै हिरण्य वक्षसे पृथिव्यः अकरं नमः॥
(अथर्व. १२।१ २६)

मिट्टी, शिला, पत्थरकी बनी भारतभूमि को 'संधृता धृता' रखनेसे ही भारत सन्तानकी यह प्रार्थना पूरी हो सकती है :—

यमश्विनावभिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे।
इन्द्रो या चक्र आत्मनो अनमित्रा शचीपतिः।
सानो भूमिर्विसृजता माता पुत्राय येपयः॥
(अथर्व. १२।१।१०)

ज्योतिषीय रोग निदान पर एक विहंगम दृष्टि

[लेखकः—महाराजा श्री विक्रमसिंहजी]

किसी भी सायन्सके द्वारा सूक्ष्म विचारके लिये उसके आधार भूत मूल सिद्धान्तोंकी जानकारी अनिवार्य है। जैसे आयुर्वेदीय रोग निदानके लिये वात पित्त कफ आदि त्रिदोषका स्वरूप, स्थान, समय और तत्संभव रोगोंके लक्षणोंकी जानकारी, पंच तत्त्व और रसरक्तादि धातुओं पर उनके प्रभावका ज्ञान आवश्यक है ; उसी प्रकार ग्रह और राशियोंका उक्त त्रिदोष, पंच तत्त्व और अष्ट धातुसे क्या सम्बन्ध है इसकी जानकारी भी आवश्यक है।

ज्योतिषके द्वारा रोग निर्णय जन्म-कुण्डली या प्रश्न कुण्डली द्वारा किया जाता है। कुण्डलीके १२ खानों (या भावों)में मानव शरीरका अंग विभाग निम्न प्रकार किया गया है :—

(१) शिर व चेहरा, पेशानी, कपाल, बुद्धि और तत्संबन्धी हड्डियां व स्नायु केन्द्र।
(२) गर्दन, गला, टौंसिल, पिछला दिमाग, दाहिनी आँख, कनपटी, गाल, मुंह, दांत, दांया पाँव।
(३) कन्धे व हाथ, हसलियां, भुजायें, स्केपुला, दाहिना कान व फेफड़े, रक्त, श्वास, दाहिनी टांग।
(४) छाती, श्वसन यंत्र, भुजा, आमाशय, पाचक अंग, छातीकी हड्डी व पसलियां, दाहिना घुटना।
(५) रीढ़, पीठ, बाँह, हृदय, पीठकी हड्डियां, छोटी आंत, पेट, जिगर, दाहिनी जांघ।
(६) उदर, नाभि, बड़ी आंत, पेड़ू, अन्न मार्ग।
(७) कमर व त्वचा, कमरकी हड्डियां, गुर्दे, मूत्राशय, लिंग, योनि, गर्भाशय।
(८) उत्पादक अंग व गुदा, वीर्य संस्थान, अंडकोश।
(९) कूल्हे, जांघ, धमनी, शिरायें, बाँई जांघकी हड्डी, तिल्ली।
(१०) घुटने, हड्डियां, जोड़, बांया घुटना व जांघका कुछ हिस्सा।
(११) टखने व पिंडली, पांव, बाँई टांग व इन स्थानोंकी हड्डियां, रक्ताभिसरण क्रिया, बांया कान, गाल हृदय।
(१२) पांव व पांवकी अंगुलियां व हड्डियां, ग्रन्थियोंका लेसदार रस-विशेष, बाँई आँख।



स्पष्टीकरणके लिये यहां सामने कुण्डली बना कर संकेतके लिये एक-एक अंग लिखा जा रहा है।

सांकेतिक नामके साथ अन्य जितने अंग ऊपर लिखे हैं उन सब का विचार उसी भावसे किया जाना चाहिये।

कुण्डलीके प्रत्येक भावमें बारह राशियोंमेंसे कोई राशि अवश्य होगी और किसी-किसी राशि में ग्रह भी स्थित होंगे, इस लिये राशियों व ग्रहोंका रोगसे संबन्ध जानना भी आवश्यक है ; अतः राशियोंका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :—

(१) मेष— अग्नि तत्त्वके द्वारा पित्त दोष रक्तमें पैदा करके बौद्धिक रोग अनिद्रा अतिनिद्रा

आदि पैदा करती है। दृष्टि मांद्य या पायोरिया भी देती है। ज्वर दाग फोड़े होते हैं।

(२) वृष— भू तत्त्वमें वात विकार द्वारा मेदेमें दोष पैदा करती है, इससे शोथ गलगण्ड आदि रोग होते हैं। स्वाद हीनता शिरोरोग सर्दी भी होती है।

(३) मिथुन— वायु तत्त्वमें पित्त दोष पैदा करती है। श्वास संस्थान को प्रभावित करके खांसी निमोनिया, दमा, क्षय आदि पैदा करती है। चर्म रोग व शोथ भी देती है।

(४) कर्क— जल तत्त्वमें कफ दोष उत्पन्न करती है। वक्षस्थल व गुर्दोंको प्रभावित करके प्रदर चेचक कैन्सर मूत्रविकार जलाधिक्य पैदा करती है। मुंह या हृदयके रोग होते हैं।

(५) सिंह— अग्नि तत्त्वमें पित्त दोष पैदा करती है। पाचक अंगों पर प्रभाव रखती है, इस लिये बदहज़मी, प्रमेह, कम्प, अशक्तता पैदा करती है। आँख को भी प्रभावित करती है।

(६) कन्या— पृथ्वी तत्त्वमें वात दोष पैदा करती है। उदर पर प्रभाव रखती है, इस लिये कब्ज़, गुदाके कष्ट, अपेण्डि साइटिस, शिरा कष्ट देती है।

(७) तुला— वायु तत्त्वमें पित्त दोष पैदा करती है। नाभि के नीचे इसका क्षेत्र है, अतः कमर-दर्द, मूत्राशय व गुर्दों का दर्द, रतौंधाका कष्ट देती है।

(८) वृश्चिक—जल तत्त्वमें कफ विकार पैदा करती है। गुप्तांग इसका क्षेत्र है अतः अर्श भगन्दर जख़्म गर्मी सूजाक पैदा करती है। गुदा पर विशेष प्रभाव रखती है।

(९) धनुः— अग्नि तत्त्वमें पित्त दोष पैदा करती है; धमनी शिरायें कूल्हे इसका क्षेत्र है, इसलिये गठिया वात, पक्षाघात, संज्ञाहीनता व दौरे, साइटिका, कूल्हों का दर्द देती है।

(१०) मकर— पृथ्वी तत्त्वमें वात विकार पैदा करती है। जोड़ों में दर्द, कुष्ठ, हाथ पांव दर्द करती है। मूत्र विकार प्रसव रोग व नाकके रोग।

(११) कुंभ— वायु तत्त्वमें पित्त विकार पैदा करती है। रक्ताभिसरण पर प्रभाव रखती है, अतः स्नायु मण्डलको विकृत करती है। त्रिदोषजन्य रोग पैदा करती है, अकड़न लाती है।

(१२) मीन— जल तत्त्वमें कफ विकार पैदा करती है। रसरक्त इसका क्षेत्र है, अतः खांसी, वीर्य क्षय, तपेदिक, गलगण्ड या मेदसे कष्ट देती है। विस्मृति, वात विकार, कानमें कष्ट इत्यादि।

इसी प्रकार ग्रहोंके तत्त्व निम्न प्रकार विभाजित हैं :—

(१) सूर्य :—पित्त व वात मिश्रित दोषसे कष्ट देता है। प्रायः ज्वर, दुर्बलता, हृदय रोग, पेट दर्द, चक्षु रोग, चर्म रोग, गर्मी, सूजाक, अग्नि दाह, फिट्स, विष विकार, ऊंचे स्थानसे गिरना आदिसे कष्ट देता है।

(२) चन्द्रमा :—कफके साथ वात विकारसे कष्ट देता है। निद्रा, सुस्ती, सर्दीका ज्वर, कफ विकार, फोड़े बदहज़मी, पीलिया, मानसिक निर्बलता, रक्त विकार, जलघात, सींग वाले पशुओं से भय देता है। रक्त विकार, प्रदर, मूत्र विकार, दस्त के रोग, वायुगोला, क्षय, मानसिक विकार या निर्बलता, एनीमिया (रक्ताल्पता) से कष्ट देता है।

(३) मंगल :—पित्त विकारसे प्यास, रक्तदोष, पीलिया, अग्नि भय, ज्वर, शस्त्र भय, विष-भय, प्रदर, फोड़े फुन्सी जख्म, शिरारोग, आँखके रोग, मज्जाके रोग, फिटस्, अल्सर, औपरेशन, दुर्घटना आदि इसके क्षेत्र में आती है।

(४) बुध :—त्रिदोष विकारी है, वात ज्वर, पित्त ज्वर, चर्म रोग, श्वेत प्रदर, जख्म फोड़े, ऊंचे से गिरना, मन का भ्रमित या अन्य मनस्क होना, शोथ, आँख, गर्दन, नाक के रोग, इस ग्रहके प्रभाव से होते हैं।

(५) बृहस्पति :—कफके साथ वात विकार, ज्वर, पेचिश, पागलपन या शून्यता, पेट में वायु बनना, छाती में कफ बनना, कर्ण रोग, कम्पन, मूर्च्छा, प्रमेह। वायुयान दुर्घटना इत्यादि से कष्ट देता है।

(६) शुक्र :—वात व कफसे कष्ट देता है। यौन विकारोंसे संबन्धित है। अनियमित संभोग, प्रमेह, मूत्र विकार, स्नायु विकार, गर्मी, सुजाक, दुर्बलता, शोथ, श्वेत प्रदर, आँखके रोग, श्वासावरोध, शिरोरोग, कम्प, चेचक।

(७) शनि :—वात विशेष व पित्त मिश्रित दोष करता है। भूख प्यास संबन्धी रोग, स्वाद हीनता, कान व कमरके रोग, प्रदर, प्रमेह, कैंसर, कम्प, पंगुपन, चर्मरोग, आमाशय व पांव के समस्त रोग जो वात विकार व कफ विकार से पैदा होते हैं। तिल्ली जिगर पत्थर या पेड़से चोट करता है।

(८) राहु :—त्रिदोष जन्य रोगोंसे हृदय कमर व शिरा पर प्रभाव रखता है। हृदय रोग, दुर्बलता, प्रदर, सुस्ती, जख्म, आँखके व पावोंके रोग, विष या विषैले जानवरोंसे भय। इस ग्रहके रोग असाध्य माने जाते हैं।

(९) केतु :—त्रिदोष जन्य विकार करता है। इसके प्रभाव से जख्म घाव अल्सर अग्नि-दाह आदि राहुके ही समान है। ग्रहोंकी प्रभाव राशियां, स्थान और समय निम्न लिखित हैं :—

[क] सूर्य व मंगल :— अग्नि तत्त्व प्रधान हैं। १-५-७ राशि पर अधिकार रखते हैं। भूख प्यास, नींद, शक्ति, रूप, आलस्यके रूपमें शरीर पर प्रभाव डालते हैं। बुद्धिको विकृत करते हैं। जुलाई से सितम्बर तक प्राय. अधेड़ व्यक्तियोंको कष्ट देते हैं। रोगकी उत्पत्ति हृदयसे नाभि तकके क्षेत्र में होती है।

[ख] शनि व बृहस्पति :—वात प्रधान ग्रह हैं। ३-७-११ व १२-१०-२ राशियों पर अधिकार रखते हैं। शनि अंग संचालन व श्वासके द्वारा और गुरु काम, क्रोध, भय आदि उतेजना, कम्प, मूर्छा द्वारा मई से जुलाई तक वृद्ध व्यक्तियों पर रात्रिके अंतिम प्रहरमें असर दिखाते हैं। इनके रोग प्राय: नाभिसे नीचेके हिस्सेमें उठते हैं।

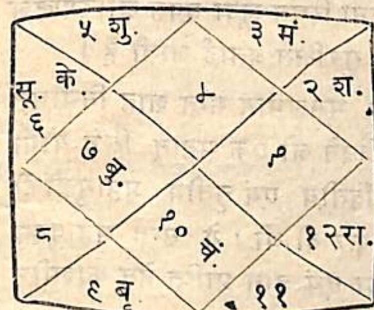
[ग] शुक्र, चन्द्रमा और बुध :—कफ प्रधान हैं। शु चं. ४-८-१२-१०-११ और बुध २-६-१० राशियों पर अधिकार रखते हैं। बुध पृथ्वी तत्त्वके अस्थि त्वचा मांस वाल व शिराओं पर, शुक्र चन्द्रमा रक्त, वीर्य, थूक, पसीना व मूत्र पर प्रभाव रखते हैं। इन ग्रहोंके रोग गला, छाती व फेफड़ोंके रोगों द्वारा प्राय: बच्चों को कष्ट देते हैं। शिशिरमें रोग प्रारम्भ हो कर ग्रीष्ममें समाप्त होता है। दिन या रात्रिका प्रारम्भ कष्टप्रद है।

उक्त आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के बाद ही हम रोग निर्णयके लिये विचार कर सकते हैं। अतः निदानके मुख्य नियम हमें ध्यानमें रखने होंगे, वे इस प्रकार हैं :—

[अ] रोगका विचार छठे भावसे किया जाता है, इसलिये कुण्डलीके छठे भावमें स्थित राशि व ग्रह अपने तत्त्वोंके अनुरूप रोग करते हैं। षष्ठेश जिस भावमें या राशिमें पड़ा होगा शरीरके उसी अंगमें उन राशियों व ग्रहोंके तत्त्वोंका रोग करता है। [आ] षष्ठेशके अलावा पाप ग्रह या नीच शत्रु गृही सौम्य ग्रह और अष्टमेश व्ययेश जहां पड़े हैं, जिन भावोंके स्वामी हैं और जिन भावोंको देखते हैं उनके रोग देते हैं। रोग अनन्त हैं और उनकी स्टेजेज भी अनन्त हैं, जसे श्वास संस्थानके रोग खांसी, जुकामसे लेकर क्षय या दमा तक अनेक श्रेणियोंमें विभक्त किये जा सकते हैं,जो विभिन्न राशियों व ग्रहोंके द्वारा शरीरके विभिन्न भावोंमें निर्णीत होंगे। संबन्धित ग्रहोंकी दशासे रोगका समय भी निर्धारित किया जा सकता है।

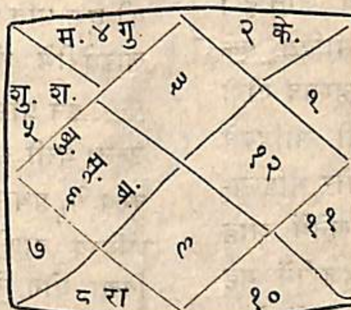
संक्षेपमें शरीरके अंग विभागके अनुसार जिन भावोंमें हीनबली या पाप ग्रह पड़े हों उनमें राशि व ग्रहोंके रोगोंका अनुमान करना चाहिये। उदाहरण रूपमें तीन कुण्डलियां नीचे दी जा रहीं हैं :—

१. कमर दर्द।
२. बाईं आँखका आपरेशन।



१. धनु राशि व नवम भाव कमरके द्योतक हैं। नवम भावमें राहू व छठे गुरु कमर दर्द बताते हैं।
२. १२वां भाव बाँईं आँखका द्योतक है वहां स्थित मंगल शस्त्र भय देता है।

१. भगन्दर।
२. दाहिनी आँखमें रोशनी लुप्त।



१. छठे भावमें ८ राशि गुदा को बताती है इसका स्वामी मंगल व छठे स्थित राहु जख्म भगन्दरके द्योतक हैं।
२. दूसरा भाव दाहिनी आँखमें नीचका मंगल दृष्टि हरता है।

१. छातीमें कैन्सर दाहिनी तरफ।



१. चतुर्थ भाव छातीका है, उस में कर्क राशि स्थित है जो छाती पर प्रभाव रखती है। शनि व मंगलकी पूर्ण दृष्टि है जो जख्मसे कष्ट देते हैं।

—लेखकों को आवश्यक सूचना—

आगामी अङ्कके लिये जो लेख कार्तिकी पूर्णिमा दि. १० नवम्बर ७३ तक सम्पादकके पास पहुंच जावेंगे उनपर विचार करके मुद्रणार्थ दिये जा सकेंगे। इस अवधिसे बादमें आने वाले व्यापार सम्बन्धी सामयिक लेख भी माघ मास के अंक में स्थान नहीं पा सकेंगे। —व्यवस्थापक 'ज्योतिष्मती' सोलन

आठ सौ वर्ष पुरानी भविष्यवाणी

[लेखक श्री :—जयसिंह शर्मा भारद्वाज ज्योतिषी]

श्री हज़रत शाह न्यामत उल्ला वली साहिबने ८०० बर्ष पूर्व भविष्यवाणी की थी जो सत्य प्रमाणित हुई। आगे जो भी घटित होने वाला है उसके बारेमें पाठक अनुमान लगा लें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्यमें भी उनकी कथित भविष्य वाणी सत्य रूपमें घटित होंगी। शाह साहिबने ५ कसीदे इरशाद फर्माये हैं और हर कसीदेमें लगभग १०० असार हैं। इसतरह कुल असारकी संख्या ४५०० होती है। इनके असार (कविता) भिन्न-भिन्न स्थानों पर कई एक महानुभावोंके पास बताये जाते हैं। हज़रत शाह न्यामत उल्ला वली साहिब एक पहुँचे हुए फ़कीर योगी पुरुष थे। मुहम्मद गौरी के इरशाद (फरमाइश) पर वली साहिबने ८०० वर्ष पूर्व यह कसीदे लिखे और भविष्य-वाणी की थी। इन कसीदोंके लिखनेमें शाह साहिबको १ साल लगा। ५६० हिज़रीमें यह कलाम फर्माया जो सन ११७४-११७५में होता है। सन् १९२२ई०में ख्वाज़ा हज़रत निज़ामीने अपनी किताब "जहूर इमाम मेंहदी"में १२५ शेर (कविता) प्रकाशित किये थे।

कहा जाता है कि वली साहिब बुखाराके थे। सैद या सैयद न्यामत उल्ला करमानी ७३० हिज़री सन् १२२९-३०ई०में हलबके मुकाम पर पैदा हुए थे। आपके पिता सैयद मीर अब्दुल्ला थे। आपने १० वर्षसे ज्यादा उम्र पाई और माहान्के २२ रजब ८३४ हिज़री तदनुसार १५ अप्रैल १४३१ई०को इन्तकाल (स्वर्गवास) फर्माया। "न्यामत" तखल्लुस था। उन्होंने कसीदोंके द्वारा कलाम फर्माया। बादशाह हुमायु ने ये कसीदा तोहफे (उपहार)के रूपमें शाह ईरान भिजवाये। ईरानसे कसीदा अफ़गानिस्तान चला गया, वहांसे ईराक पहुँच गया। ईरान, ईराक अफ़गानिस्तानके शाही कुतुबखानोंमें अब भी मौजूद है। वहांसे एक नक़ल मांग कर देहली शाही कुतुबमें मौजूद थी जो सन् १८५७के ग़दरमें अंग्रेज़ोंका अधिकार होने पर लन्दन भेज दी गई। और आज वहां इण्डिया औफिस लाइब्रेरीमें सुरक्षित है। कसीदा की एक प्रति पटना स्थित खुदा बक्स औरियण्टल लाइब्रेरीमें भी सुरक्षित बताई जाती है।

इन प्रसिद्ध मुसलमान सन्त शाह नियामत उल्ला वली साहिबने जो एक महान् सिद्ध योगी पुरुष थे, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय महायुद्धोंकी भविष्य वाणी कर दी थी। ये सन्त महापुरुष विद्या, योग विद्या एवं ज्ञान प्राप्ति हेतु काश्मीर और मुल्तान भी पधारे थे।

भारतके विषयमें प्रकाश डालते हुए लिखा कि मुसलमानोंके राज्यके बाद यह देश विदेशियों के हाथमें चला जावेगा। जापान रूसमें युद्ध होगा जिसमें जापान विजयी होगा। (यह युद्ध१९०४ई० में हुआ था) तत्पश्चात् जापानमें भयंकर भूकम्प आवेगा (१९२३का जापान भूकम्प)। प्रथम युद्धके बारेमें लिखा कि संसारमें एक बड़ी लड़ाई अलफ (अंग्रेज़) जीम (जर्मनी) में होगी। अलिफ (अंग्रेज़) जीम (जर्मनी) पर विजयी होगा। द्वितीय विश्व युद्धके विषयमें लिखा। प्रथम युद्धके २१ वर्ष बाद द्वितीय विश्व युद्ध होगा। १९१८के

२१ वर्ष बाद ३-९-३९ ई० को द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हुआ। इसमें २ अलिफ (अंगरेज, अमरीका) रूस और चीन आपसमें मिल कर अलिफ (इटली) जीम (जर्मनी) तथा दूसरे जीम (जापान) पर अस्त्र शस्त्र चलायेंगे। अलिफ (अमरीका)के पक्षपाती विजयी होंगे। युद्ध छः वर्ष तक चलेगा। (१९४५ में समाप्त हुआ)

भारत-पाकिस्तानके विभाजनके बारेमें भी लिखा कि अंग्रेज भारतको आज़ाद कर छोड़ जावेंगे। भारतका विभाजन होगा। विभाजित भाग सदा आपसमें लड़ते रहेंगे। अशांति बनी रहेगी। स्त्री जाति स्वतंत्र होगी। पर्दा प्रथा प्रायः समाप्त होगी। तृतीय विश्व युद्धके विषय में लिखा है कि अमरीका इस युद्धका एक प्रधान दल होगा। पराजित जर्मनी तथा रूस एक हो कर संसारको क्षण भरमें नष्ट करने वाले शस्त्रोंका प्रयोग करेंगे। अंग्रेजोंकी भी हानि होगी। ये प्रायः नष्ट हो जावेंगे। अंग्रेज सभ्यता नष्ट हो जावेगी।

[शेष आगामी अंक में]

सूचना

यह नववर्षाङ्क दि० २८ सितम्बर ७३ को सोलनके बड़े डाकघरसे सब ग्राहकोंके नाम भेजा जा रहा है। ३ अक्तूबर तक निश्चित तिथि आश्विन शु० १५ से १० दिन पहले सब पाठकोंको मिल जावेगा। कदाचित् किसी ग्राहकके पास डाककी गड़बड़से १० अक्तूबर तक भी न पहुँचे तो वे १२ अक्तूबरसे पहले पत्र लिखकर दुबारा मँगवा लें। ११ अक्तूबरके बाद किसी ग्राहकको यह अंक दुबारा नहीं भेजा जावेगा।

—व्यवस्थापक

हिमाचलकी प्रगतिके ढाई दशक

* हिमाचल-प्रदेश १५ अप्रैल १९४८ को अस्तित्वमें आनेके बादसे विकासके विभिन्न क्षेत्रोंमें निरन्तर प्रगति करता आ रहा है। हिमाचलका निर्माण मुख्य आयुक्त के प्रान्तके रूपमें हुआ। १९४८ में इसका क्षेत्रफल २४,००० वर्ग किलोमीटर और आबादी ९.३६ लाख थी। आज हिमाचल एक पूर्ण राज्य है और इसका क्षेत्रफल ५५,६५८ वर्ग किलोमीटर और आबादी ३४.६० लाख है।

* तब इसका राजस्व ८५ लाख रुपये था। अब ३५.९४ करोड़ रुपये है। प्रति व्यक्ति आयके मामलेमें हिमाचल जो भारतका एक अत्यन्त पिछड़ा हुआ क्षेत्र था, आज देशमें पांचवें स्थान पर है।

* पहली योजनामें हिमाचलने ५.३ करोड़ रुपया खर्च किया। चौथी योजनामें ११५ करोड़ रुपयेके खर्चकी संभावना है। हमारी पांचवीं योजनाके प्रस्ताव ३२३ करोड़ रुपयेके हैं।

* १९४८ में प्रदेशमें केवल २२८ किलोमीटर सड़कें थीं। आज १२,००० किलोमीटर लम्बी सड़कें हैं।

* हिमाचल राज्य परिवहनकी गाड़ियां आज प्रतिवर्ष १.९५ लाख किलोमीटर का सफर तै करती हैं, जबकि १९४८ में यह फासला कुल २००० किलोमीटर था।

* आज हिमाचलके ४०५० शहरों और गांवोंमें बिजली है, जबकि १९४८ में यह संख्या केवल २० थी।

* फलों–सेव, आलूचे, नाशपाती, आड़ू, नीम्बू, प्रजापति फल, बादाम, अखरोट, चिलगोजा वगैरहकी पैदावार जो १९४८ में १५०० टन थी, इस वर्ष बढ़ कर १.७४ लाख टन हो गई है।

* आज हिमाचलमें ५५०० शिक्षा संस्थाएं हैं, जबकि प्रदेशके निर्माणके समय इनकी तादाद ५४१ थी। साक्षरतामें ५०० प्रतिशतसे अधिककी वृद्धि हुई है और आज साक्षरता प्रतिशत ३१.३० है। आज कालेजोंमें १८,००० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जबकि १९४८ में इनकी संख्या केवल ५० थी।

* जन-स्वास्थ्यके क्षेत्रमें हिमाचलकी प्रगति इस बातसे विदित है कि आज प्रदेशमें ६५७ चिकित्सा संस्थाएं हैं, जबकि १९४८ में इनकी संख्या केवल १२ थी।

* भारत-तिब्बत सीमा पर रहने वाले हिमाचलके सुपूत एक बार पुनः राष्ट्रको आश्वासन दिलाते हैं कि वे राष्ट्रकी सुरक्षा और विकासके लिये कोई कसर उठा नहीं रखेंगे।

| हिम लोक सम्पर्क |

वार्षिक मूल्यमें नाममात्र ५० पैसेकी वृद्धि

इस अंकसे 'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य ८.५० से बढ़ाकर नौ रुपये कर दिया है। कागज की मँहगाई और दुर्लभता तथा छपाईके दाम भी बढ़ जानेसे यह ५० पैसेकी वृद्धि अत्यन्त कम है। बड़े-बड़े प्रतिष्ठित पत्रपत्रिकाओंने पृष्ठ कम कर दिये और मूल्य २० पच्चीस प्रतिशत तक बढ़ा दिये हैं। परन्तु हमने पृष्ठ संख्यामें कोई कमी नहीं की है। वर्ष भरके चारों अंकोंमें ३०० पृष्ठोंकी उपयोगी सामग्री दी जावेगी। अब १ अक्तूबर १९७३ के बाद प्रत्येक नये पुराने ग्राहकोंको वार्षिक मूल्य ९.०० नौ रुपये और एक प्रति के २ ६५ भेजने चाहिए।

ग्राहकोंको लाभदायक सूचना

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान १७वें वर्षके इस प्रथमाङ्क तक कुल ६५ अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। इन अङ्कोंमें ज्योतिष, आयुर्वेद, सामुद्रिक, रमल और मंत्र तंत्र यंत्र सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण उपयोगी लेख छपे हैं, जो अन्यत्र उपलब्ध होना दुर्लभ है। दुर्लभ सामग्री के कारण इन अंकोंमेंसे २० अङ्क अब उपलब्ध नहीं हैं। शेष ४५ अङ्कोंकी भी थोड़ी प्रतियां बची हैं। गत १५वें वर्षका पहला दूसरा अङ्क और १६वें वर्षका चौथा अङ्क (गताङ्क) अब हमारे संग्रह स्टाक) में नहीं है। अनेक ग्राहक उक्त अंकोंकी मांग कर रहे हैं परन्तु हम भेजने में असमर्थ हैं। प्रत्येक गत साधारण अङ्कका मूल्य २·५० है।

जो सज्जन 'ज्योतिष्मती' के दो नये ग्राहक बनाकर १८) रु० वार्षिक मूल्य मनीआर्डरसे भिजवा देंगे उन्हें 'ज्योतिष्मती' के ३ गताङ्क ७) रु० मूल्यके उपहारमें बिना मूल्य भेजे जावेंगे। और ३ नये ग्राहकोंका मूल्य २७) रु० भिजवा देंगे उन्हें ५ गताङ्क ११) रु० मूल्यके उपहारमें भेजे जावेंगे। नये ग्राहकोंका पूरा नाम पता और मनीआर्डर रसीदका नम्बर लिखना होगा।

जो सज्जन दो पंचवर्षीय ग्राहकोंके ७५) रु० भिजवा देंगे उन्हें २५) रु० मूल्यके १० गताङ्क और 'क्षय रोग चिकित्सा' नामक ३०० पृष्ठका ग्रन्थ ५) रु० का उपहारमें निःशुल्क भेजे जावेंगे। तथा जो सज्जन दो दश वर्षीय ग्राहकोंके १४०) भिजवायेंगे उन्हें ५०) रु० मूल्यके २० गतांक और "क्षय रोग चिकित्सा" ग्रन्थ ३०० पृष्ठका ५) मूल्यका तथा 'केलिकुतूहल' नामक कामशास्त्रका अद्भुत ग्रन्थ भाषा-टीका सहित ५) रु० मूल्यका केवल डाक रजिस्ट्री खर्च के लिए ३) रु० भेजने पर निःशुल्क भेजे जावेंगे। दो आजीवन सदस्योंके २५०) रु० भिजवाने वालोंको ६५) मूल्यके ३० गताङ्क और उपर्युक्त दोनों ग्रन्थ १०) मूल्यके उपहारमें रेल पार्सलसे भेजे जावेंगे। 'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य ९·०० नौ रुपये है। पंचवर्षीय ३७ ५०, दशवर्षीय ७०.०० और आजीवन सदस्य शुल्क १२५.०० है। मूल्य मनीआर्डरसे प्राप्त होने पर ही अङ्क भेजे जावेंगे। वी०पी० नहीं होगी।

—व्यवस्थापक ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र)

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

श्री हरीश शर्मा त्रिवेदी द्वारा दि कुमार प्रिंटिंग प्रेस सोलन में छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि.प्र.) से प्रकाशित